राजभाषा प्रेरणा

वार्षिकांक - 15

2020

60 वर्ष

शैक्षणिक सहक्रिया अनुसंधान सहजीविता कि पहुँच के

214 एकड़ हरा-भरा परिसर

अनुसंधान एवं विकास परियोजनाएँ एवं परामर्श

5000 विद्यार्थी

विश्वेश्वरय्या राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नागपुर

विजन (दृष्टि)

संस्थान की राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय विशेषता का उद्देश्य है कि उच्चस्तरीय तकनीकी शिक्षा प्रणाली को विकसित करके वैश्विक श्रेणी मापदंड के मानव संसाधन को निर्मित करने के राष्ट्रीय उद्योग में प्रभावशाली रूप से योगदान देना, ताकि देश की एवं विश्व की बदलती हुई तकनीकी आवश्यकताओं तथा उससे संबंधित सामाजिक संस्थानों को समाविष्ट किया जा सके और एक ऐसा वातावरण निर्मित किया जाए, जहाँ देश के आर्थिक विकास हेतु नवप्रवर्तन तकनीकी का सृजन एवं विस्तार किया जाए।

मिशन (लक्ष्य)

वि.रा.प्रौ.सं, का मिशन अभियांत्रिकी विज्ञान व सबद्ध अन्य विद्याओं में ज्ञान को उत्पादित और प्रचारित करके उत्तम दर्जे की श्रेष्ठता अर्जित करना है। वि.रा.प्रौ.सं. ऐसी शिक्षा देने के लिए प्रतिबद्ध है, जो कठोर शिक्षा को खोज के आनंद के साथ जोडती हो। संस्थान अपने समूह के लोगों को समाज से जोडकर मानव मात्र के कल्याण के लिए प्रभावी रूप से योगदान देने हेतु प्रोत्साहित करता है।

राजभाषा प्रेरणा 2020

राजभाषा परिवार

प्रधान संरक्षक
डॉ. प्रमोद पडोळे, निदेशक

परामर्श
डॉ. एस. आर. साठे

संपादक मंडल
डॉ. दिलीप पेशवे, कार्यकारी अध्यक्ष रा.का.स.
डॉ. आशिष चौरसिया, अध्यक्ष, (राजभाषा प्रेरणा)
डॉ. भारती मिलिंद पोलके, संपादिका
डॉ. अजय लिखिते, सदस्य
श्रीमती विजया देशमुख, सदस्या

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

डॉ. प्रमोद एम. पडोळे	-	निदेशक
डॉ. डी. आर. पेशवे	-	का. अध्यक्ष रा.का.स.
डॉ. एस. आर. साठे	-	कुलसचिव
श्री जी. पी. सिंह	-	संकायाध्यक्ष (वित्त एवं नियोजन)
डॉ. अजय लिखिते	-	सह संकायाध्यक्ष (जनसंपर्क)
श्री के. जी. बारापात्रे	-	सदस्य
डॉ. ज्योती सिंह	-	सदस्या
डॉ. व्ही. उदयाभानु	-	सदस्य
डॉ. दीप गुप्ता	-	सदस्य
डॉ. भूषण राजपाठक	-	सदस्य
डॉ. आशिष चौरसिया	-	सदस्य
डॉ. विभूति रंजन मिश्रा	-	सदस्य
डॉ. श्राबोनी अधिकारी	-	सदस्य
श्री एन. व्ही. नौकरकर	-	सदस्य
श्री के. पी. बनोथू	-	सदस्य
डॉ. भारती पोलके	-	का. सचिव सदस्या
श्रीमती रितु ठाकरे	-	सदस्या
श्रीमती व्ही. एस. देशमुख	-	सदस्या
श्री अमित मेश्राम	-	सदस्य

मुखपृष्ठ
श्रीमती करूणा देशपांडे
मुद्राशिल्प ऑफसेट प्रिंटर्स

फोटो सहयोग
सुश्री तेजल झाडे, सुश्री खंजली मोहोड

मुद्रण
मुद्राशिल्प ऑफसेट प्रिंटर्स
बजाज नगर, नागपूर.

अनुक्रमणिका

विषयानुक्रम	पृष्ठ क्र.
गृह मंत्रीजी का संदेश	
शासी मंडल के अध्यक्ष महोदय का संदेश	
निदेशक महोदय का संदेश	
कुलसचिव महोदय की कलम से...	
कार्यकारी अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिती की ओर से...	
राजभाषा प्रेरणा के अध्यक्ष की कलम से...	
संपादकीय	
राजभाषा दर्पण	1-18
संस्थान दर्पण	19-30
साहित्य दर्पण	31-90

राजभाषा प्रेरणा में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं, संस्थान अथवा प्रकाशन समिति का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संदेश

अमित शाह

गृह मंत्री

भारत

AMIT SHAH
HOME MINISTER
INDIA

प्रिय देशवासियों !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ !

हमारा देश विविध भाषाओं, बोलियों एवं संस्कृतियों का देश है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन का गौरवपूर्ण इतिहास हिंदी भाषा में उपलब्ध है। हिंदी देश के सभी भाषा-भाषियों के मध्य भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। हिंदी भाषा में संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं तथा बोलियों के भाव जीवंत हैं। भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

किसी भी लोकतांत्रिक देश में जनता और शासन के मध्य जन भाषा ही संपर्क भाषा के रूप में सार्थक भूमिका अदा कर सकती है। हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी एक उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना बड़ा सरल है। हिंदी में जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वाधिक लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए ही भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया एवं संविधान में इस संबंध में समुचित प्रावधान किए गए।

अपनी भाषा में मौलिक लेखन और कामकाज से अभिव्यक्ति बहुत ही सहज और सरल होती है, जो अनुवाद की भाषा से संभव नहीं है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को सरलतम रूप में अपनाकर राजकीय कामकाज में अधिक से अधिक इसका प्रयोग किया जाए। मैं भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से अनुरोध करता हूँ कि वे अपने दैनिक और सरकारी कामकाज में मुल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य उदारीकरण, भूमंडलीकरण और उपभोक्तावाद के इस युग में देश को आर्थिक रूप से शक्तिशाली बनाने तथा कौशल विकास को प्रोत्साहन देते हुए आम जनता को सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि अभियांत्रिकी और स्वास्थ्य सेवाओं जैसे क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी के माध्यम से शिक्षित करने की बहुत अधिक आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार-प्रसार करने के लिए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली कंठस्थ का निर्माण किया है। स्मृति आधारित इस अनुवाद कार्य प्रणाली की विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में की गई अनुवाद सामग्री का पुनः प्रयोग कर सकता है जिससे समय की काफी बचत होती है। राजभाषा विभाग द्वारा जन-साधारण के लिए लीला हिंदी प्रवाह मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसके माध्यम से 14 विभिन्न भाषा-भाषी अपनी अपनी मातृभाषाओं में नि:शुल्क हिंदी सीख सकते है।

संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन है। संघ की राजभाषा होने के कारण हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन उसी दृढ़ता और तत्परता के साथ करें, जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन करते हैं। हम स्वयं अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों / कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आम आदमी सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ उठा सके।

आइए ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम यह प्रतिज्ञा लें कि हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी के माध्यम से स्वदेशी विज्ञान की समृद्ध परंपरा को जन-जन तक पहुंचाकर शिक्षित, शक्तिशाली एवं नए भारत का निर्माण करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे सामूहिक एवं सार्थक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु विश्व पटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण एवं समृद्ध भाषा के रूप में विश्व भाषा बनेगी।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से पुन: हार्दिक शुभकामनाएं !

जय हिंद !

(अमित शाह)
नई दिल्ली

संदेश

शासी मंडल के अध्यक्ष महोदय का संदेश

यह हर्ष का विषय है कि वि. रा. प्रौ.सं., नागपुर द्वारा हिंदी राजभाषा गृहपत्रिका 'प्रेरणा' के पंद्रहवे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। वर्ष 2020 में संस्थान में पुरे वर्ष हीरक महोत्सव मनाया जायेगा और वह बहोत कार्यक्रमों का द्योतक होगा। और यह मेरा मानना है कि भाषा संचार के सहज उपलब्ध माध्यम के रूप में इस हिंदी पत्रिका की पहुँच संस्थान के प्रत्येक कार्मिक तक होगी । पत्रिका के प्रकाशन से अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों की न केवल रचना रत्नों में वृद्धी करने का लाभ होता है बल्कि राजभाषा हिंदी का प्रचार प्रसार करते हुए उसका अधिकाधिक प्रयोग करने में सहायक सिद्ध होती है।

इस वर्ष यह अंक महिला विशेषांक होने के कारण इस पत्रिका में सभी लेखकों ने देश विदेश की विशेष महिलाओं के उनके विशेष कार्य, उनकी विशेष उपलब्धियाँ यहाँ मुखरित की है। सही में यह अंक इस हीरक महोत्सवी वर्ष में सभी महिलाओं को समर्पित है यह कहते हुए मुझे आनंद हो रहा है।

नए युग के इस नए वर्ष में पत्रिका के पंद्रहवे अंक के नारी विशेषांक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए गर्व का अनुभव हो रहा है। इसके अलावा कार्मिकों की मौखिक जानकारीपूर्ण लेखों, कहानियाँ और कुछ रोचक स्थायी स्तंभों के साथ बिलकुल नए कलेवर में आपके सामने होगा प्रेरणा का 15 वाँ महिला विशेषांक।

संपादक मंडल के सभी सदस्यों को मेरी नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

(श्री. विश्राम जामदार)
अध्यक्ष, शासी मंडल, वि. रा. प्रौ.सं., नागपुर

संदेश

निदेशक महोदय का संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि विश्वेश्वरय्या राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नागपुर इस वर्ष 2020 में 60 वें वर्ष में पर्दापण कर रहा है, इस हीरक महोत्सव का हाल ही में दि. 19 जनवरी 2020 को उद्घाटन हुआ है। हम अपनी हिंदी 'राजभाषा पत्रिका 'प्रेरणा' का पंद्रहवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। संस्थान की यह पत्रिका सभी कर्मचारी एवं विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा का परिचय देती है। यह संस्थान प्रौद्योगिकी संस्थान होने की वजह से यहाँ शिक्षा का माध्यम केवल अंग्रेजी है, इसके उपरांत ज्यादातर विद्यार्थी हिंदीतर भाषी होते हुए भी सभी अपनी रचनाएँ हिंदी मे देकर अपनी कला को एक अलग ढंग से सबके समक्ष लाते है तो मुझे बहोत गर्व महसूस होता है।

मुझे यह भी बताते हुए खुशी हो रही है, कि यह पत्रिका संस्थान की प्रगति और गतिशीलता का दर्पण है। इस पत्रिका के जरिए कविताओं, संस्मरण, लघुकथाएँ, सुविचार एवं आलेखों के माध्यम से छात्र छात्राओं में तथा सहायक स्तर के कर्मचारियों में साहित्यिक गतिविधियों के विकास का एक अनुपम अवसर प्राप्त होता है ।

'प्रेरणा' के संपादक मंडल ने अपने इस अंक के लिए इस वर्ष 'महिला विशेष' विषय को चुना और पत्रिका के सक्रिय एवं गंभीर रचनाकारों ने इस बहुआयामी विषय पर अपनी सहभागिता को सुनिश्चित किया। इस वर्ष महिला विशेषांक होने के कारण सभी प्रतिभाशाली महिलाओं का उल्लेखनीय सहभाग देखकर मुझे फक्र होता है।

नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस की असीम शुभकामनाओं के साथ प्रस्तुत है यह राजभाषा 'प्रेरणा' का 15 वाँ अंक।

(डॉ. पी. एम. पडोळे)
निदेशक, वि.रा.प्रौ.सं., नागपुर

संदेश

कुलसचिव महोदय की कलम से ...

इस हीरक महोत्सवी वर्ष में 'राजभाषा प्रेरणा' का यह पंद्रहवाँ अंक आपके सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह अंक 'महिला विशेषांक होने के कारण महिलाओं को समर्पित है।

इसी प्रकार हम देखे तो राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं प्रचलन का यही सफर भी तो पिछले 72 सालों से चल रहा है। इन वर्षो के दौरान हिंदी ने भी कई पडाव देखे है। हिंदी भाषा भी धीरे – धीरे अपनी सरलता, सहजता और लचीलेपन के कारण देश के जनमानस में अपनी स्वीकार्यता को स्थापित कर पाई है। सरकार के प्रयासों और प्रोत्साहन से निश्चित ही इसकी हिंदीतर भाषी राज्यों में भी स्वीकृति देखने में आती है। आज हिंदी भाषा का ज्ञान आपके लिए देश की जनता के साथ संप्रेषण का प्रभावशाली द्वार खोलती है। अन्य स्थानीय भाषाओं के बीच एक सेतु का निर्माण होता है। इस प्रकार हम एक भाषा का ही नही बल्कि एक संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर पाते है। इस संस्थान में सभी प्रांतों के विभिन्न भाषाई विद्यार्थी, संकाय होने के कारण यहाँ संपर्क भाषा के रूप में हिंदी एक सफल भूमिका निभाती रही है।

यह अंक महिला विशेषांक होने के कारण कर्तृत्ववान महिलओं के कर्तृत्व से परिपूर्ण है। इस पत्रिका के लेखकों द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रकाशित भावपूर्ण लेखों / रचनाओं के माध्यम से संस्थान द्वारा किए जा रहे क्रियाकलापों के साथ नई जानकारिया मिलती है जो कि ज्ञानवर्धन में सहायक सिद्ध होती है।

हर वर्ष की तरह पत्रिका का प्रकाशन सुचारू रूप से होता रहे इसके लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। नववर्ष के शुभचिंतन के साथ सादर है पत्रिका का पंद्रहवाँ अंक।

(डॉ. एस. आर. साठे)
कुलसचिव

संदेश

कार्यकारी अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से ...

जनवरी का महीना हमारे लिए दो कारणों के लिए खास होता है। एक तो इस महीने में भारत वर्ष का गणतंत्र दिन 26 जनवरी पूरा देश मनाता है और इसी दिन संस्थान की हिंदी राजभाषा पत्रिका 'प्रेरणा' का विमोचन किया जाता है। इस वर्ष हीरक महोत्सवी पत्रिका का पंद्रहवाँ अंक होगा ज्यो विशेष रूप से नारी शक्ति को समर्पित है।

समय के साथ भारतीय स्त्री की सोच मे भी तेजी से सकारात्मक बदलाव आया है।आज उसे सुपर वुमन के खिताब से नवाजा जा रहा है। वह पुरुषों से भी उपर उँची उडान ले रही है। केवल पुरुषों के कंधे से कंधा लगाकर ही नही बल्कि दो कदम आगे भी चल रही है। नए दौर की नारी अब नए सोच के साथ आगे बढ रही है, लेकिन उसके सामने कई चुनौतियाँ है, जिसका सामना वह दिलेरी से करती नजर आ रही है। क्योंकि यह भारतवर्ष महिलाओं के कर्तृत्व से ओतप्रोत है।

इस विशेषांक में सभी पाठक गणों को संस्थान की हिंदी राजभाषा पत्रिका के सभी रचना-रत्नों के साथ इस वर्ष की खास नारी संबंधी रचनाएँ भी पढने हेतु मिलेगी ।

पत्रिका के संपादक मंडल, सभी प्रबुद्ध रचनाकारों एवं सहयोगियों को पत्रिका के पंद्रहवे अंक के सफल प्रकाशन पर बहुत बहुत बधाई।

धन्यवाद !

(डॉ. डी. आर. पेशवे)
संकायाध्यक्ष (संकाय कल्याण)
एवं का. अध्यक्ष (राजभाषा कार्यान्वयन समिति)
वि. रा.प्रौ.संस्थान,नागपुर

संदेश

राजभाषा प्रेरणा के अध्यक्ष की कलम से ....

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि संस्थान अपनी गृहपत्रिका ''राजभाषा प्रेरणा'' का पंद्रहवाँ अंक प्रकाशित करने जा रहा है। पिछले चौदह वर्षों की परंपरा का अनुकरण करते हुए हमारी समिती का यह प्रयास राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अत्यंत मददगार सिद्ध होगा।

''हिंदी है हम, वतन है हिंदोस्ता हमारा'' हम हिंदुस्तानी इस पंक्ति को हर जगह बड़े जोर-शोर से गाते हैं। यह पंक्ति हम हिंदुस्तानियों के लिए अपने आप में एक विशेष महत्व रखती है। हर साल 14 सितंबर का दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है, क्योंकि इसी दिन भारत की संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी भाषा को भारतीय गणराज्य की अधिकारिक भाषा घोषित किया था। आप सभी को हिंदी दिवस की बहुत-बहुत बधाई। भाषा ही सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खुबसुरती से समाहित किया है।

मैं इस पत्रिका के संरक्षक मा. निदेशक डॉ. प्रमोद एम. पडोले को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिनके संरक्षण से यह पत्रिका पल्लिवित हो सकी है। मैं आभारी हू संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति का जिन्होंने हमारी समिति को पत्रिका प्रकाशन का अवसर दिया, साथ ही मैं इस अंक के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को भी धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने पत्रिका के संदर्भ में प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग और सुझाव दिये । मैं संस्थान कि ओर से मुद्राशिल्प मुद्रणालय को भी धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने अत्यंत कुशल एवं समय की पाबंदी के साथ यह पत्रिका प्रकाशित की। इस अवसर पर मैं विशेष रूप से हमारी प्रकाशन समिति के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई के साथ धन्यवाद देता हूँ, जिनके अथक प्रयास, उत्साह तथा सहभाग के बिना ''राजभाषा प्रेरणा'' का यह स्वरूप असंभव था। गणतंत्र दिवस के अवसर पर यह पत्रिका प्रकाशित होने जा रही है। मुझे आशा है कि हमारी समिति का यह प्रयत्न आप पसंद करेंगे।

डॉ. आशिष एस. चौरसिया

अध्यक्ष-पत्रिका प्रकाशन समिति

संपादकीय

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि इस हीरक महोत्सवी वर्ष में मुझे इस संस्थान की हिंदी राजभाषा पत्रिका 'प्रेरणा' की संपादिका बनने का फिरसे सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

छोटा सा शब्द है 'प्रेरणा' लेकिन इस छोटे शब्द में कितनी भावनाएँ जुडी है। यही भावनाएँ इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सफल साबित हुई है। इस वर्ष संस्थान की राजभाषा हिंदी पत्रिका 'प्रेरणा' में कुछ अलग सा विषय है, जिसके प्रेरणा से प्रेरित होकर खास करके महिला वर्ग ने इस अंक में अपनी मौलिक प्रतिभाएँ प्रस्तुत की है। पत्रिका का यह पंद्रहवाँ अंक एक बार फिर आपके लिए एक और नए विषय को चुनकर लाया है। इस अंक की विषय वस्तु है 'नारी विशेष'।

इस पत्रिका की रूपरेखा बनाते हुए तथा सामग्री का चयन करते हुए इस बात का खास ध्यान रखा गया कि संस्थान के स्त्री वर्ग की भागिदारी इस पत्रिका में भरपूर रहे और उनकी चिंताओं तथा सरोकारों को प्राथमिकता प्रदान करने का प्रयत्न किया गया है।

दूसरी कोशिश यह रही है कि संस्थान के सभी कर्मचारी, शैक्षिक-गैर शैक्षिक, हिंदी-हिंदीतर एवं कर्मचारियों के परिवार सदस्यों द्वारा अपनी मौलिक रचनाएँ प्रस्तुत करने हेतु प्रेरित किया गया है।

तीसरा प्रयास यह था कि इस विशेषांक में आत्मकथाओं मुलाकात के माध्यम से तथा पर्यटन विशेष, विज्ञान संबंधी रचनाओं से जीवन की बारिक तमाम रोचक जानकारी भेदभाव को भुलाकर सभी पाठकों के समक्ष लाने का भरकस प्रयत्न किया गया है।

इस पत्रिका के अमूल्य सहयोग के लिए मेरे सहयोगी मित्रों और शुभचिंतकों का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ। विशेष रूप से हिंदी राजभाषा समिति के सभी सदस्य एवं पर्दे के पीछे कार्यरत मेरे सहयोगी का आभार जिनके द्वारा इस पत्रिका के प्रकाशन मे गति आयी है। सफल मुद्रण के लिए मुद्राशिल्प ऑफसेट प्रिंटर्स को धन्यवाद देती हूँ।

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं सहीत सभी का अभिनंदन।

धन्यवाद !

भारती पोलके

(डॉ. भारती मिलिंद पोलके)

संपादिका

राजभाषा दर्पण

विषयानुक्रम	पृष्ठ क्र.
राजभाषा के बढ़ते चरण	2
वर्ष 2019 की संस्थान गतिविधियाँ	3
हिंदी पखवाड़ा वृत्तांत	4
हिंदी कार्यशालाएँ	10
कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप	11
हिंदी दिवस का महत्व	12
प्रशासनिक शब्दावली	14
शब्द ज्ञान एवं वर्ग पहेली	15

स्वर्गीय सुषमा स्वराज

सुषमा स्वराज का जन्म 14 फरवरी 1952 में हुआ।

सुषमा स्वराज को वर्ष 2009 में भारत की भारतीय जनता पार्टी द्वारा संसद में विपक्ष की नेता चुना गया। सुषमा स्वराज को वर्ष 2014 में भारत की पहली महिला विदेश मंत्री होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वह दिल्ली की पहली महिला मुख्यमंत्री बनी। सुषमा स्वराज महिला सशक्तीकरण पर बोलती रही है तथा उन्होंने अपने राजनीतिक कार्यकाल में महिलाओं के विकास के लिए काफी काम भी किये है। और उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व महिलाओं के लिए एक प्रेरणा हमेशा रहेगा। 6 ऑगस्ट 2019 को उनका मृत्यु हुआ।

आकाश सा आँचल था दिल था दरया का
नारी की शक्ति थीं देश पर अभिमान था।।

संवेदनशील, नि:स्वार्थ था उनमें ईमानदार नेता
गहरी सोच रखने वाली, सुषमा जी थी सबकी माता।।

शक्तिशाली वक्ता उनमें, था एक कोमल आत्मा
कार्य भी उनका ऐसा था जो किसी ओर से न होता।।

श्रीमती भारती खडसिंगे

राजभाषा के बढते चरण

- केंद्र सरकार (राजभाषा) संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोगबद्ध नियम 1976 के नियम 10 के उपनियम 4 के अनुसरण में मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) के अंतर्गत इस संस्थान को ऐसे कार्यालयों के रूप में जिसके 80 प्रतिशत से अधिक कर्मचारी वृंद ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है राजपत्र में अधिसूचित किया गया है।

- संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित रूप से प्रत्येक तिमाही में आयोजित की जाती है।

- हिंदी कार्यशाला का आयोजन हर तिमाही में किया जाता है।

- हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर भी हर संभव हिंदी में ही दिए जाते है।

- संस्थान के सभी मुख्य स्थानों पर हिंदी सुविचार प्रदर्शित है।

- सभी विभागों के संगणकों में द्विभाषा में कार्य करने की सुविधा है।

- संस्थान के सभी मानक प्रपत्र, फार्म तथा आवेदन पत्र द्विभाषा रूप में तैयार किए गए है।

- हिंदी से जुडे कार्यक्रमों का नियमित रूप से आयोजन किया जाता है।

- प्रत्येक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन द्विभाषी में किया जाता है।

- रबर की मोहरें, नामपट्ट द्विभाषी में बनाए गए है।

- संस्थान की वेबसाईट को द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किया गया हैं।

- संस्थान के प्रतिनिधियों द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में नियमित रूप से प्रतिभागिता की जाती है।

- प्रशासनिक भवन में हिंदी भाषा में सुविचार एवं संस्थान विषयक अन्य महत्वपूर्ण जानकारियाँ एल.सी.डी. में प्रदर्शित किए जाते है।

- संस्थान में इस वर्ष कुल 20 कर्मचारियों ने हिंदी पारंगत प्रशिक्षण प्राप्त किया सभी उत्तीर्ण हुए डॉ. भारती पोलके से प्रथम क्रमांक से उत्तीर्ण हुई।

- गतिविधियों की सूचना वेबसाईट पर दी जाती है।

- दि. 17 सितम्बर 2019 को नीरी में आयोजित जलवायु परिवर्तन की कार्यशाला में संस्थान से डॉ. श्रीमती भारती पोलके, श्रीमती सुलभा जलगांवकर एवं श्रीमती पुनम उईके ने प्रतिभागिता की।

- दि. 8 से 9 जनवरी 2020 में आयोजित अखिल भारतीय हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी ''ऊर्जा के क्षेत्र में भारतीय विज्ञान एवं तकनीकी प्रगती'' आयजीकार कलपक्कम में श्रीमती विजया देशमुख एवं डॉ. भारती पोलके ने पोस्टर प्रदर्शन किया।

वर्ष 2019 की संस्थान गतिविधियाँ

- गणतंत्र दिवस : 26 जनवरी 2019 को गणराज्य दिवस के अवसर पर संस्थान के 14 वे वार्षिकांक राजभाषा प्रेरणा का विमोचन किया गया ।
- दि. 30 जनवरी 2019 को ''हुतात्मा दिवस''मनाया गया।
- मातृभाषा दिवस दि. 22 फरवरी 2019 को मातृभाषा दिवस मनाया गया ।
- कार्यशाला : दि. 28 फरवरी 2019 को ''तनाव प्रबंधन एवं समय का महत्व'' इस विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- महिला दिवस : दि. 8 मार्च 2019 को ''महिला दिवस'' मनाया गया।
- दि. 14 अप्रैल 2019 को ''आंबेडकर जयंती'' पर संस्थान के ग्रंथालय में कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- दि. 21 मे 2019 को ''अॅन्टी टेररिझम डे'' मनाया गया।
- योग दिवस : दिनांक 21 जून 2019 को ''योग दिवस'' मनाया गया।
- कार्यशाला : दि. 25 जून 2019 को बच्चों के प्रति हमारे कर्तव्य इस विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- दि. 30 जून 2019 को केंद्रीय माननीय राज्य मंत्री संजय धोत्रे द्वारा 1MW रूफटॉप सोलर पावर प्लांट का उद्‌घाटन किया गया ।
- स्वतंत्रता दिवस : 15 अगस्त 2019 को स्वतंत्रता दिवस मनाया गया तथा स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया।
- दीक्षांत समारोह : संस्थान में दि. 15 सितम्बर 2019 को ''दीक्षांत समारोह'' का आयोजन किया गया।
- हिंदी पखवाड़ा : संस्थान में दि. 16 से 30 सितंबर 2019 के दौरान हिंदी पखवाड़ा मनाया गया।
- दि. 24 अक्तूबर 2019 को ''कम्यूनिकेशन्स स्किल्स'' इस विषय पर डॉ. मुकुंद महाजन के व्याख्यान का आयोजन किया गया।
- कार्यशाला : दि. 18 सितम्बर 2019 को ''सामाजिक उत्तरदायित्व'' इस विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- दि. 31 अक्तूबर 2019 को ''राष्ट्रीय एकता दिवस'' मनाया गया।
- दि. 28 अक्तुबर से दि. 2 नवबंर 2019 तक ''सतर्कता सप्ताह'' मनाया गया।
- कार्यशाला : दि. 11 दिसम्बर 2019 को ''जीवन में संगीत'' इस विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- दि. 19 जनवरी 2020 को संस्थान के ''हीरक महोत्सव'' का उद्‌घाटन किया गया। इस उपलक्ष में वर्ष भर संस्थान में विविध गतिविधियाँ संपन्न होंगी ।

हिंदी पखवाड़ा वृत्तांत

दिनांक 16 से 30 सितंबर 2019

1.	**उद्घाटन समारोह :** हिंदी पखवाडे का उद्घाटन समारोह दिनांक 16 सितंबर 2019 को निदेशक महोदय के हस्ते अपरान्ह 4:00 बजे फिजिक्स असेंबली हॉल में संपन्न हुआ। उन्होंने इस वर्ष के हिंदी पखवाडे के आरंभ की औपचारिक घोषणा की। तथा इस वर्ष 'राजभाषा प्रेरणा' के लेखकों तथा कवियों को स्मृतिचिन्ह देकर सम्मानित किया।
2.	**सुलेखन प्रतियोगिता :** दिनांक 18 सितंबर 2019 को अपरान्ह 4:00 बजे गणित विभाग में हिंदी सुलेखन प्रतियोगिता संपन्न हुई। इस में कुल 42 शैक्षिक तथा गैर शैक्षिक कर्मचारियोंने तथा 17 विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की। इस प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका डॉ. अमित वाहुरवाघ एवं डॉ. ज्योति सिंह ने निभाई।
3.	**हिंदी कार्यशाला :** दिनांक 19 सितंबर 2019 को सीनेट हॉल मे दोपहर 4:00 बजे 'सामाजिक उत्तरदायित्व' इस विषय पर डॉ. दिलीप पेशवे सर ने एक कार्यशाला आयोजन कीया तथा उनके सामाजिक कार्य के बारे में सभी को बहुत ही अच्छे तरह से बताया। गूँज यह एक सामाजिक संस्था है, उनसे बहोत लोगों ने प्रेरणा ली। इसमे भी कुल 70 लोग उपस्थित थे।
4.	**काव्यपाठ प्रतियोगिता :** दिनांक 20 सितंबर 2019 को अपरान्ह 3:30 बजे रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग में इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कुल 16 शैक्षिक, गैर शैक्षिक कर्मचारी तथा 18 विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की। इस प्रतियोगिता के आयोजक डॉ. भूषण राजपाठक थे तथा डॉ. मुकुंद महाजन, प्राध्यापक अनुप्रयुक्त अभियांत्रिकी तथा डॉ. जी. पी. सिंह, संकायाध्यक्ष (वित्त एवं नियोजन) ने निर्णायक की भूमिका निभाई।
5.	**अंताक्षरी :** दिनांक 23 सितंबर 2019 को अपरान्ह 3:00 बजे अंताक्षरी का आयोजन नये शैक्षिक भवन के बैठक कक्ष में किया गया था। इस में कुल 55 प्रतिभागी थे। 5-5 की 11 टीम बनाई गई थी ।इस प्रतियोगिता का आयोजन डॉ. श्राबोनी अधिकारी तथा डॉ. ज्योति सिंह ने किया था। बहोत ही बढचढकर सभी ने इस में हिस्सा लिया। इस के आयोजन मे श्री. प्रवीण नायक, श्री. आदित्य कृष्णा बंडी, एम. श्रीहरी प्रसाद, अनिकेत व्ही. दहासहस्त्र, श्री. आकाश शर्मा, विशाल देवडा इन विद्यार्थियों ने भी सहायता की। निर्णायक की भूमिका डॉ. अर्घ्य मित्रा तथा डॉ. संगिता गडवे ने निभाई।
6	**शब्दज्ञान एवं वर्ग पहेली :** दिनांक 24 सितंबर 2019 को अपरान्ह 3:30 बजे इस प्रतियोगिता का आयोजन किया रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग में किया गया था। इस में एक वर्ग पहेली याने क्रॉस वर्ड दिया गया था तथा कुछ जनरल नॉलेज के प्रश्न पूछे गए थे। इस प्रतियोगिता का आयोजन श्री. अमित मेश्राम तथा श्रीमती रितु ठाकरे ने किया था तथा निर्णायक की भूमिका डॉ. पूनम शर्मा ने निभाई। इस मे कुल 26 कर्मचारी तथा 10 विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की ।

7	**वादविवाद प्रतियोगिता :** दिनांक 25 सितंबर 2019 को 'वादविवाद प्रतियोगिता' का रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग में आयोजन किया गया था। इसका विषय था 'पाकिस्तान को सबक युद्ध से या शांती वार्तालाप से ?' इस मे कुल 13 कर्मचारी तथा 2 विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की थी। पुरस्कार 5 थे लेकिन सभी ने इतना अच्छा बोला कि हमे प्रथम पुरस्कार 2, द्वितीय 2 व्यक्तियों को देने पडे। दोनो विद्यार्थियों ने अपनी अपनी बात अच्छे से प्रस्तुत की और दोनो ने पुरस्कर पाया है। एक विद्यार्थी पी. एच. डी. छात्र था तो दूसरी एम. टेक. की विद्यार्थिनी है। इसके आयोजक डॉ. आशिष चौरसिया तथा डॉ. विभुति रंजन मिश्रा थे तथा निर्णायक की भूमिका डॉ. योगेश देशपांडे तथा श्रीमती हेमलता मिश्रा जी ने निभाई।
8.	**निबंध प्रतियोगिता :** दिनांक 25/09/2019 तक निबंध लिखकर भेजने थे। निबंध के विषय थे 'प्रगत भारत में महिलाओं की भूमिका', 'क्या कलम 370 हटने से भारत मे खुशियाली आयेगी ?' , 'चांद्रयान से उभरी भारत की प्रतिमा। इस प्रतियोगिता के लिए कर्मचारी वर्ग से कुल 27 तथा विद्यार्थी वर्ग से 9 निबंध आये। सभी निबंध बहुत अच्छे थे। इस प्रतियोगिता के लिए निर्णायक की भूमिका श्रीमती संगिता गिरी, हिंदी अधिकारी एन. पी. टी. आय तथा डॉ. आर. एस. गेडाम ने निभाई, तथा आयोजक के रूप मे श्रीमती विजया देशमुख ने कार्य किया।
9.	**समापन समारोह :** दि. 1 अक्तूबर 2019 को संस्थान के फिजिक्स असेंबली हॉल में समापन समारोह डॉ. स्मिता माहुरकर जी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। निदेशक महोदय डॉ. पी. एम.पडोले, डॉ. दिलीप पेशवे, संकायाध्यक्ष (संकाय कल्याण), डॉ. जी. पे. सिंह, संकायाध्यक्ष (नियोजन एवं विकास) तथा सभी विभागो के विभाग प्रमुख इस कार्यक्रम मे उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में पखवाडे में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए तथा निर्णायक गणों को बांबू की शील्ड देकर सम्मानित किया गया। इस तरह हिंदी पखवाडा धूमधाम से मनाया गया संपन्न हुआ।

उत्कृष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन पुरस्कारों की सूची 2019

1.	संपदा अनुरक्षण अनुभाग
2.	अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग
3.	वास्तुकला एवं नियोजन विभाग
4.	रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग
5.	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग
6.	धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विभाग
7.	भौतिकशास्त्र विभाग
8.	परिक्षा अनुभाग
9.	भांडार अनुभाग
10.	ग्रंथालय अनुभाग

हिंदी पखवाडा - 2019 (16 से 30 सितंबर 2019)

प्रतियोगिताओंके परिणाम

सुलेखन प्रतियोगिता : कर्मचारी वर्ग : दिनांक 18/09/2019

आयोजक : डॉ. ज्योती सिंह **निर्णायक :डॉ. अमित वाहुरवाघ**

क्र.	नाम	विभाग/अनुभाग	पुरस्कार क्रमांक
1.	श्रीमती जयश्री अडाणे	छात्रावास अनुभाग	प्रथम
2.	श्री. किशोर जोगळेकर	वास्तुकला एवं नियोजन विभाग	द्वितीय
3.	श्रीमती भारती खडसिंगे	ग्रंथालय अनुभाग	तृतीय
4.	कु. रसिका देशपांडे	इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार अभियंत्रिकी	प्रोत्साहन -।
5.	श्रीमती मुग्धा लामसोगे	छात्रावास अनुभाग	प्रोत्साहन - ।।

सुलेखन प्रतियोगिता : विद्यार्थी वर्ग : दिनांक 18/09/2019

1.	श्री. आरिश नवाज	वास्तुकला एवं नियोजन विभाग	प्रथम
2.	श्री. मोहित मुरलीधर लुधवानी	धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विभाग	द्वितीय
3.	श्री. रामेंद्र कुमार गुप्ता	धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विभाग	तृतीय
4.	श्री. तुषार एस. टाले	धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विभाग	प्रोत्साहन - ।
5.	कु.आकांक्षा श्रीखंडे	धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विभाग	प्रोत्साहन - ।।

काव्यपाठ प्रतियोगिता : कर्मचारी वर्ग : दिनांक 20/09/2019

आयोजक : डॉ. भूषण राजपाठक **निर्णायक : डॉ. एम. एम. महाजन, डॉ. जी. पी. सिंह**

1.	श्रीमती आदिती देशमुख	स्वास्थ्य केंद्र	प्रथम
2.	श्रीमती नम्रता जारोंडे	भांडार अनुभाग	द्वितीय
3.	श्री. किशोर जोगळेकर	वास्तुकला एवं नियोजन विभाग	द्वितीय
4.	श्री. दिवाकर शेंडे	रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग	तृतीय
5.	श्री. निखिल दीप गुप्ता	वी एल एस आय विभाग	तृतीय
6.	श्री. सोनवीर सिंह	संगणक एवं अभि. विभाग	प्रोत्साहन- ।
7.	श्रीमती भारती खडसिंगे	ग्रंथालय	प्रोत्साहन- ।।

काव्यपाठ प्रतियोगिता : विद्यार्थी वर्ग : दिनांक 20/09/2019

1.	श्री. हिमांशु सिंह	यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग	प्रथम
2.	श्री. हिमांशु धसमाना	इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार अभि.	द्वितीय
3.	श्री. विभव देशपांडे	संगणक विज्ञान एवं अभि. विभाग	तृतीय
4.	श्री. अंशुल गुप्ता	खनन अभियांत्रिकी विभाग	तृतीय
4.	श्री. प्रतीक यादव	धातुकी एवं पदार्थ अभि. विभाग	प्रोत्साहन- ।
5.	श्री. शिवम चौबे	धातुकी एवं पदार्थ अभि. विभाग	प्रोत्साहन- ।।

अंताक्षरी प्रतियोगिता : कर्मचारी वर्ग: दिनांक 23/09/2019

आयोजक : डॉ. श्रबोनी अधिकारी, श्री. व्ही. प्रवीण नायक, श्री. आदित्य कृष्णा बंडी, एम. श्रीहरी प्रसाद श्री. अनिकेत वि. दहासहस्त्र, श्री. आकाश शर्मा, श्री. विशाल देवडा

निर्णायक : डॉ. अर्घ्य मित्रा, डॉ. संगिता गडवे

	टीम 11		प्रथम पुरस्कार
1	डॉ. विष्णुप्रताप सिंह	गणित विभाग	
2	डॉ. संदीप पांचाल	खनन अभियांत्रिकी विभाग	
3	डॉ. निखिल सरदेसाई	खनन अभियांत्रिकी विभाग	
4	श्री. अशोक ठाकुर	खनन अभियांत्रिकी विभाग	
5	श्री.साई राम टी.	खनन अभियांत्रिकी विभाग	

अंताक्षरी प्रतियोगिता : कर्मचारी वर्ग: दिनांक 23/09/2019

	टीम 10	विभाग/अनुभाग	द्वितीय पुरस्कार
1	डॉ. पूनम शर्मा	संगणक विज्ञान एवं अभि. विभाग	
2	श्रीमती अपर्णा चिचमलकर	निदेशक कार्यालय	
3	श्रीमती भाग्यश्री नागपुरे	निदेशक कार्यालय	
4	श्री. अमरजीत यादव		
5	श्री. मोहित लुधवानी		

अंताक्षरी प्रतियोगिता : कर्मचारी वर्ग: दिनांक 23/09/2019

	टीम 7		द्वितीय पुरस्कार
1	डॉ. अभय गांधी	इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार अभि.	
2	डॉ. अश्विन कोठारी	इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार अभि.	
3	डॉ. जॉयदीप सेनगुप्ता	इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार अभि.	
4	डॉ. नीरज राव	इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार अभि.	
5	सुश्री क्रांती कांबळे	इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार अभि.	

अंताक्षरी प्रतियोगिता : कर्मचारी वर्ग: दिनांक 23/09/2019

	टीम 2		तृतीय पुरस्कार
1.	डॉ. एम. व्ही. लाटकर	सिविल अभियांत्रिकी विभाग	
2.	डॉ. ए. बी. मिरजकर	सिविल अभियांत्रिकी विभाग	
3.	डॉ. शिल्पा डोंगरे	सिविल अभियांत्रिकी विभाग	
4.	डॉ. निता पाटणे	विद्युत अभियांत्रिकी विभाग	
5.	डॉ. राजश्री सातपुतळे	विद्युत अभियांत्रिकी विभाग	

अंताक्षरी प्रतियोगिता : कर्मचारी वर्ग: दिनांक 23/09/2019

	टीम 3		प्रोत्साहन -1
1.	श्री. रमण दुर्गे	परीक्षा अनुभाग	
2.	श्रीमती रिता बारापात्रे	परीक्षा अनुभाग	
3.	श्रीमती चित्रलेखा अलेक्झांडर	शैक्षिक अनुभाग	
4.	श्रीमती पूनम उईके	अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग	
5.	सुश्री. भावना चामोर्शीकर	परीक्षा अनुभाग	

अंताक्षरी प्रतियोगिता : कर्मचारी वर्ग: दिनांक 23/09/2019

	टीम 9		प्रोत्साहन -2
1.	श्री. सोनवीर सिंह	संगणक विज्ञान एवं अभि. विभाग	
2.	श्रीमती कृतिका बांबल	संगणक विज्ञान एवं अभि. विभाग	
3.	श्री. अविनाश राउल	संगणक विज्ञान एवं अभि. विभाग	
4.	सुश्री खंजली मोहोड	संगणक विज्ञान एवं अभि. विभाग	
5.	सुश्री तेजल झाडे	संगणक विज्ञान एवं अभि. विभाग	

शब्दज्ञान एवं वर्ग पहेली प्रतियोगिता : कर्मचारी वर्ग : 24/09/2019
आयोजक :श्री अमित मेश्राम, श्रीमती रितू ठाकरे
निर्णायक :डॉ. पूनम शर्मा

1.	सुश्री. पूनम उईके	अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग	प्रथम
2.	श्रीमती दीपाली देशपांडे	परीक्षा अनुभाग	द्वितीय
3.	श्रीमती मुग्धा लामसोगे	छात्रावास अनुभाग	तृतीय
4.	श्री. कृष्णा पटेल	नेटवर्क केंद्र	तृतीय
5.	सुश्री पल्लवी महाले	गणितविभाग	तृतीय
6.	श्रीमती अपर्णा चिचमलकर	निदेशक कार्यालय	प्रोत्साहन-1
7.	श्री. नितीन गोलाईत	शैक्षिक अनुभाग	प्रोत्साहन-2

शब्दज्ञान एवं वर्ग पहेली प्रतियोगिता : विद्यार्थी वर्ग : 24/09/2016

1.	श्री. हर्षवर्धन टेलर	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग	प्रथम
2.	श्री. रामेंद्र गुप्ता	धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विभाग	द्वितीय
3.	सुश्री. लीना खंडाईत		तृतीय
4.	सुश्री मुस्कान अमलानी		प्रोत्साहन

वादविवाद प्रतियोगिता : कर्मचारी वर्ग : 25/09/2019
आयोजक : डॉ. आशिष चौरसिया, डॉ. विभूति रंजन मिश्रा
निर्णायक : डॉ. योगेश देशपांडे, श्रीमती हेमलता मिश्रा

क्र.	नाम	विभाग/अनुभाग	पुरस्कार क्रमांक
1.	श्री. निखिल नौकरकर	नेटवर्क केंद्र	प्रथम
2.	श्रीमती पूनम उईके	अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग	प्रथम
3.	डॉ. प्रकाश कुळकर्णी	विद्युत अभियांत्रिकी विभग	द्वितीय
4.	श्रीमती दीपाली देशपांडे	परीक्षा अनुभाग	द्वितीय
5.	डॉ. किशोर जोगळेकर	वास्तुकला एवं नियोजन विभाग	तृतीय
6.	श्री. पवन कुमार तिवारी	यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग	प्रोत्साहन - I
7.	श्री. कृष्णकुमार पटेल	नेटवर्क केंद्र	प्रोत्साहन - II
8.	श्रीमती खंजली मोहोड	संगणक विज्ञान अभियांत्रिकी विभाग	प्रोत्साहन - II

वादविवाद प्रतियोगिता : विद्यार्थी वर्ग : 25/09/2019

1.	कु. राधा मोहरील	सिविल अभियांत्रिकी	प्रथम
2.	श्री. संतोषकुमार साहु	संगणक विज्ञान अभियांत्रिकी विभाग	द्वितीय

निबंध प्रतियोगिता : कर्मचारी वर्ग : 25/09/2019
आयोजिका : श्रीमती विजया देशमुख
निर्णायक : डॉ. आर. एस. गेडाम, श्रीमती संगिता गिरी

1.	डॉ. अश्विनी मिरजकर	सिविल अभि. विभाग	प्रथम
2.	श्रीमती भारती खडसिंगे	ग्रंथालय	प्रथम
3.	श्रीमती माधुरी पिंपळे	संगणक विज्ञान एवं अभि. विभाग	द्वितीय
4.	श्रीमती सुलभा जळगांवकर	स्थापना अनुभाग	तृतीय
5.	श्रीमती त्रिवेणी हटवार	भांडार अनुभाग	तृतीय
6.	डॉ. श्याम कोडापे	रासायनिक अभि. विभाग	प्रोत्साहन- I
7.	सुश्री रूपाली राखुंडे	निदेशक कार्यालय	प्रोत्साहन- II

निबंध प्रतियोगिता : विद्यार्थी वर्ग : 25/09/2019

1.	श्री. दीपक कुमार झा	इलेक्ट्रॉनिक्स अभि. विभाग	प्रथम
2.	सुश्री राधा श्रीनिवास मोहरील	सिविल अभि. विभाग	द्वितीय
3.	श्री. अनुज कुमार		तृतीय
4.	सुश्री मनिषा दास		तृतीय
5.	श्री. विनय मोटमवार		प्रोत्साहन

हिंदी कार्यशालाएँ

1. **तनाव प्रबंधन एवं समय का महत्त्व :** दि. 28 फरवरी 2019 को संस्थान के अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग के सेमिनार हॉल में समय प्रबंधन एवं समय का महत्त्व इस विषय पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इसके प्रमुख वक्ता थे 'स्मार्ट फिनिशिंग स्कूल' के डॉ. नितीन विघ्ने एवं श्रीमती मिलोनी इंदापवार। उन्होंने विभिन्न गतिविधियों द्वारा समय का महत्व बताया तथा तनाव प्रबंधन के तरीके विभिन्न खेलों द्वारा समझाए। इस कार्यशाला में संस्थान के कुल 20 गैर शैक्षिक तथा 10 शैक्षिक कर्मचारी उपस्थित थे। इसका संचालन डॉ. भारती पोलके ने किया।
2. **बच्चों के प्रति हमारे कर्तव्य :** दि. 25 जून 2019 को संस्थान के संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग में इस कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इस कार्यशाला के प्रमुख आयोजक संस्थान के स्वास्थ्य केंद्र की समुपदेशिका डॉ. सुमित्रा चॅटर्जी तथा श्रीमती आदिती देशमुख थी। इस कार्यशाला का प्रारंभ एक गीत से हुआ, 'ए जिंदगी गले लगा ले' वो सबने मिलकर गाया। इस कार्यशाला में उन्होंने आये हुए प्रतिभागियों की कुल 8 टीमें बनायी एवं सभी टीमों को अलग अलग प्रश्नों की चिठ्ठीयाँ दी और उसमें लिखे गये प्रश्नों पर चर्चा करने को कहा एवं अंत में एक टीम लीडर को उनके समक्ष चर्चा का सारांश प्रस्तुत करना था। बाद मे उनके प्रश्नों या समस्याओं का निवारण डॉ. सुमित्रा चॅटर्जी ने बडी ही समाधानपूर्वक दिया। वे प्रश्न थे 1. बच्चों का आहार 2. बच्चों की जीवनशैली 3. बच्चों की आदते 4. बच्चे और टी वी मोबाईल 5. बच्चों की पढाई 6. बच्चों के दोस्त 7. बच्चों का जेब खर्च 8. क्या बच्चे अपनी माता पिता से झूठ बोलते है ?
3. **सामाजिक उत्तरदायित्व:** दि. 19 सितंबर 2019 को संस्थान के सीनेट हॉल में हिंदी पखवाडा के अंतर्गत इस कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इसके प्रमुख वक्ता थे संस्थान के संकायाध्यक्ष (संकाय कल्याण) डॉ. दिलीप पेशवे। उन्होंने बहोतही सुचारू रूप से प्रस्तुतीकरण द्वारा उनके ग्रामीण क्षेत्र के लिए चल रहे विविध परियोजनाओं की जानकारी दी। तथा 'गूंज', 'प्रयास' आदि परियोजनाओं से हमारा समज के प्रति क्या कर्तव्य है इसकी जानकारी दी। इस कार्यशाला में संस्थान के कुल 70 शैक्षिक / गैर शैक्षिक कर्मचारी तथा विद्यार्थी उपस्थित थे। इस कार्यशाला का संचालन श्रीमती विजया देशमुख ने किया।

व्याख्यान

इस वर्ष संस्थान की रा. का. समिति द्वारा सितंबर माह से संस्थान के प्राध्यापकों द्वारा व्याख्यानों का आयोजन करने का निश्चय किया है। इस व्याख्यान में पहिला व्याख्यान डॉ. दिलीप पेशवे द्वारा दिया गया जिसको कार्यशाला का स्वरूप दिया गया।

1. **संवादशैली :** दि. 24 अक्तूबर 2019 को संस्थान के हिंदी समिती ने 'कम्युनिकेशन स्किल्स' इस विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया था। संस्थान के संकाय एवं अनुप्रयुक्त अभि. विभाग के विभाग प्रमुख डॉ. मुकुंद महाजन प्रमुख वक्ता थे। उन्होंने बहोत सुचारू रूप से अपनी संवादशैली से कैसे प्रभावी कार्य किए जाते है और कैसे बिगडते है इसके वैज्ञानिक कारण अपनी प्रस्तुतीकरण से सभी को समझाया और सबको अपने संवाद कैसे प्रभावी बनाना चाहिए इसकी शिक्षा दी जिससे की उनका जीवन सफल हो जाए।
2. **जीवन में संगीत :** दि. 11 दिसंबर 2019 को संस्थान के वास्तुकला एवं नियोजन विभाग में इस व्याख्यान का आयोजन किया गया था। वास्तुकला एवं नियोजन विभाग के प्रा. किशोर जोगलेकर ने बताया की
   - संगीत एक नशा भी है .. वह हमें अपने कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने में कारगर साबित होता है।
   - संगीत हमारे विचारों में बदलाव लाता है। हमारी भावनाएँ प्रकट करता है, हमारे अतीत की बाते करे तो दिल से आवाज आती है, इसकी कोई भाषा नही होती।
   - नए शोध से पता चला है कि संगीत सिर्फ मूड बदलने के लिए नही बल्की आपके जीवन मे नयी सोच, प्रेरणा तथा दुनिया के अनोखे रंग समझने के महत्वपूर्ण स्त्रोत में काम करता है।

कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप

कार्यलयीन हिंदी का अभिप्राय हिंदी के उस रूप से है जिसका प्रयोग प्रशासनिक प्रयोजनों के लिए सरकारी कार्यालयों में किया जाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी को देश में संवैधानिक रूप से राजभाषा का दर्जा दिया गया। तभी से हिंदी कार्यालयीन भाषा के रूप मे प्रयुक्त हो रही है ।

कार्यालयों में प्रयुक्त होनेवाली हिंदी अपनी विशिष्ट शब्दावली, वाक्य रचना और पद-रचना है। कार्यालयों में हिंदी विविध कार्यों के लिए प्रयुक्त होती है, जैसे टिप्पणी लेखन, पत्र लेखन, संक्षेपण और विस्तार। कार्यालयीन हिंदी में विशिष्ट वाक्य संरचना के द्वारा उसमें सरलता, सुबोधता और प्रामाणिकता लाना उद्देश्य रहता है इसलिए कार्यालयीन हिंदी में भाषा का स्वरूप विशिष्ट होता है ।

कार्यालयीन हिंदी की प्रमुख विशेषताएँ -

- कार्यलयीन हिंदी में प्रयुक्त शब्द निश्चित अर्थ देते है।
- कार्यालयीन हिंदी का प्रयोग कार्यालयों में टिप्पणी लिखने या पत्राचार के संदर्भ में होता है।
- कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप औपचारिक होता है अर्थात इसमें व्यक्ति सापेक्षता की अपेक्षा वैयक्तिक संरचना होती है क्योंकि इसमें व्यक्ति की अपेक्षा पदनाम प्रमुख होता है।
- भाषा कर्मवाच्य प्रधान होती है। अतः वास्तविक कर्ता का उल्लेख नही होता। जैसे - अवकाश स्वीकृत नही किया जा सकता। गृह ऋण संबंधी आवेदन अस्वीकृत ।
- कर्मवाच्य वाक्य साचों में सहायक क्रिया के रूप में 'जाना' क्रिया के विभिन्न रूपों का प्रयोग किया जाता है। जैसे- भेजा जा रहा है, सूचित किया गया था, कार्रवाई की जाएगी, आदेश दिया जाता है ।
- कार्यालयीन हिंदी में भाषा की सरलता और स्पष्टता अनिवार्य है। इसमें द्विभाषी और अटपटे शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए।
- सरकारी काम-काज की भाषा संक्षिप्त होनी चाहिए। विचारों की स्पष्टता के लिए अनावश्यक विस्तार नही होना चाहिए।
- कार्यालयीन हिंदी में सामान्यतः अन्य पुरुष का प्रयोग किया जाता है। जैसे - वे, उन्हे आदि।
- सर्वनाम में एक व्यक्ति के लिए आदरार्थ बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। जैसे - वे, उन्हें, उनके, उनका आदि।
- आदरार्थ बहुवचन के कारण ही क्रिया भी आदरार्थ बहुवचन की हो जाती है। जैसे करें, भेजे, बताए, मांगे आदि।
- अर्ध सरकारी पत्र की शैली सामान्यतः क्रुत वाच्य, उत्तम एवं मध्यम पुरुष की होती है।
- कार्यालयीन भाषा के संबंध में भारत सरकार की नीति है कि अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं के शब्दों के प्रयोग में किसी प्रकार की हिचक नही होनी चाहिए। जैसे रजिस्टर, टाइपिस्ट, टिकिट, टोकन आदि। ऐसे शब्दों की पद रचना/ वाक्यरचना हिंदी की प्रकृति के अनुकूल ही होनी चाहिए। जैसे - बैंको, टिकटों, चैकों ना कि बैंक्स, टिकट्स, चैक्स आदि।
- भिन्न-भिन्न स्त्रोतों और भिन्न-भिन्न प्रकृति के शब्दों का प्रयोग कार्यालयीन हिंदी की विशिष्टता है। इसमें संकर शब्दों का भी पर्याप्त प्रयोग होता है , अजिसे - उप-रजिस्ट्रार, रोजगर अधिकारी। यह विशेषता वाक्य रचना में भी देखी जा सकती है।
- जैसे दस्तावेजों (उर्दू) की साक्ष्यांकित प्रतियाँ (संस्कृत), मंत्री महोदय की जानकारी के लिए प्रस्तुत/पेश (सामान्य हिंदी/ उर्दू) की जाएँ।
- कार्यालयीन हिंदी में आदेशात्मक वाक्यों का पर्याप्त प्रयोग होता है। जैसे फाइल्स प्रस्तुत करे, चर्चा करें।

समग्रतः कार्यालयीन- कार्यों में प्रयुक्त हिंदी, कार्यालयीन हिंदी कहलाती है और इसकी अपनी विशिष्ट अभिव्यक्ति शैली होती है। कार्यालयीन हिंदी की भाषा सरल, स्पष्ट और छोटे वाक्यों से युक्त होनी चाहिए।

हिंदी दिवस का महत्व

खंजली मोहोड

संगणक विज्ञान अभियांत्रिकी विभाग

हिंदी दिवस हर वर्ष14 सितंबर को मनाया जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि भारत की संविधान सभा ने घोषणा की कि देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी भारत की आधिकारिक भाषा गणराज्य है।

भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को भारत गणराज्य की आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी को अपनाया। हालांकि, इसे 26 जनवरी 1950 को देश के संविधान द्वारा आधिकारिक भाषा के रूप में उपयोग करने का विचार स्वीकृत किया गया था।

मूल दिन हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाने के लिए हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिन्दी दिवस को सब बहुत ही ख़ुशी से मनाते हैं। और हिन्दी दिवस पर निबंध, भाषण एवं लेख आदि लिखते हैं।

यह भारतीयों के लिए गर्व का क्षण था जब भारत की संविधान सभा ने हिंदी को देश की आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया था। संविधान ने वही अनुमोदित किया और देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी आधिकारिक भाषा बन गई।

14 सितंबर, जिस दिन भारत की संविधान सभा ने हिंदी को अपनी आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया, हर साल हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। कई स्कूल, कॉलेज और कार्यालय इस दिन महान उत्साह के साथ मनाते हैं।

कई लोग हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के महत्व के बारे में बात करने के लिए आगे आते हैं। हिन्दी दिवस पर कविता और कहानी कहने वाली प्रतियोगिताओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मेजबानी करते हैं।

इस दिन भारत के राष्ट्रपति द्वारा नई दिल्ली में विज्ञान भवन में लोगों से हिंदी से संबंधित क्षेत्रों में उनके बेहतर काम के लिए पुरस्कार वितरित किए जाते हैं। राजभाषा पुरस्कार विभागों, मंत्रालयों, पीएसयू और राष्ट्रीयकृत बैंकों को वितरित किए जाते हैं।

25 मार्च 2015 के आदेश में गृह मंत्रालय ने सालाना हिंदी दिवसों पर दिए गए दो पुरस्कारों का नाम बदल दिया है। 1986 में स्थापित 'इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार' 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' और 'राजीव गांधी राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान मौलिक पस्तक लेखन पुरस्कार' बदलकर राजभाषा गौरव पुरस्कार हो गया है।

यह हिंदी भाषा के महत्व पर जोर देने का एक दिन है जो देश में इसका महत्व खो रहा है जहां अंग्रेजी बोलने वाली आबादी को समझदार माना जाता है। यह देखना दुखद है कि नौकरी साक्षात्कार के दौरान, अंग्रेजी बोलने वाले लोगों को दूसरों पर वरीयता दी जाती है। यह पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण को दूर करने का समय है। हिंदी दीवा हमारी राष्ट्रीय भाषा के साथ-साथ हमारी संस्कृति के महत्व पर जोर देने के लिए एक महान कदम है। यह युवाओं को उनकी जड़ों के बारे में याद दिलाने का एक तरीका है।

कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कहाँ पहुंचते हैं और हम क्या करते हैं, अगर हम अपनी जड़ों के साथ ग्राउंड और सिंक रहते हैं, तो हम अचूक रहते हैं। प्रत्येक वर्ष ये दिन हमें हमारी वास्तविक पहचान की याद दिलाता है और हमें अपने देश के लोगों के साथ एकजुट करता है।

हमें संस्कृति और मूल्यों को बरकरार रखना चाहिए और ये दिन इसके लिए एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है। हिंदी दिवस एक ऐसा दिन है जो हमें देशभक्ति भावना के साथ प्रेरित करता है। हिंदी भाषा को विभिन्न विदेशी भाषाओं के सामने बहुत तेजी से गिरावट का सामना करना पड़ रहा है और मातृभाषा की आवश्यकता को समझने के लिए और इसके महत्व को समझने के लिए हिंदी दिवस मनाना जरूरी है, यह हिंदी भाषा और इसके महत्व को जानने का अवसर प्रदान करता है। सभी को चाहिए महान उत्साह के साथ इस दिन को मनाएं।

हिंदी दिवस

- 14 सितंबर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- 14 सितंबर 1949 को गांधी जी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन में हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने को कहा था।
- इस दिन संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया की हिन्दी भारत की राजभाषा होगी।
- हिंदी भाषा को देवनागरी लिपि में भारत की कार्यकारी और राजभाषा का दर्जा आधिकारिक रूप में दिया गया।
- भारतीय संविधान की धारा 343 (1) में हिन्दी को संघ की राजभाषा और लिपि देवनागरी लिपि का दर्जा प्राप्त है।
- हिन्दी का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है।
- हिंदी हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा ही नहीं बल्कि हिंदुस्तानियों की पहचान भी है।
- हमें अपनी मातृभाषा हिंदी को कभी नहीं भूलना चाहिए।
- इस दिन कई सेमिनार, हिन्दी दिवस समारोह आदि कार्यक्रम का आयोजन भी किया जाता है।
- आज के दिन हम सभी लोगों को हिंदी गीत सुनने चाहिए और तुलसीदास, मुंशी प्रेमचंद, हरिवंश राय बच्चन द्वारा लिखी कहानियां और कविताएं भी पढ़नी चाहिए।

- डर मुझे भी लगा फासला देखकर खुद ब खुद मेरे नजदीक आती गई मेरी मंजिल मेरा हौसला देखकर।
- किस्मत और सुबह की नींद कभी समय पर नही खुलती।
- कल्पना की शक्ती हमें अनंत बनाती है ।
- गलतियाँ इस बात का सबूत है कि आप प्रयास कर रहे है ।
- ना संघर्ष, ना तकलीफ तो क्या मजा है जीने में, बडे बडे तूफान थम जाते है, जब आग लगी है सीने में ।
- किसी भी काम में आप अपना 100% देंगे तो आप सफल हो जाएंगे ।
- मंजिल पाना तो बहुत दूर की बात है दोस्तों, गुरूर में रहोगे तो रास्ते कभी न देख पाओगे ।
- एक हारा हुआ इंसान, हारने के बाद भी मुस्कुराए तो जीतनेवाला अपनी जीत की खुशी खो देता है।
- सफलता हमारा परिचय दुनिया को करवाती है और असफलता हमें दुनिया का परिचय खुद करवाती है।
- अगर हारने का डर लगता है तो जीतने की इच्छा कभी मत करना ।

प्रशासनिक शब्दावली

वार्षिक निष्पादन : Annual Performance	वरिष्ठता : Seniority
परिवीक्षा : Probation	मूल्यांकन रिपोर्ट : Appraisal Report
पदों का सृजन : Creation of Posts	अर्हक सेवा : Qualifying Services
स्थानापन्न : Officiating	सामायिक समीक्षा : Periodical Review
नियमित पद: Regular post	नियमन: Regulation
श्रेणीकरण: Grading	रिक्तियाँ : Vacancies
सत्यनिष्ठा: Integrity	कर्तव्यपरायणता : Devotion to duty
अमर्यादित: Discourteous	उप किराया : Sublet
अपरिहार्य : Unavoidable	वितीय लाभ : Monetory benefits
अपराध : Offence	अनुमति : Permitted
अनुशासनिक प्राधिकारी : Disciplinary Authority	कदाचार : Misconduct
कर्तव्यों के निर्वहन : Discharge of duties	अचल संपत्ति : Immovable Property
निर्दोष : Vindicate/ Innocent	नियोक्ता : Employer
गतिविधियाँ : Activities	निष्पक्षता : Impartially
पंजीकरण : Registration	साक्ष्य : Evidence
अनधिकृत : Unauthorised	अशिष्ट आचरण : Misconduct
आश्रित : Dependent	उपदान : Gratuity
परिलब्धियाँ : Emouluments	अर्जित अवकाश : Earned leave
आकस्मिक अवकाश : Casual Leave	अधिवर्षिता : Superannuation
परिवर्तित अवकाश : Converted Leave	संगरोध अवकाश : Quarantine Leave
चिकित्सा अवकाश : Medical Leave	प्रतिबंधित अवकाश : Ristricted Leave
परिणत अवकाश : Commuted Leave	पितृत्व अवकाश : Paternity Leave
प्रतिपूरक अवकाश : Compensatory Leave	अर्धवेतन अवकाश : Half pay leave
नियंत्रक अधिकारी : Controlling Officer	गृह नगर अग्रिम : Home Town advance
छुट्टी यात्रा रियायत : Leave Travel Allowance	सक्षम अधिकारी : Competent Authority/ Officer

आम प्रयोग के पदबंध

A brief note is placed below	संक्षिप्त नोट नीचे रखा है
Accordingly it has been decided	तदनुसार यह निर्णय लिया गया
Action may be taken as proposed	यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए
Act of commission and omission	भूल चूक
Administrative approval may be obtained	प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए
Approved as per remarks in the margin	हाशियें की टिप्पणीनुसार अनुमोदन
Await reply	उत्तर की अपेक्षा की जाए
Bill has been scrutinised and found in order	बिल की जांच की गई और सही पाया गया
Brought forward	आगे लाया गया
Await reply	उत्तर की प्रतीक्षा की जाए
Draft for approval	मसौदा अनुमोदनार्थ
Credit goes to	इसका श्रेय .... को है

"शब्द ज्ञान एवं वर्ग पहेली "

लेखक - अमित मेश्राम
प्रेषण अनुभाग

प्र. 1 – वर्ग / शब्द पहेली हल किजीए - (30 अंक)

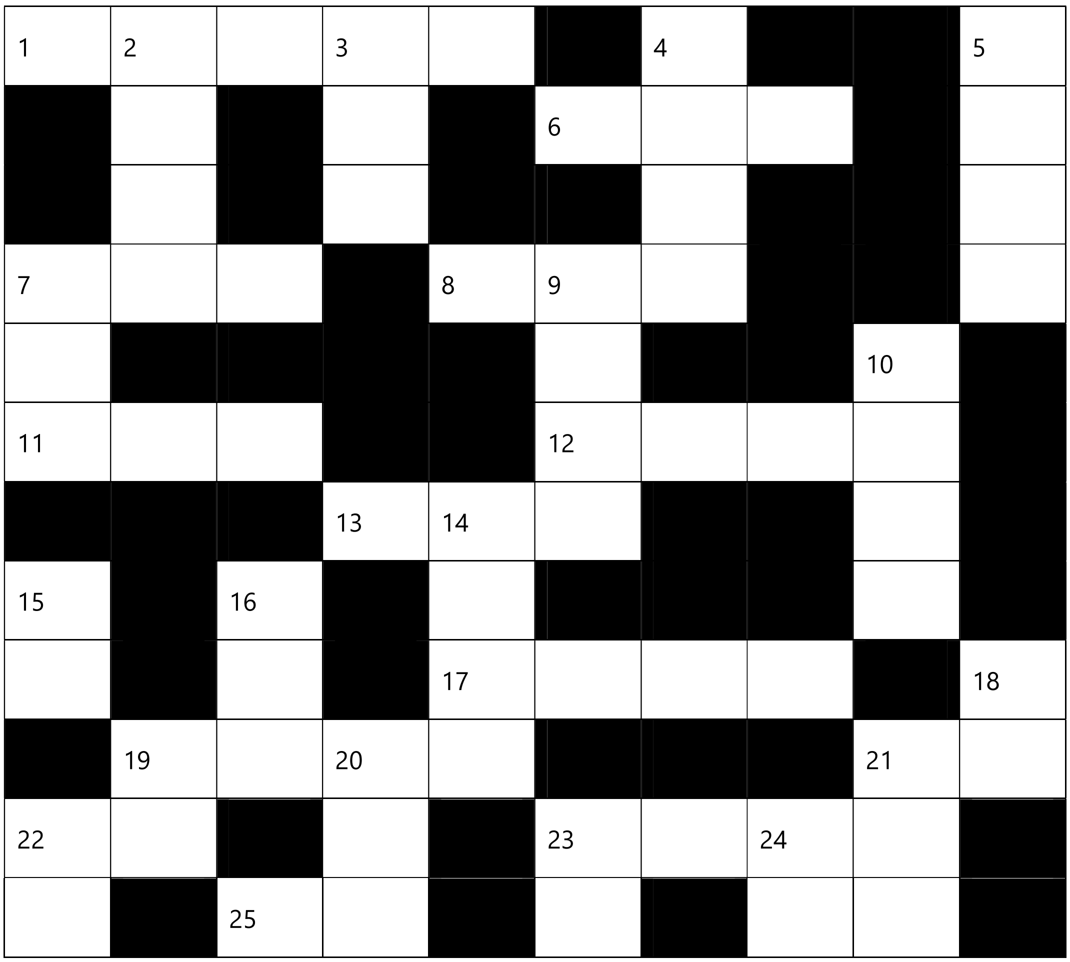

<u>बाएँ से दाएँ</u>

1. आराधना या अर्चना करने योग्य **6.** गृहस्वामिनी, गृहिणी **7.** कटे हुए कच्चे फल **8**. झांसा देने वाल, ठग **11.** पान बेचने वाला, पनवाडी **12**. सहायता, मदद **13.** पुत्री की पुत्री, नातिन **17.** अहंकारग्रस्त, घमंडी **19.** प्रसिध्दि, ख्याति **21.** ढंग, तरीका **22.** बगुला **23.** श्रेष्ठता, बडप्पन **25.** प्राण, जिंदगी

<u>ऊपर से नीचे</u>

2. भगवान राम के चरित्र का अभिनय **3.** एक निष्क्रिय एवं रंगहीन गैस **4.** पुलिस से संबंधित **5.** कब्र पर बनी हुई इमारत **7.** स्थिरता, ठहराव **9.** सियासत से संबंधित, राजनितिक **10.** गरुड पक्षी **14.** पवित्रता, निर्दोषपन, सुंदरता **15.** पोषण, पकड, पान **16.** काले रंग का घोडा **18.** लाल होने की अवस्था या भाव, लालिमा **19.** दुख, गम **20.** किमती पत्थर, गहना **21.** राक्षस, असुर **22.** घोडागाडी **23.** तल्लीन **24.** आसमान, आकाश

प्र. 2 – निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों का हिंदी में अनुवाद करें (कोई भी दस) - (10 अंक)

1. Scripted : ....
2. Nuclear Energy : ....
3. Malafide : ....
4. Implementation : ....
5. Ex-post facto sanction : ....
6. Dependent : ....
7. Consumer : ....
8. Probationary Officer : ....
9. Honorary : ....
10. Authorized : ....
11. Discretion : ....

प्र. 3 – निम्नलिखित हिंदी शब्दों का अंग्रेजी में अनुवाद करें (कोई भी दस) - (10 अंक)

1. रेखित चेक : ....
2. अनुपात : ....
3. दायित्व : ....
4. महान्यायवादी : ....
5. अनुपूरक : ....
6. पुनर्गठन : ....
7. विवरण पत्रिका : ....
8. संगरोध अवकाश : ....
9. उपदान : ....
10. स्थानापन्न : ....
11. पांडुलिपि : ....

प्र. 4 – निम्नलिखित अंग्रेजी में दिए गए मंत्रालयों/कार्यालयों के नामों का हिंदी में अनुवाद करें | (<u>कोई भी दस</u>) - (10 अंक)

1. Ministry of Rural Development : ....
2. Ministry of Social Justice and Empowerment : ....
3. Ministry of Civil Aviation : ....
4. Ministry of Environment and Forests : ....
5. Comptroller & Auditor General of India : ....
6. Department of Atomic Energy : ....
7. Inland Water Transport Department : ....
8. Meteorological Department : ....
9. Directorate of Revenue Intelligence : ....
10. Ministry of New and Renewable Energy : ....
11. Union Public Service Commission : ....

प्र. 5 – निम्नलिखित हिंदी में दिए गए मंत्रालयों/कार्यालयों के नामों का अंग्रेजी में अनुवाद करें | (<u>कोई भी दस</u>) - (10 अंक)

1. वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय : ....
2. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय : ....
3. रसायन तथा उर्वरक मंत्रालय : ....
4. समुद्रपारीय भारतीय कार्य मंत्रालय : ....
5. मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार का कार्यालय : ....
6. केन्द्रीय कांच और मृतिका अनुसंधान संस्थान : ....
7. भारत का महावाणिज्य दूतावास : ....
8. भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद : ....
9. केन्द्रीय भूमिगत जल बोर्ड : ....
10. आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन मंत्रालय : ....
11. भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार : ....

प्र. 6 – निम्नलिखित टॅगलाइन/पंचलाइन किस कंपनी/उत्पाद का है (कोई भी दस) - (10 अंक)

1. देश की धडकन : ....
2. दिमाग की बत्ती जला दे : ....
3. बजाते रहो : ....
4. इससे सस्ता और अच्छा कही नही मिलेगा : ....
5. जी ललचाये रहा ना जाये : ....
6. दाग अच्छे है : ....
7. देश का नमक : ....
8. ठंडा ठंडा कूल कूल : ....
9. ....की गोली लो खिच खिच दूर करो : ....
10. ....है तो व्हाइट है : ....
11. दोबारा मत पूछना : ....
12. हर घर कूछ कहता है : ....

प्र. 7 – निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए (कोई भी दस) - (10 अंक)

1. खून पसीना एक करना : ....
2. खिचडी पकाना : ....
3. गडे मुर्दे उखाडना : ....
4. गूलर का फूल होना : ....
5. गाजर मूली समझना : ....
6. तीन-तेरह होना : ....
7. जख्म हरा हो जाना : ....
8. डूबते को तिनके का सहारा : ....
9. लकीर का फकीर होना : ....
10. सातवे आसमान पे चढना : ....
11. सिर पर तलवार लटकना : ....
12. सुई का भाला बनाना : ....

नीरी में अंताक्षरी प्रतियोगिता निर्णायक पुरस्कार

हिंदी पारंगत परीक्षा उत्तीर्ण कर्मचारी / अधिकारी

आयजीकार कलपक्कम की विज्ञान संगोष्ठी में सहभागिता

डॉ. भारती पोलके

श्रीमती विजया देशमुख

डॉ. अनिल काकोडकर जी के साथ
आर.एस.ओ. श्रीमती विजया देशमुख

हिंदी कार्यशालाएँ

तनाव प्रबंधन एवं समय का महत्व

बच्चों के प्रति हमारा कर्तव्य

सामाजिक उत्तरदायित्व

संवाद शैली (कम्यूनिकेशन स्किल्स)

जीवन में संगीत

हिंदी पखवाड़ा उद्घाटन समारोह

सुलेखन प्रतियोगिता

काव्यपाठ प्रतियोगिता

शब्दज्ञान एवं वर्गपहेली प्रतियोगिता

अंताक्षरी प्रतियोगिता

वादविवाद प्रतियोगिता

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह

सुलेखन प्रतियोगिता

काव्यपाठ प्रतियोगिता

शब्दज्ञान एवं वर्गपहेली प्रतियोगिता

अंताक्षरी प्रतियोगिता

वादविवाद प्रतियोगिता

काव्यपाठ प्रतियोगिता (विद्यार्थी)

निबंध प्रतियोगिता

निबंध प्रतियोगिता (विद्यार्थी)

उत्कृष्ट कार्यान्वयन पुरस्कार

संपदा अनुरक्षण अनुभाग

वास्तुकला एवं नियोजन विभाग

रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग

संगणक विज्ञान अभियांत्रिकी विभाग

परीक्षा अनुभाग विभाग

भौतिकशास्त्र विभाग

धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विभाग

अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग

भांडार अनुभाग

ग्रंथालय विभाग

हमारे प्रशासनिक अधिकारी

निदेशक	अध्यक्ष शासी मंडल	कुलसचिव
डॉ. पी.एम. पडोळे	श्री विश्रामजी जामदार	डॉ. एस.आर. साठे

संकायाध्यक्ष

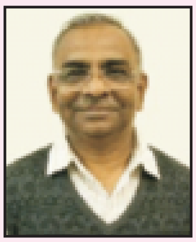				
डॉ. डी. आर. पेशवे (संकाय कल्याण)	डॉ. एस. बी. ठोंबरे (शैक्षिक)	डॉ. व्ही. बी. बोरघाटे (अनुसंधान एवं परामर्श)	डॉ. जी. पी. सिंह (वित्त एवं नियोजन)	डॉ. बी. एस. उमरे (विद्यार्थी परामर्श)

सह संकायाध्यक्ष

					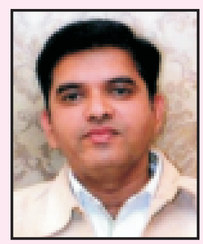
डॉ. ए. डी. वासुदेव (सिविल वर्क)	डॉ. मकरंद बल्लाळ (विद्युत वर्क्स)	डॉ. अक्षय पाटील (भांडार अनुभाग)	डॉ. अभय गांधी (ग्रंथालय)	डॉ. पी. एस. देशपांडे (MIS नेटवर्क अॅन्ड सिक्युरिटी)	डॉ. बी. आर. संकपाल (परीक्षा)
डॉ. जतीन भट (III सेल अलम्नी अक्टिव्हीटी)	डॉ. डी. एच. लटाये (होस्टेल)	डॉ. राहुल राळेगावकर (ट्रेनिंग अॅन्ड प्लेसमेंट)	डॉ. रत्नेश कुमार (विद्यार्थी गतिविधियाँ एवं खेल)	डॉ. अजय ए. लिखिते (जनसम्पर्क)	डॉ. शीतल चिद्दरवार (इंटरनॅशनल अफेयर्स अॅन्ड रॅंकिंग)

संस्थान दर्पण

विषयानुक्रम **पृष्ठ क्र.**

विषयानुक्रम	पृष्ठ क्र.
वर्ष 2019 की संस्थान उपलब्धियाँ	20
मातृभाषा दिवस	22
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस	23
सत्रहवाँ दीक्षांत समारोह वर्ष 2019	24
वर्ष 2019 की संस्थान गतिविधियाँ	25
राष्ट्रीय अविष्कार अभियान	28
संविधान दिवस	29
इंडक्शन प्रोग्राम	30

हमारे प्रेरणास्त्रोत : सर एम. विश्वेश्वरय्या

सर एम. विश्वेश्वरय्या का जन्म 15 सितंबर 1860 में हुआ था। उन्ही के जन्म दिवस पर पूरे भारत वर्ष में हर वर्ष अभियंता दिवस मनाया जाता है और हमारे संस्थान में दीक्षांत समारोह का आयोजन किया जाता है। हमारे संस्थान के प्रेरणास्त्रोत है सर एम. विश्वेश्वरय्या। उनकी नई प्रतिमा का अनावरण संस्थान में दि. 19 जनवरी में माननीय सडक एवं परिवहन मंत्री एवं MSME मंत्री श्री. नितीनजी गडकरी के हस्ते किया गया।

सर विश्वेश्वरय्या के भगीरथ प्रयासों का परिणाम

- कृष्णा सागर बांध, भद्रावती आयरन एंड स्टील वर्क्स, मैसूर संदल ऑयल एंड सोप फॅक्टरी, मैसूर विश्वविद्यालय, बैंक ऑफ मैसूर का निर्माण।
- पंचवार्षिक योजनाओं के स्वप्नद्रष्टा।
- ईमानदारी, त्याग, मेहनत आदि गुणों से संपन्न थे, उनका कहना था कार्य ज्यो भी हो लेकिन वह इस ढंग से किया गया हो कि वह दूसरों के कार्य से श्रेष्ठ हो ।
- भारतरत्न से सम्मानित मोक्षगुंडम ने सौ वर्ष से अधिक आयु पायी और अंत तक सक्रिय जीवन पाया। एकबार उनके चिरयौवन का रहस्य पूछा तो उन्होंने कहा ''जब बुढापा मेरा दरवाजा खटखटाता तो मै भीतर से जबाब देता हूँ कि विश्वेश्वरय्या घर पर नही है, और वह निराश होकर लौट जाता है।'' बुढापे से मेरी मुलाकात ही नही हो पाती तो वह मुझपर हावी कैसे हो सकता है ?

वर्ष 2019 की संस्थान उपलब्धियाँ

वीएनआईटी के लिए भी, वर्ष 2019 समान रूप से पुरस्कृत और अकादमिक रूप से पूरा हो रहा है। कई गतिविधियों, घटनाओं और परियोजनाओं ने साबित कर दिया कि हमारा संस्थान जीवंत, गतिशील और लगातार बढ़ रहा है। नया निर्माण शिक्षण के लिए अतिरिक्त सुविधाओं को जोड़ रहा है। पद्म विभूषण डॉ. अनिल काकोडकर एवं श्री अभय बंग की मौजूदगी में, माननीय केन्द्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी ने 17 फरवरी, 2019 को न्यू क्लासरूम कॉम्प्लेक्स का उद्घाटन किया। इसमें सभी अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ 120 और 150 क्षमता के 24 क्लासरूम हैं।

- इस वर्ष पहली बार विशिष्ट पूर्व छात्र पुरस्कार समारोह आयोजित किया गया था। संस्थान पुरस्कार पूर्व छात्रों को दिए गए थे, जिन्होंने नौ अलग-अलग श्रेणियों में अव्वल काम किया है।
- डॉ.एस.एम. देशपांडे को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया।
- साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में समाज के लाभ के लिए संस्थान में विकसित केवीआईसी और अन्य जैसी सभी तकनीकों को दर्शाने वाले प्रदर्शनी हॉल का उद्घाटन किया गया ।
- NIT ने संयुक्त रूप से विज्ञान भारती, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन और नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट के सहयोग से 9 से 11 फरवरी को एक अनूठी स्वास्थ्य प्रदर्शनी कुतुहल का आयोजन किया। प्रदर्शनी का विषय 'प्रीबर्थ से पुनर्जन्म' था। इसका उद्देश्य चिकित्सा उपकरणों, उपकरणों, गैजेट्स आदि के पीछे काम करने के इंजीनियरिंग सिद्धांतों और इसके प्रदर्शन को समझना था। डेढ़ लाख से अधिक अभिभावकों और छात्रों द्वारा दौरा किए गए 150 स्टॉल थे।
- दि. 8 से 9 फरवरी 2019 को रिसर्च स्कॉलर डे (अनुसंधान विद्वान दिवस) मनाया गया। हमारे संस्थान के अनुसंधान विद्वानों ने अपने चल रहे शोध को प्रदर्शित किया। आसपास के क्षेत्र का उद्योगपतियों ने दौरा किया और अपने विचारों को परिवर्तित करने की संभावना का पता लगाने के लिए उत्पादों और सेवाओं के साथ अनुसंधान विद्वानों के साथ बातचीत की ।
- NIT के लिए यह गर्व का क्षण था जब हमने 30 जून, 2019 को VNIT में केंद्रीय माननीय राज्य मंत्री संजय धोत्रे द्वारा 1MW रूफटॉप सोलर पावर प्लांट का उद्घाटन किया। यह प्रति वर्ष लगभग 80 लाख लाख बिजली बिल की बचत करेगा।
- VNIT अधिकारियों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए स्वच्छ भारत मिशन कॉल से प्रेरित होकर 6 और 7 जुलाई को दो दिन क्लीन एंड ग्रीन कैंपस ड्राइव का आयोजन किया। VNIT कैंपस को स्वच्छ और हरा-भरा बनाने के लिए मिशन में दोनों दिन 700 से अधिक लोगों, जिनमें शिक्षक, नॉनचार्जिंग स्टाफ, छात्र और पूर्व छात्र आदि शामिल थे।
- संस्थान में रु 60 करोड की अनुमानित लागत वाली 95 से अधिक आरएंडडी परियोजनाएँ हैं।
- इस अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं में, थर्मल पावर प्लांट्स यानी AUSC मिशन निदेशालय की परियोजनाओं के लिए 17 करोडवाले तीन उन्नत अल्ट्रा सुपरक्रिटिकल प्रौद्योगिकी वाले धातुकर्म और सामग्री इंजीनियरिंग और मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग हैं।
- पिछले हफ्ते वीएनआईटी ने अपने शिरपेच में एक और पंख जोड़ा जब उसने सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के साथ एक नोडल एजेंसी के रूप में मध्य भारत में सड़क सुरक्षा पाठ्यक्रम के संचालन के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस परियोजना को विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक द्वारा वित्त पोषित किया गया है। कुल धन रू. 14000 करोड़ रु. है। VNIT अगले तीन वर्ष सड़क सुरक्षा पर सरकारी अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण का आयोजन करेगा।

संस्थान के संकायों द्वारा उपलब्धियाँ

- VNIT के संकाय सदस्यों ने भी अपने अथक इनपुट, शैक्षणिक नवाचारों और औद्योगिक अनुसंधान के साथ संस्थान के लिए प्रशंसा की।
- प्रो. राहुल रालेगांवकर को ब्रिटेन के लिवरपूल जॉन मोर्रे विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के रूप में मानद पद से सम्मानित किया गया है।
- डॉ. रश्मि उद्दनवाडीकर ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर MSME (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय) से महिला इनोवेटर अवार्ड 2019 प्राप्त किया।
- बीटीआईसी परियोजनाओं के तहत तीन उपकरणों की देखरेख सिद्धांत अन्वेषक प्रो.ए.एम. कुथे एवं BIRAC प्रोग्राम के तहत चयनित हुए डॉ.स्वप्निल वंजारी को सीआईडीसी (निर्माण औद्योगिक विकास परिषद) से वैज्ञानिक के रूप में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ, जिसे भारत सरकार के निती अयोग द्वारा स्थापित किया गया था।
- प्रो. अजय टेम्भुरकर को जल आपूर्ति प्रणाली की स्थिरता को बढ़ावा देने की दिशा में किए गए सराहनीय कार्यों के लिए IWWA-जलसेवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- डॉ. प्रभात कुमार शर्मा ने रेडियो साइंस यूनियन से URSI-In RASS (इंटरनेशनल यूनियन ऑफ रेडियो साइंस–इंडियन रेडियो साइंस सोसाइटी)
- यंग रेडियो साइंटिस्ट अवार्ड 2019 प्राप्त किया।
- एक अनोखा उत्पाद ARVIS (कृत्रिम रूप से प्रबलित विजन सिस्टम)
- ECE विभाग द्वारा प्रो. के. एम. के मार्गदर्शन में डिजाइन किया गया है। भूरचंडी और 'LAUNCHPAD' नामक एक टीवी कार्यक्रम में पहली प्रविष्टि के रूप में चुना गया था।
- डॉ. समीर देशकर आईआरडीआर (आपदा जोखिम पर एकीकृत अनुसंधान) की स्थापना के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जो लचीलापन समुदायों और बस्तियों में उत्कृष्टता का अंतर्राष्ट्रीय केंद्र (ICOE) है।
- रेजिलिएंट फ्यूचर: नागपुर सिटी के लिए शहरी ग्रामीण भागीदारी निर्माण 'पर एक कॉन्क्लेव का आयोजन किया गया था। इसके अलावा IGBC (इंडियन ग्रीन बिल्डिंग काउंसिल) के छात्र अध्याय की शुरुआत की गई।
- प्रो. मोहन आवारे ने 2019 आईजीसीएस (इंडो–जर्मन सेंटर फॉर सस्टेनेबिलिटी) समर स्कूल टेक्निकल यूनिवर्सिटी, ड्रेसडेन में छात्रों को पढ़ाया और पर्यवेक्षण किया।
- पिछले 6 महीनों के दौरान 6 से अधिक STTP, 4 कार्यशालाएं और 20 से अधिक तकनीकी कार्यक्रम आयोजित किए गए।
- संस्थागत लिंकेज को बढ़ावा देने और अभियांत्रिकी एवं चिकित्सा विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान और प्रशिक्षण में संभावित सहयोग के लिए मार्ग का पता लगाने के लिए 18 जून, 2019 को एम्स, नागपुर के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

छात्र उपलब्धियाँ

- छात्र हर शैक्षणिक संस्थान की रीढ़ होते हैं। मुझे यह बताते हुए बहुत गर्व और खुशी हो रही है कि हमारे छात्रों ने अकादमिक उत्कृष्टता, प्रतियोगी परीक्षा, राष्ट्रीय स्तर के क्विज प्रतियोगिता, इनोवेशन और रिसर्च के क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।
- हमारे छात्रों ने वेबिनार के माध्यम से अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स के साथ बातचीत की ।
- जयंत नारळीकर और डॉ. आर. चिदंबरम, प्रख्यात परमाणु वैज्ञानिक ने VNIT AXIS, 2019 के टेक्नो फेस्ट को संबोधित किया।
- आकाश यादव और राहुल भागवत ने TATA क्रूसिबल कैंपस क्विज़ जीता और रु . 75,000 प्राप्त किए।
- मोहनीश टिकेकर, ईसीई के अंतिम वर्ष के छात्र भारतीय युवा प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा थे और अभी 2 सप्ताह पहले चीन गए थे।

- खुश अग्रवाल, ईसीई के तीसरे वर्ष को युवा मामलों और खेल मंत्रालय के तहत यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम के लिए चुना गया था और पिछले सप्ताह रूस का दौरा किया था।
- चैतन्य गानू अंतिम वर्ष के छात्र केमिकल इंजीनियरिंग के टॉप कैट 2018 में 99.64 प्रतिशत अंक लाकर।
- मिस श्रुति डाके, पीएचडी स्कॉलर को आईआरडीआर युवा वैज्ञानिक फेलोशिप के लिए आपदा में आपदा अनुसंधान के लिए चुना गया है।
- व्ही एन आय टी के संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग के छात्रों ने BHU वाराणसी में स्मार्ट हैकथॉन ग्रैंड फिनाले में प्रथम पुरस्कार जीता।
- साथ ही केमिकल इंजीनियरिंग के छात्रों की एक टीम ने हैकहार्ड ग्लोबल हैकाथॉन में भाग लिया और हार्वर्ड विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित पर्यावरण श्रेणी में शीर्ष तीन में जगह बनाई।
- सुरेश बांदी, पीएच.डी. डिपार्टमेंट ऑफ मेटालर्जिकल एंड मैटेरियल्स इंजीनियरिंग में छात्र ने ऑकल्टिंग राइटिंग स्किल्स फॉर आर्टिकुलेटिंग रिसर्च (AWSAR -2018) पर अखिल भारतीय स्तर की प्रतियोगिता में 4 वां स्थान प्राप्त किया है, जो कि भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (DST) द्वारा संचालित किया गया था।
- हाल ही में वीएनआईटी के पूर्व छात्रों के संघ ने 10 जून, 2019 को छात्रों के लिए बैटरी संचालित 14 सीटर बस प्रदान की।
- यह मजबूत समावेशी विकास, बेहतर अर्थव्यवस्था और प्रौद्योगिकी सुनिश्चित करेगा।
- अगले वर्ष हम गुणवत्ता तकनीकी शिक्षा प्रदान करने के छठे वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं ।
- व्ही एन आय टी संस्थान में हीरक महोत्सव 2020 वर्ष में पूरे वर्ष मनाया जाएगा और वह बहोत कार्यक्रमों का द्योतक होगा जिस में राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों, शोध विद्यार्थी दिवस, कार्यशालाएँ, प्रतिष्ठित राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय शिक्षा संस्थाओं में कार्यरत प्राध्यापकों के अतिथी व्याख्यान, उद्योग अकादमिक संगोष्ठियाँ भी शामिल होंगे। इसमें विभिन्न कार्यक्रम होंगे, जैसे कि 'संकल्प' यह स्कूल के बच्चों के लिए। 'सेवा' जनता की सेवा करने के लिए, 'संवाद' नीति निर्माताओं एवं अनुसंधान परियोजनाओं के संगठनों आदि के साथ बातचीत करने के लिए। हम सभी VNIT 2020 की डायमंड जयंती समारोह को एक शानदार सफलता बनाने के लिए कुछ प्रयास करेंगे।
- उद्घाटन समारोह में शामिल हैं 10 फीट ऊँची कांस्य प्रतिमा सर एम. विश्वेश्वरय्या की प्रतिमा के साथ फुटबॉल ग्राउंड, स्प्रिंट ट्रैक, टेनिस कोर्ट, स्पोर्ट्स स्टेडियम और 1000 दर्शकों की क्षमता वाले अतिरिक्त एम्फीथिएटर में अतिरिक्त खेल परिसर का उद्घाटन ।
- मैकेनिकल इंजीनियरिंग (ICAME 2020) में अग्रिमों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन जो कि रेनडाउन के वैज्ञानिकों से पैन की विश्व भागीदारी को देखेगा।
- थीम उद्योग 4.0 के साथ सीमेंस सेंटर ऑफ एक्सीलेंस का उद्घाटन और लॉन्चिंग प्रोजेक्ट 'उद्यम'।

मातृभाषा दिवस

दिनांक 22 फरवरी 2019 को संस्थान के फिजिक्स असेंबली हॉल में मातृभाषा दिवस का आयोजन किया था। यह दिवस सभी विभागों में भी मनाया गया। तथा सभी अधिकारी तथा कर्मचारियों के लिए अलग से आयोजन किया गया। इसमें संस्थान के अधिकारी निदेशक महोदय, कुलसचिव महोदय तथा अन्य कर्मचारी एवं विद्यार्थीयों ने सक्रिय सहभाग लिया । सभी ने अपनी मातृभाषा में काव्य एवं गायन गा कर इस कार्यक्रम की शोभा बढाई। इस कार्यक्रम का संचालन श्रीमती दिपाली देशपांडे ने किया। तथा डॉ. विभूती रंजन मिश्रा ने सफलता पूर्वक आयोजन किया।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस - 8 मार्च 2019

विश्वेश्वरय्या राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नागपुर ने 8 मार्च 2019 को संस्थान के सीनेट हॉल में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। श्रीमती. वासंती नाईक (सेवानिवृत्त न्यायाधीश) मुख्य अतिथि थी, डॉ. श्रीमती अस्मिता वैद्य, प्रिंसिपल, एन.बी. ठाकुर लॉ कॉलेज, नासिक गेस्ट ऑफ ऑनर थी और डॉ. पी.एम. पडोले, निदेशक, वीएनआईटी ने समारोह की अध्यक्षता की। महिला सेल की अध्यक्ष डॉ. अनुपमा कुमार ने किसी भी संगठन में महिला सेल के उद्देश्य और आवश्यकता के बारे में जानकारी दी।

डॉ. पी. एम. पडोले ने अपने उद्घाटन भाषण में हमारे समाज में महिलाओं की ताकत और क्षमता पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि श्रीमती वासंती नाईक ने महिलाओं के लिए विभिन्न कानुन और नियमों पर प्रकाश डाला। प्रमुख अतिथी डॉ. अस्मिता वैद्य ने अपने व्याख्यान में पारिवारिक न्यायालय मामलों, साइबर कानून, दत्तक कानून आदि से संबंधित कानूनों के बारे में बताया और अपने विचार व्यक्त किए । उद्घाटन के बाद वीएनआईटी की महिला कर्मचारियों के लिए आयोजित विभिन्न खेलों और प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। सभी महिलाओंने कार्यक्रम बहुत उत्साह के साथ सभी प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता की । पुरस्कार और उपहार वितरित किए गए ।

महिला दिवस कार्यक्रम का एक और वैशिष्ट्य, नेत्रहीन महिलाओं लिए क्रिकेट मैच थी। इसका आयोजन वीएनआईटी द्वारा 3:30 बजे से शाम 5:30 बजे के दौरान वीएनआईटी के खेल मैदान पर क्रिकेट एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड, महाराष्ट्र (सीएबीएम) के सहयोग से किया गया था। डॉ. डी. आर. पेशवे, संकायाध्यक्ष (संकाय कल्याण) ने इस अनूठे कार्यक्रम को आयोजित करने की पहल की। क्रिकेट मैच आशादीप टीम, (मेंटर शास्त्री मैडम) और आत्मदीप, विदर्भ टीम (मेंटर सुश्री जिग्यासा कुबडे चवलढाल) के बीच खेला गया। यह पहली बार है जब अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर ब्लाइंड महिलाओं के लिए इस तरह का एक अनूठा मैच आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम समापन धन्यवाद प्रस्ताव और राष्ट्रीय गान के साथ संपन्न हुआ। श्रीमती दीपाली देशपांडे ने कार्यक्रम की कार्यवाही का सफलतापूर्वक संचालन किया। डॉ. शीतल चिद्रवार, डॉ. रमणी मोटघरे, श्रीमती विजया देशमुख, श्रीमती भारती पोलके, श्रीमती प्रणोती सुपारे ने आयोजन को सफल बनाने में मदद की।

वर्ष 2019 में सेवानिवृत्त अधिकारी तथा कर्मचारी

क्र.	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ती दिनांक
1.	श्रीमती उषा पाटील	आशुलिपिक	31.01.2019
2.	डॉ. व्ही.ए. म्हैसालकर	प्रोफेसर (सिविल)	28.02.2019
3.	श्री राजबाहोर चौबे	सहायक कर्मचारी	28.02.2019
4.	श्री बी. आर. भिवगडे	सहायक कर्मचारी	31.05.2019
5.	श्री एस. के. भोयर	सहायक कर्मचारी	30.06.2019
6.	श्री एन.एन. भोंदले	वरिष्ठ कार्य सहायक	30.06.2019
7.	डॉ. ए.एस. जुनघरे	प्राध्यापक विद्युत अभियांत्रिकी	31.07.2019
8.	श्री टेकचंद एफ. गौर	सहायक कर्मचारी	31.07.2019
9.	श्री पी. ओ. गायकवाड	सहायक कर्मचारी	31.092019
10.	श्री बळीराम भोयर	सहायक कर्मचारी	31.10.2019
11.	श्री राहुल दुपारे	सहायक कर्मचारी	31.10.2019
12.	श्री एस. टी. झाडे	लॅब असिस्टंट	31.12.2019
13.	श्री अनिकेत शंभरकर	तकनीकी सहायक	31.12.2019

वर्ष 2019 में दिवंगत कर्मचारी

1.**डॉ. अनिकेत देशमुख -** प्राध्यापक वास्तुकला एवं नियोजन विभाग

2. **श्री नरेंद्र मिश्रा -**धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विभाग

सत्रहवाँ दीक्षांत समारोह वर्ष 2019

वी एन आय टी नागपुर का सत्रहवाँ दीक्षांत समारोह नागपुर के सुरेश भट सभागृह में किया गया। इस कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि थे किर्लोस्कर ब्रदर्स लिमिटेड के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक माननीय श्री संजय किर्लोस्कर,शासी मंडल अध्यक्ष श्री विश्राम जामदार, गवर्निंग बोर्ड के सदस्य और सीनेट सदस्य, विशिष्ट आमंत्रित, सभी डीन, सभी एसोसिएट डीन, कुलसचिव, संकाय सदस्य, संस्थान के कर्मचारी इस समारोह में उपस्थित थे।

इस शुभ दिन पर किर्लोस्कर ब्रदर्स लिमिटेड के मुख्य अतिथि श्री संजय किर्लोस्कर जी, जिनकी दूरदर्शिता और निपुणता ने देश को गौरवान्वित किया है, जो भारत के सबसे बड़े समूह निगमों में से एक है। वह अखिल भारतीय प्रबंधन संघ के उपाध्यक्ष भी हैं। उन्होंने भारत के सबसे बड़े पंप निर्माता बनने के लिए किर्लोस्कर ब्रदर्स लिमिटेड का नेतृत्व किया है, उन्होंने सभी स्नातकों को संबोधित किया।

इस 17 वें दीक्षांत समारोह में, संस्थान ने डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (100), एम.टेक (268), एम.एससी (53), विभिन्न अभियांत्रिकी शाखाएँ जैसे कि रासायनिक, सिविल, संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी, विद्युत तथा इलेक्ट्रॉनिक्स, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार, यांत्रिक, धातुकी एवं पदार्थ, खनन अभियांत्रिकी विषयों में प्रौद्योगिकी स्नातक (677) बैचलर ऑफ आर्किटेक्चर (55) विद्यार्थियों को उपाधियों से सम्मानित किया गया। इस वर्ष वी एन आय टी 42 मेधावियों और शैक्षिक मेधावी उपलब्धियों के लिए कई पुरस्कारों के साथ छात्रों और अनुसंधान विद्वानों को सम्मानित किया गया । सुश्री रश्मि लड्ढा, संगणक विज्ञान अभियांत्रिकी विभाग की छात्रा ने 9.78 का उच्चतम सीजीपीए हासिल करके बी. टेक. प्रोग्राम के सभी छात्रों में प्रथम स्थान पर रहकर विश्वेश्वरय्या गोल्ड मेडल 2019 का गौरव प्राप्त किया । सिविल अभियांत्रिकी विभाग के श्री अक्षर रखोलिया को सबसे अधिक पुरस्कार प्राप्त हुए। श्री मयंक शिवहरे, यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग के छात्र श्री हेमंत करकरे पुरस्कार के प्राप्तकर्ता हैं। इस वर्ष संस्थान ने तीन नए पुरस्कारों की शुरुआत की है, अनिल धारशिवकर पुरस्कार, डॉ.मुल्कराज मदन गोल्ड मेडल और नीलेश महाकाळकर मेमोरियल राइजिंग स्टार अवार्ड।

निदेशक महोदय ने अपने भाषण में सभी विद्यार्थियों का संबोधन किया और कहा कि 'आज का दिन 2019 के स्नातक वर्ग के लिए बहुत ही खास दिन है। यह एक सफल यात्रा के अंत का प्रतीक है और इस बात पर भी प्रकाश डाला गया है कि जल्द ही एक नया सफर शुरू होने वाला है क्योंकि स्नातक की कक्षा जल्द ही काम की दुनिया में प्रवेश करने वाली है। इस संस्थान में आपके चार साल रहना कठिन परिश्रम और ईमानदारी की अभिव्यक्ति है, ज्ञान प्राप्त करना और विभिन्न जीवन समस्याओं, प्राथमिकताओं और संभावनाओं के संपर्क में आना। मुझे यकीन है कि आपकी भविष्य की यात्रा अवसरों और चुनौतियों से भरी होगी और आप अपने माता-पिता को खुश करने के लिए कड़ी मेहनत करने की कोशिश करेंगे, अपने सपनों और आकांक्षाओं को पूरा करते हुए राष्ट्र के लिए काम करेंगे !

प्रमुख अतिथी श्री संजय किर्लोस्कर जी ने तथा श्री. विश्रामजी जामदार ने सभी विद्यार्थियों को बधाई दी। विश्वेश्वरय्या गोल्ड मेडल प्राप्त विद्यार्थिनी सुश्री राशी लड्ढा ने सभी स्नातक, स्नातकोत्तर तथा पी. एच. डी. प्राप्त विद्यार्थियों को शपथ दिलाई। तत्पश्चात कुलसचिव महोदय ने आभार प्रदर्शन किया और यह कार्यक्रम संपन्न हुआ।

- आँखों में जीतने के सपने है, ऐसा लगता है अब जिंदगी के हर पल अपने है ।
- जिस नजर से आप इस दुनिया को देखेंगे, ये दुनिया आपको वैसेही दिखेगी ।
- भरोसा खुदपर रखो तो ताकद बन जती है और दूसरों पर रखो तो कमजोरी बन जाती है ।
- हमेशा इस बात को स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए कि मै कुछ चीजे नही बदल सकता।

वर्ष 2019 की संस्थान गतिविधियाँ

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती (14 अप्रैल 2019)

दि. 14 अप्रैल 2019 को संस्थान के पुस्तकालय में भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती का आयोजन किया गया। इस अवसर पर निदेशक महोदय द्वारा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के छायाचित्र को माल्यार्पण किया गया। संस्थान के कर्मचारियों एवं विद्यार्थींयो ने पुष्पार्पण कर डॉ. आंबेडकर के प्रति श्रद्धा जतायी।

शारिरीक शिक्षा एवं खेल विभाग गतिविधियाँ

खेल मानव संसाधन विकास के आवश्यक घटक हैं, जो अच्छे स्वास्थ्य, कामरेडशिप और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ावा देने के लिए हैं, जो बदले में युवाओं के व्यक्तित्व के समग्र विकास पर सकारात्मक और गहरा प्रभाव डालते हैं, जो ऊर्जा का एक संभावित स्रोत है। राष्ट्र के विकास, प्रगति और समृद्धि के लिए उत्साह और प्रेरणा।

अखिल भारतीय अंतर एनआईटी टूर्नामेंट में भागीदारी

संस्थान भारत में अन्य सभी एनआईटी के छात्रों के बीच प्रतिभा दिखाने के लिए ऑल इंडिया इंटर एनआईटी टूर्नामेंट के रूप में एक उच्च स्तरीय मंच प्रदान करता है। इस साल कुल 208 छात्रों, 148 (पुरुष) और 60 (महिला) ने भारत में छह अलग-अलग एनआईटी द्वारा आयोजित अखिल भारतीय अंतर एनआईटी टूर्नामेंट में कुल 15 खेलों में भाग लिया। छात्रों ने कुल 9 खेलों में ट्रॉफी और पदक जीतकर संस्थान का सम्मान बढाया। भागीदारी और उपलब्धी का विवरण नीचे दिया गया है।

भारत में अन्य एनआईटी द्वारा आयोजित अन्य अखिल भारतीय अंतर एनआईटी टूर्नामेंट में प्रदर्शन का विवरण निम्नलिखित तालिका में दिया गया है।

क्र..	खेल	टुर्नामेंट आयोजित करनेवाली NIT	कालावधी	प्रदर्शन
4	स्विमिंग(M &W)	एन आय टी ,सुरथकल	18 से 20 जनवरी 2019	01 गोल्ड मेडल ,3- सिल्व्हरमेडल, 05- ब्रॉन्झ मेडल
5	लॉन टेनिस (M &W)			वूमन–विनर मेंन –थर्ड प्लेस
6	पॉवर लिफ्टिंग (M)			01 गोल्ड मेडल,,02 ब्रॉन्झ मेडल,01 सिल्व्हर मेडल
7	खो–खो (M&W)	एन आय टी , राउरकेला	25 से 27 जनवरी 2019	वुमन विनर
8	वॉलीबॉल (M &W)	एन आय टी , त्रिची	20 से 22 फरवरी 2019	मेनरनर अप, बेस्ट स्पाइकर ऑफ द टुर्नामेंट टु शिवा
9	चेस (M &W)	एन आय टी , अगरताला	8 से 10 मार्च 2019	वुमन–विनर
10	अॅथलेटिक्स(M&W)	एन आय टी , वारंगल	22से 24 मार्च 2019	सिल्व्हर -4, ब्रॉन्झ -2
11	पॉवर लिफ्टिंग टीम चॅम्पिअनशिप	एन आय टी , जयपुर	NIT जयपुर, 17 से 20 अक्तूबर 2019	रनर अप
12	पॉवरलिफ्टिंग–इंडिव्हिज्युअल मेडल्स			गोल्ड -2
13				सिल्व्हर-1
14				ब्रॉन्झ-1
15	बॉडी बिल्डिंग टीम चॅम्पिअनशिप			रनर–अप
16	बॉडी बिल्डिंग – इंडिव्हिज्युअल इव्हेंट्स			गोल्ड-1
17				सिल्व्हर-3
18	चेस टीम चॅम्पिअनशिप			रनर–अप
19	चेस - इंडिव्हिड्युअल मेडल्स			जतिन V V-सिल्व्हर
20				पुष्कर चौगनकर-सिल्व्हर
21				गौतमी कांत – सिल्व्हर

ऑल इंडिया इंटर फॅकल्टी/स्टाफ टुर्नामेंट फॉर बॅडमिंटन , टेबल टेनिस ॲंड चेस

8 से 20 दिसंबर 2019 के दौरान एनआईटी जयपुर में आयोजित बैडमिंटन, टेबल टेनिस और शतरंज के लिए ऑल इंडिया इंटर एनआईटी फकल्टी / स्टाफ टुअरनामेंट फॉर बैडमिंटन, स्टाफ टूर्नामेंट। वीएनआईटी नागपुर ने भी इस मेगा इवेंट में भाग लिया। इस टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए विभिन्न विभागों और वर्गों से 16 संकाय / स्टाफ सदस्य (12 पुरुष और 04 महिला) की एक टुकड़ी को भेजा गया था। परिणाम नीचे दिखाया गया है:

खेल	वय	कॅटेगरी	नाम	मेडल
बॅडमिंटन	वुमन 50 वर्ष से ज्यादा	सिंगल	डॉ. सुषमा गिरीपुंजे	सिल्व्हर
	वुमन 50 वर्षा से कम		श्रीमती मुग्धा लामसोगे	सिल्व्हर
टेबल टेनिस	मेंन – 50 वर्ष से ज्यादा	सिंगल	डॉ. अनिरुद्धा घारे	गोल्ड
			डॉ. श्रीश तांबे	सिल्व्हर
		डबल्स	डॉ. अनिरुद्धा घारे	गोल्ड
			डॉ. श्रीश तांबे	
	ओपन	सिंगल	डॉ. अनुपमा कुमार	गोल्ड
		सिंगल	डॉ. सारिका बहादुरे	ब्रॉन्झ
		डबल्स	डॉ. अनुपमा कुमार	गोल्ड
			डॉ. सारिका बहादुरे	
		मिक्स्ड	डॉ. अश्विन ढोबळे	सिल्व्हर
			डॉ. सारिका बहादुरे	
चेस	ओपन	मेंअ	डॉ. विनायक अडाणे	गोल्ड
			डॉ. राजपाठक	
			डॉ. अतुल वानखेडे	
			डॉ. संगेश झोडापे	

लोकल टुर्नामेण्ट्स :

संस्थान स्थानीय टूर्नामेंटों के महत्व को भी समझता है और शैक्षणिक कैलेंडर के अनुसार जब भी संभव हो विभिन्न छात्रों को विभिन्न स्थानीय टूर्नामेंटों में उजागर करता है।

संस्थान ने क्रिकेट, बास्केटबॉल, कबड्डी और फुटबॉल टूर्नामेंट में डॉ. पंजाबराव देशमुख खेल महोत्सव में भी भाग लिया। संस्थान बैडमिंटन (महिला) की टीम ने तीसरा स्थान हासिल किया जहां बास्केटबॉल (पुरुष) टीम सेमीफाइनल में पहुंची।

क्रिक मॅनिया

इस वर्ष संस्थान ने 6 से 20 दिसंबर 2019 के दौरान क्रिक मेनिया टूर्नामेंट के 25 वें संस्करण का आयोजन किया। इस विशेष आयोजन के माध्यम से संस्थान के छात्र शारीरिक शिक्षा और खेल अनुभाग के मार्गदर्शन में खेल आयोजन के विभिन्न कौशल सीख रहे हैं।

संस्थान के संकाय और कर्मचारी क्रिकेट मैच

संस्थान के संकाय और कर्मचारीयों की क्रिकेट मैच 27 जनवरी से 17 फरवरी 2019 के दौरान आयोजित किए गए थे। संस्थान के लगभग 60 संकायों और कर्मचारियों में निदेशक, डीन, प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, सहायक प्रोफेसर और गैर–शिक्षण कर्मचारी

शामिल थे। इस अधिकारिक टूनर्झमेंट के अलावा संस्थान के संकायों और कर्मचारियों के लिए कई सराव मैच भी आयोजित किए गए थे।

शारीरिक शिक्षा और खेल अनुभाग VNIT नागपुर द्वारा अखिल भारतीय अंतर एनआईटी संकाय और स्टाफ क्रिकेट टूर्नामेंट का 27 से 30 दिसंबर 2018 के दौरान आयोजन

विश्वेश्वरय्या राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नागपुर ने 27 दिसंबर 2019 से 30 दिसंबर 2019 तक पहली बार अखिल भारतीय इंटर एनआईटी फैकल्टी एंड स्टाफ क्रिकेट टूर्नामेंट 2019-20 का आयोजन किया।

टूर्नामेंट के आयोजन का उद्देश्य शैक्षिक एवं और गैर-शैक्षिक कर्मचारियों को एक सामान्य मंच प्रदान करना है। सभी एनआईटी को प्रतिस्पर्धी खेलों के रूप में शारीरिक गतिविधियों के लिए कर्मचारियों को प्रोत्साहित करना और सामाजिक संपर्क के लिए एक सामंजस्यपूर्ण वातावरण प्रदान करना और दिन में उत्साह विकसित करना है। भारत के विभिन्न एनआईटी के कर्मचारियों के बीच जीवन और टीम की भावना। यह केवल एनआईटी परिवार के संकाय और कर्मचारियों को उनके दैनिक जीवन में नियमित शारीरिक गतिविधियों की आदत को प्रोत्साहित करने का एक प्रयास है।

इस टूर्नामेंट ने उन 12 टीमों की जबरदस्त प्रतिक्रिया का अनुभव किया जिन्होंने इस टूर्नामेंट में पूरे दिल से हिस्सा लिया। NIT जयपुर, NIT दुर्गापुर, NIT उत्तराखंड, NIT आंध्र प्रदेश, NIT सिलचर, NIT भोपाल, NIT कालीकट, NIT इलाहाबाद, NIT राउरकेला, NIT वारंगल, NIT रायपुर और NIT नागपुर।

VNIT नागपुर ने तीसरा स्थान हासिल किया, NIT उत्तराखंड उपविजेता रहा और MNIT जयपुर ने चैंपियनशिप ट्रॉफी जीती।

इस समारोह में नागपुर जिले के कलेक्टर श्री रवींद्र ठाकरे, समारोह के मुख्य अतिथि और श्री चिन्मय एस. पंडित सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

समारोह के मुख्य अतिथि ने संस्थान द्वारा देश भर के विभिन्न एनआईटी के संकाय और कर्मचारियों के लिए क्रिकेट टूर्नामेंट आयोजित करने के लिए किए गए प्रयासों की सराहना की। उन्होंने दैनिक जीवन में शारीरिक फिटनेस के महत्व पर भी जोर दिया। सम्माननीय अतिथि ने प्रतिभागियों को अपनी शुभकामनाएं दीं और व्यस्त कार्यक्रम से समय निकालकर इस तरह के आयोजन में भाग लेने के उनके उत्साह की सराहना की।

वीएनआईटी के निदेशक डॉ. पी. एम.पडोले ने भी सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और इस टूर्नामेंट के लिए सभी निदेशकों को भारी प्रतिक्रिया के लिए धन्यवाद दिया।

समारोह के अध्यक्ष श्री विश्रामजी जामदार ने समारोह की अध्यक्षता की और अपने उत्साहवर्धक शब्दों के साथ सभा को संबोधित किया।

राष्ट्रीय अविष्कार अभियान के अंतर्गत आयोजित की गई गतिविधियों का विवरण

लेखिका - पल्लवी महाले
गणित विभाग

राष्ट्रीय अविष्कार सप्ताह : राष्ट्रीय अविष्कार अभियान के अंतर्गत एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली के अनुदेशों के अनुसार राष्ट्रीय अविष्कार सप्ताह (14-21 अक्टूबर, 2019) का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विद्यार्थीयों को ''पानी की गुणवत्ता और पानी के संरक्षण'' के विषय पर निम्न चार प्रयोगों को करने को कहा गया।

1) पानी की छाग बनाने की क्षमता 2) पानी के पी.एच. प्रवृत्ति का मापन 3) पानी के क्षारीय प्रवृत्ति का मापन 4) पानी में घुले हुए पदार्थों का मापन

इस सप्ताह की प्रथम कड़ी में 11, अक्टूबर 2019 को वी.एन.आई.टी. के रसायन शास्त्र विभाग की प्रयोगशाला में प्रो. जे.डी. इखे ने उपर वर्णित चारों प्रयोगों का प्रदर्शन स्कूलों के अध्यापकों के लिए किया।

15 अक्टूबर 2019 को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी के जन्मदिवस के उपलक्ष में नागपुर नगरपालिका के वाल्मीकीनगर विद्यालय में नवमी और दसवी के 22 विद्यार्थीयों ने इस चारों प्रयोगों को अपने विद्यालय में किया। इस कार्यक्रम में वी.एन.आई.टी नागपुर की राष्ट्रीय आविष्कार ही के सदस्य डॉ. पी.एस. कुलकर्णी नोडल ऑफीसर, डॉ. अनुराधा देशपांडे उप नोडल ऑफीसर, डॉ. रूपेश गेडाम और डॉ.जे.डी. ईखे तथा प्रादेशिक विद्या प्राधिकरण संस्था के स्टाफ सदस्य सम्मिलित हुए।

इस कार्यक्रम की अमली शृंखला मे, महानगर पालिका के विवेकानन्द विद्यालय और बॅरिस्टर वानखेडे विद्यानिकेतन विद्यालय रामदासपेठ नागपुर में 17 अक्टूबर और 18 अक्टूबर को क्रमश: 22 और 25 विद्यार्थियों ने इन चारों प्रयोगों को दोहराया।

सभी ऊपर उल्लेखित विद्यालयों में डॉ. ईखे और उनके शोध छात्रों ने प्रयोगों को आयोजित करने में अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया तथा विद्यार्थियों और शिक्षकों को पानी के संरक्षण के विषय में जानकारी दी। वी.एन.आय.टी. नागपुर की राष्ट्रीय टीम के सदस्यों ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान किया।

राष्ट्रीय आविष्कार सप्ताह के समापन पर विद्यार्थियों द्वारा किए गए चारों प्रयोगों के परिणामों को एन.सी.आर.टी. नई दिल्ली की दी गई वेबलिंक पर अपलोड किया गया।

2 विज्ञान दिवस का आयोजन :

राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के अंतर्गत संस्था में 28 फरवरी 2019 को विज्ञान दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में नागपुर नगर पालिका के चार तथा जिला परिषद के दो विद्यालयों की टीमों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य लोगों के दैनिक जीवन में विज्ञान के महत्व को समझाना था। वी.एन.आई.टी. नागपुर के छात्रों श्री राहुल भगत तथा श्री आकाश ने विद्यालयों की छह टीमों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन तथा संचालन किया। इस प्रतियोगिता में महानगर पालिका की वाल्मिकी नगर विद्यालय और बॅरिस्टर शेषराव वानखेडे विद्यानिकेतन विद्यालय ने क्रमश: प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त किया। विज्ञान दिवस कार्यक्रम की अगली शृखंला में पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया संस्था के निदेशक प्रो. पी. एम. पड़ोले और कुलसचिव प्रो. एस.आर. साठे ने विद्यार्थियों को पुरस्कारों तथा प्रमाणपत्रों प्रदान किए।

संविधान दिवस - 26 नवंबर 2019

एमएचआरडी के दिशा निर्देशानुसार विश्वेश्वरय्या राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान नागपुर ने 26 नवंबर 2019 को संविधान दिवस मनाया।

इस कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथी के रूप में कानूनी विद्वान डॉ. अनिल बनकर थे। निदेशक डॉ. पी. एम. पडोळे एवं कुलसचिव डॉ. एस.आर. साठे भी उपस्थित थे।

इस उत्सव की शुरुआत छात्रों, फैकल्टी, और स्टाफ के सदस्यों ने एक संपूर्ण समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में भारत के मूल्यों को बनाए रखने और अपने सभी नागरिकों को न्याय, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से सुरक्षित करने के लिए की। विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास और पूजा की स्वतंत्रता, स्थिति और अवसर की समानता, और उन सभी बिरादरी को बढ़ावा देने के लिए व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता का आश्वासन दिया।

प्रतिज्ञा का पालन भारत के संविधान पर एक सूचनात्मक वृत्तचित्र की स्क्रीनिंग द्वारा किया गया था, जिसके बाद उसी विषय पर एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। छात्रों और कर्मचारियों के सदस्यों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और सवालों के जवाब दिए और उन्हें पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस अवसर को चिन्हित करने के लिए गणमान्य लोगों ने भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. बी. आर.आंबेडकर को श्रद्धांजली अर्पित की। प्रो. पडोळे ने भारत के नागरिकों के रूप में हमारे अधिकारों और कर्तव्यों के बीच एक संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता पर विस्तार से बताया। उन्होंने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि कैसे संविधान सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाओं से परे प्रत्येक नागरिक को गरिमा प्रदान करता है और इसलिए इसे एक सच्चे लोकतंत्र में सभी दस्तावेजों में सबसे महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए।

इसके बाद मुख्य अतिथि ने सभा को संबोधित किया और भारत के संविधान के गठन, क्रियान्वयन और प्रासंगिकता के बारे में विस्तार से बात की। उन्होंने हमारे संविधान के निर्माताओं के बलिदान, चुनौतियों और उपलब्धियों को जीवंत किया। डॉ. बनकर ने अपने आदर्शों को आत्मसात करते हुए हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन में व्यवहार से संविधान को स्थानांतरित करने की आवश्यकता पर बल देते हुए अपने भाषण का समापन किया।

आयोजकों डॉ. जी. एन. निंबर्ते, डॉ. विभूति रंजन मिश्रा, डॉ. विभुदत्त दास और डॉ. जयपाल द्वारा धन्यवाद देने के बाद राष्ट्रगान के साथ यह उत्सव संपन्न हुआ।

यह संविधान सभी विभागों ने भी अपने अपने विभाग में शपथ लेकर मनाया।

- यदि आप अच्छा नही बना सकते तो कम से कम ऐसा करिए कि वो अच्छा दिखे।
- एक 'इच्छा' कुछ नही बदल सकती, एक निर्णय कुछ बदलता है, लेकिन एक 'निश्चय' सब कुछ बदल देता है ।
- जो मंजिलों को पाने की चाहत रखते है वो समुंदरों पर भी पथ्थरों के पूल बना देते है ।
- ज्यों नही हमरे पास वो 'ख्वाब' है पर ज्यो है हमरे पास वो 'लाजवाब' है ।
- याद रखो दुनिया आपके उदाहरण से बदलेगी, आपकी 'राय' से नही ।

टेक्विप - III द्वारा प्रथम वर्ष बी. टेक. / बी. आर्क. इंडक्शन प्रोग्राम
अभिविन्यास दिवस : 22 जुलाई 2019
इंडक्शन (प्रेरण) गतिविधियाँ : 8 से 12 अगस्त 2019

अभिविन्यास दिवसः 22 जुलाई 2019 को, प्रथम वर्ष बी.टेक. एवं बी. आर्क.छात्रों के लिए अभिविन्यास दिवस की व्यवस्था की गई थी, जो हाल ही में संस्थान में शामिल हुए थे। मुख्य कार्यक्रम 8 विभिन्न स्थानों पर सिविल इंजीनियरिंग कक्षा लाइव टेलीकास्ट में आयोजित किया गया था। निदेशक प्रो.पी.एम.पडोले, संकायाध्यक्ष शैक्षिक प्रो एस.बी. ठोंबरे, संकायाध्यक्ष विद्यार्थी परामर्श प्रो बी.एस.उमरे, चिकित्सा अधिकारी डॉ.पंकज धुले, ॲवल्युमनी असोसिएशन के निदेशक श्री शशिकांत चौधरी, स्टुडंट मेंटर प्रभारी डॉ.आर.बी.केसकर ने छात्रों को छात्रों के लिए विभिन्न पहलुओं के बारे में बताया। डॉ. ए.वाय. व्यवहारे ने कार्यवाही का संचालन किया। दिन के दूसरे भाग में, छात्रों को उनके संबंधित विभागों में इकठ्ठा किया गया, विभाग प्रमुख एवं संकाय सदस्यों द्वारा स्वागत किया गया। विभाग प्रमुख एवं संकाय सदस्यों ने अपना परिचय दिया और विभागों में उपलब्ध सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। छात्र संरक्षक ने छात्रों को शैक्षणिक नियमों और छात्र संरक्षक कार्यक्रम के साथ-साथ आगामी प्रेरण सप्ताह के बारे में अवगत कराया।

इंडक्शन (प्रेरण) सप्ताह : 8 से 12 अगस्त 2019

विश्वेश्वरय्या राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नागपुर VNIT, नागपुर के प्रथम वर्ष के बीटेक / BArch छात्रों के लिए इंडक्शन प्रोग्राम का उद्घाटन दि. 8 अगस्त 2019 को श्री. चिन्मय पंडित, IPS, DCP ट्रैफिक, नागपुर शहर में श्री विश्रामजी जामदार, शासी मंडल अध्यक्ष बोर्ड की उपस्थिति में किया गया। राज्यपाल, वीएनआईटी एवं प्रो.पी.एम पडोले, निदेशक, वीएनआईटी। इंडक्शन कार्यक्रम ज्यो छात्रों को संस्थान के वातावरण से परिचित हो जाए ।

कई अलग-अलग रचनात्मक गतिविधियाँ जैसे मूवी मेकिंग, थिएटर वर्कशॉप, वॉइस ओवर, बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट (एक्शन में निर्माता), ओरिगामी आदि की योजना 5 दिनों में बनाई गई । यह नागपुर हार्टफुलनेस एसोसिएशन द्वारा समय प्रबंधन और सक्रिय शिक्षण, दिल की धड़कन / ध्यान सत्रों के साथ-साथ डॉ. शिशिर पलसपुरे द्वारा व्यक्तित्व विकास पर एक परामर्श भी लिया गया।

उद्घाटन कार्यक्रम में लगभग 1000 नव प्रवेशित प्रथम वर्ष के छात्रों के साथ-साथ उनके छात्र संरक्षक, संकाय सदस्य, सह संकायाध्यक्ष, हॉस्टल वार्डन, संकायाध्यक्ष शैक्षिक डॉ.एस.बी. ठोंबरे, संकायाध्यक्ष विद्यार्थी परामर्श डॉ.बी.एस.उमरे एवं संकायाध्यक्ष संशोधन एवं विकास उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ.रवींद्र केसकर ने किया और धन्यवाद प्रस्ताव डॉ.रत्नेश कुमार ने किया। उसके बाद सभी छात्रों से संस्थान का दौरा कराया गया। दि. 12 अगस्त 2019 को समापन समारोह संपन्न हुआ।

गतिविधी का नाम	स्थान	विशेषज्ञ
मेकर्स इन ॲक्शन	SAC1 (प्रथम तल, मेगा मेस)	आर्कि. आनंद धोपटे, शीतल धोपटे
मुव्ही मेकिंग युजिंग मोबाइल्स (A2)	सिविल एवं विद्युत अभि. विभाग क्लासरूम्स	आश्लेश जामरे एवं राजेंद्र वैद्य, नोटेड फिल्म मेकर्स, डस्क एंटरटेनमेंट, मुंबई
थिएटर वर्कशॉप (A3)	युजी 1, युजी 2 (संगणक विज्ञान अभि. विभाग)	रूपेश पवार, मंगल सानप, अवार्ड विनर डायरेक्टर NSD ग्रॅज्युएट, मेराकि थिएटर
वॉइस ओव्हर ॲन्ड ॲन्करिंग वर्कशॉप (A4)	LH 2 (संगणक विज्ञान) + आर्किटेक्चर स्मार्ट क्लास रूम	पल्लवी दलाल, आर जे प्रीति, प्रोफेशनल वॉइस आर्टिस्ट, साउंड्स बेस्ट
ओरिगॅमि (A5)	SAC2 (द्वितीय तल , मेगा मेस)	रुचा एवं रुंजी कविश्वरकविश्वर, आर्ट डायरेक्टर्स, रुंजी डेकोर स्टुडिओ
प्रोफ्शनल ट्रेनिंग (A6)	यांत्रिक + धातुकी अभि. स्मार्ट क्लासरूम्स	विद्येश तुपकरी, आशा शर्मा, 25 वर्ष का इंडस्ट्री अनुभव, क्रिएट प्रॉडक्ट्स, बंगलोर
हार्टफुलनेस	SAC1, SAC2,	नागपुर हार्टफुलनेस संस्थान

हीरक महोत्सव उद्घाटन

गणतंत्र दिवस

मातृभाषा दिवस

महिला दिवस

आंबेडकर जयंती

ॲन्टी टोबॅको डे

स्वतंत्रता दिवस

राष्ट्रीय एकता दिवस

राष्ट्रीय अविष्कार अभियान

संविधान दिवस

दीक्षांत समारोह

कुतुहल

खेल प्रतियोगिता

इंडक्शन प्रोग्राम

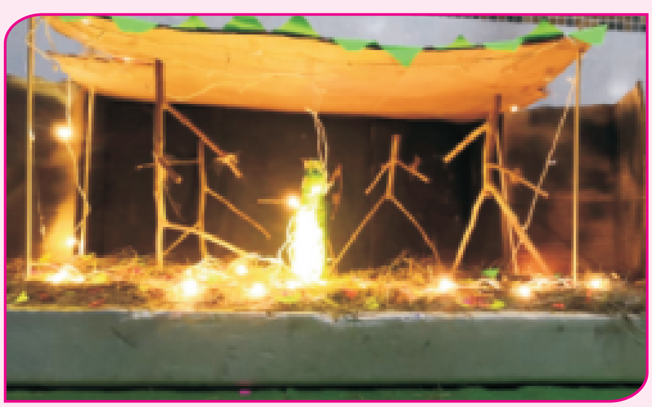

सेवानिवृत्त कर्मचारी

श्रीमती उषा पाटील – 31.01.2019

श्री व्ही. ए. म्हैसालकर – 28.02.2019

श्री राजबाहोर चौबे – 28.02.2019

श्री बी. आर. भिवगडे – 31.05.2019

श्री एस. के. भोयर – 30.06.2019

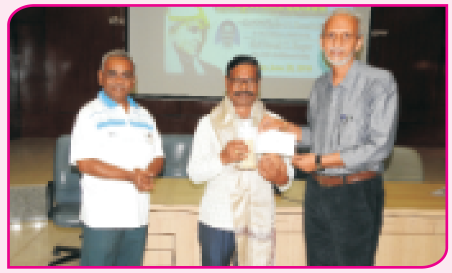

श्री एन. एन. भोंदले – 30.06.2019

टेकचंद एफ. गौर – 31.07.2019

डॉ. एस. जुनघरे – 31.07.2019

श्री पी. ओ. गायकवाड – 30.09.2019

बळीराम भोयर – 31.10.2019

राहुल दुपारे – 31.10.2019

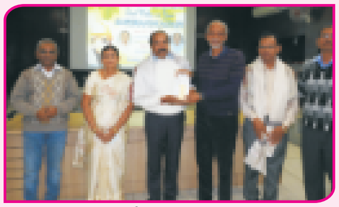

एस. टी. झाडे – 31.12.2019

अनिकेत शंभरकर – 31.12.2019

विनम्र श्रद्धांजली

स्व. श्री नरेंद्र मिश्रा

जाने वाले कभी कहीं,
दोस्तो, जाते ही नहीं!
हमारे पास ईर्द-गिर्दही
रहते है वो, बस यही!
मत समझो की छोड हमें, और
चले गए वो बिछडके कहीं!
वो रहे ना रहे है उनकी,
निशानियां बस यहीं कहीं!

यकीन मान लो वो आ गए,
संतान के रूप में बस यहीं!
अंश उनका अपने बच्चो में,
क्या कभी तुमने देखा नहीं ?
अगर मेरी ये बात तुम्हे,
लगती है बिल्कूल सही!
जानेवाले हममें ही रहते,
बनके वो कलम और हम बही!

प्रा. किशोर जोगलेकर

स्व. श्री अनिकेत देशमुख

साहित्य दर्पण

विषयानुक्रम | पृष्ठ क्र.

विषयानुक्रम	पृष्ठ क्र.
खुश रहने के मंत्र	32
प्रगत भारत में महिलाओं का योगदान	33
भारत में महिलाओं की स्थिती और मेरे बिचार	34
भारत की राजकारणी महिलाएँ	36
क्या कलम 370 हटाने से भारत के नंदनवन में खुशहाली आएगी?	43
चंद्रयान से उभरी हुई भारत की प्रतिमा	45
महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण...	48
स्वस्थ्य महिला - स्वस्थ्य परिवार	49
आधुनिक नारी	50
अचर्चित उर्मिला	51
अहिल्याबाई होलकर-एक अद्भूत...	52
सिंधुताई सपकाल	54
सावित्रीबाई फुले	56
इंदिरा गांधी	57
पदम्श्री कमलाबाई होस्पेट	60
Banff इंटरनेशनल रिसर्च स्टेशन	61
डॉ. आनंदीबाई जोशी-एक प्रेरणादायी व्यक्तित्व	63
दुनिया पर छाई भारत की 'कल्पना'	64
शतरंज : हम्पी कोनेरू	66
डॉ. सुधा नारायण मूर्ति	69
रॅचेल थॉमस	71
क्रिकेट : अंजुम चोपड़ा	72
डॉ. मंदाकिनी आमटे	75
रिश्तों को कैसे सवारे?	77
किरण बेदी-प्रथम महिला...	79
मार्मिक कहानी	81
सुमन कल्याणपुर : इक जुर्म...	84
मेग्नीफिसेंट मैरी	86
क्रूगर नेशनल पार्क, दक्षिण अफ्रीका	87
प्रतिक्रियाएँ	90

संस्थान का यह पंद्रहवाँ अंक महिला विशेष होने के कारण 'नारी शक्ति' को समर्पित है।

नारी शक्ति है, सम्मान है
नारी गौरव है, अभिमान है
नारी ने ही ये रचा विधान है
हमारा नतमस्तक इसको प्रणाम है
नारी शक्ति..................

ये लक्ष्मी, ये सरस्वती
यही दुर्गा का अवतार है
ये अनुसूया, यही सावित्री
यही काली रूप का वैभव है
नारी शक्ति................

लक्ष्मीबाई जैसा साहस इसमें
मीराबाई जैसा प्रेम है
पद्मावती जैसा जौहर इसमें
दुर्गावती जैसा पराक्रम है
नारी शक्ति..................

कदम से कदम मिलाकर चलना
सैन्य, पराक्रम में पीछे न हटना
बुलंद हौसलों का परिचय देकर
अरुणिमा, नीरजा का हो रहा गान है
नारी शक्ति........................

यही इंदिरा, यही सरोजनी
यही टेरेसा जैसी नारी हैं
बेदी जैसी कड़क, सुष्मिता जैसी प्यारी है
नारी शक्ति.....................

सुर सरगम का सार लता का
सुंदरता में ऐश्वर्या है
छुआ आसमान को ऐसी आयशा
खेल के मैदान में मिताली है
नारी शक्ति..................

यही पालन हार हमारी
यही हमारी जननी है
इसका कदम है विकास के पथ में
यही हमारी धन की देवी है
नारी शक्ति.................

– लवविवेक मौर्या
(लखीमपुर खीरी)

खुश रहने के मंत्र

श्रीमती अश्विनी चचाणे
हेल्थ सेंटर

अगर आपके दोस्त अक्सर आपसे यही कहते हैं कि आप चुप-चुप रहने लगे है, लोगों के बीच भी आप अकेलापन महसूस करते है, अगर आप को लग रहा है की आप खुश नहीं रह सकते तो ऐसा बिलकुल नहीं है । ये माना जा सकता है कि भागमभाग भरी लाइफ में खुद के लिए समय निकालना है, पर यकीन मानिए ये नामुमकीन नहीं इसलिए आपको कुछ मंत्र बता रही हूँ वो आपके जीवन में लाईफ और खुश रहिए।

पहिला मंत्र - बाते भुलना सीखे : बहोत बार जींदगी जीते व्यक्त ऐसा होता है कि हमारे करीबी रिश्तेदार, दोस्त इनकी छोटी छोटी बाते दिलपे लगा लेते है, वो ही बात को चार बार सोचकर अपना मन उदास कर लेते है। और उस इंसान के लिए गलत भावना मन में रखकर अपना मन भी खराब करते है । इसलिए छोटी छोटी बात को भुल जाना सीखीए। भुल जाने के वजह से आपका दिल भी खुश रहेगा और रिश्ते भी अच्छे रहेंगे।

दुसरा मंत्र - बहुत सारे दोस्त : ऐसा कहां जाता है कि भाई-बहन, माँ-बाप यह रिश्ते हमें भगवान के घर से मिलते है। पर दोस्ती वहं रिश्ता है जो हम खुद बनाते है। इसलिए इतने दोस्त बनाईए और उनसे बहोत बाते करीई। इस वजह से आपका दिल हलका होगा और आप खुश रहेंगे। अपने सुख दु:ख में दोस्तों का साथ लिजिए और उनके सुख दु:ख में आप उन्हें साथ दिजीए देखीए आप खुद को कभी अकेला महसूस नहीं करेंगे और सदा खुश रहेंगे।

तिसरा मंत्र - स्वास्थ्य : जैसा तन वैसा मन, मेरा ऐसा मानना है कि जब आप का स्वास्थ्य ठीक रहेगा तो आपका मन भी ठीक रहेगा। आपका स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए आप योगा करें, सुबह घुमने जाए, हेल्दी खाना खाए इससे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा तो मन भी खुश रहेगा। बीमार इंसान को आप खुश रहने बोलो गे तो वह खुश थोडी रहेगा इसलिए अच्छा स्वास्थ्य बहुत जरूरी है।

चौथ मंत्र - परिवार : परिवार हमारी ताकत है । हमें अक्सर ये देखने में आता है की कई लोग काम में और दोस्तों में इतने उलझे होते है की परिवार को वक्त ही नहीं दे पाते। आप जिनता ज्यादा से ज्यादा वक्त अपने परिवार को देंगे उतनी खुशी अपने दामन में पाऐंगे। परिवार में आप जिससे ज्यादा सहज है उसे अपने दिल की बात बता के दिल हल्का कर सकते है और खुश रह सकते हैं। एखादा दिन आप अपने परिवार के साथ घुम के आईए देखिए आपका दिल कैसे खुश हो जाएगा, इसलिए परिवार यह भी हमारे खुशी का मंत्र है।

पाचवा मंत्र - समय : खुश रहने के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है समय की अहमियत इसलिए जिनका काम आप उसी समय करेंगे तो काम का दबाव नहीं बढेंगा और काम समय पर पुरा होने के वजह से आप खुश रहेंगे। काम को टाईम टेबल बनाई ये इससे आप का काम समय पर पुरा होंगा और आप दिल से ही खुश महसूस करेंगे।

छठवां मंत्र - स्पष्ट शब्द में बोलना : आप काम पर रहे, घर रहे या दोस्तों के बीच रहें जो बात आपके दिल को चुभी हो वहं स्पष्ट रूप से बोलना सीखिऐ। स्पष्ट रूप से बोलने की वजह से आप के दिल पे किसी बात का बोझ नहीं रहेगा और आप खुश रहेंगे।

सातवां मंत्र - ना कहना सीखे : बहुत बार काम करने की जगह पर दोस्तों के बीच घर पर हम किसी काम के लिए आगे वाला क्या सोचेगा करके हम ना नहीं कर पाते है। और जो अपने काम नहीं होते है वहं भी अपने पर लेकर टेन्शन में आते है। इसकी बजाए आ को काम करना नहीं जमेगा उसे स्पष्ट रूप से नहीं कहना सीखे। दिल पे कोई बोझ नहीं रहेगा तो आप खुश रहेंगे।

आशा है आप को मेरे दिए हुए मंत्र पसंद आएगे और ये मंत्र अपने जिंदगी में लाकर आप खुश रहेंगे।

धन्यवाद ।

प्रगत भारत में महिलाओं का योगदान

डॉ. अश्विनी मिरजकर
सहा. प्रोफेसर
सिविल विभाग, वी.एन.आय.टी.

आज मेरे भारत में महिलाओं के योगदान के बारे में लिखने का अवसर मिला इसिलिए में बहुत आनंदित हूँ। 'मिस वर्ल्ड' मानुषी छिल्लर जिस वजह से यह किताब जिती, उसका अगर उत्तर याद करें की किस काम के लिए सबसे ज्यादा तनखा मिलनी चाहिए, तो मानुषी का उत्तर था ''माँ को, क्योंकि किसी भी तरह की अपेक्षा न रखते हुएँ, बेटा या बेटी को वह इस तरह पालती है उसका कोई मुल्य नहीं, यह बात छोड़ने का कारण यह है कि आज वर्तमान स्थिती में भारत के इस प्रगतिशिल होने के पिछे एक माँ है, क्योंकि राजकारण हो, समाजकारण हो, क्रिकेट हो या सौंदर्य स्पर्धा हो, यहाँ तक की रिअॅलिटी शो कौन बनेगा करोडपती में भी सबसे जादा अपने बौधीक जानकारी होने से रकम जो करोडो में है वह भी जितनेवाली महिला ही है। महिलाओं की स्थिति में लगातार परिवर्तन को देश में महिलाओं द्वारा हासिल उपलब्धियाँ जैसे हमारी पूर्व राष्ट्रपती 'प्रतिभाताई पाटील', स्पोर्टस मे पी.टी. उषा, सायना नेहवाल, पी.व्ही. सिंधु, बबीता फोगट और हाल ही में लगातार गोल्ड मेडल जीत के भारत का नाम रोशन करने वाली 'हीमा दास' इनका भारत के प्रति योगदान सराहनीय है।

यहाँ बहुत आदरपूर्वक एक नाम में लेना चाहूँगी वो है, 'सिंधुताई सपकाल' जो पुणे, महाराष्ट्र में आश्रम चलाती है, खुद पर जो बिती उस पर रोते न बैठकर उन्होंने हिम्मत जुटाकर आज एक ऐसा मकाम हासिल किया है कि कोई भी छोटा बच्चा जिसका कोई नहीं, उसके लिए सिंधूताई के घर/आश्रम के दरवाजे हमेशा ही खुले है।

आज विभिन्न क्षेत्रों में महिलाएँ इस तरह काम कर रही है जो सम्मान, प्रशंसा तथा उनके प्रति आदर के पात्र है। अगर सर्वेक्षण किया जाएँ, तो यह निश्चित है। आज सबसे ज्यादा स्कुलों में पढ़ाने वाली महिलाएँ ही है ।

आज भारत 'नासा' से बराबरी कर सकता है जिसका श्रेय हमारे 'इस्त्रो' के महिला वैज्ञानिकों को जाता है, जो दिन रात मेहनत कर अपने देश के लिए काम कर रही है। प्रक्षेपास्त्र अग्नि-5 के सफल परिक्षण के बाद महिला वैज्ञानिक टेसी थॉमस को अग्नि -पुत्री नाम से जाना जाता है।

राजनितीक और सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में महिलाओं ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है जैसे की विजयालक्ष्मी पंडीत ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारत का प्रतिनिधित्व किया था तथा वे संयुक्त राष्ट्र महासभा की सदस्य भी रही। देश की प्रथम महिला राज्यपाल उत्तरप्रदेश से सरोजिनी नायडू देश की किसी राज्य विधयिकी की प्रथम महिला विधायिका डॉ. एस. मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी, भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष-सरोजिनी नायडू, भारत की प्रथम क्रांतिकारी महिला मैडम कामा, प्रथम भारतीय महिला क्रिकेट के टिम की कप्तान शांता रंगास्वामी, भारत की प्रथम महिला अध्यक्ष-एनी बेझंट और बहुत उदाहरण है जो इतिहास गवाह के इन नारियों का भारत के निर्माण में बहुमुल्य योगदान है।

जब हम बात करते है शिक्षित महिला की, तब नाम सामने आता है 'सावित्रिबाई फुले' का जिन्हों ने स्त्री शिक्षित होने के लिए आगे आकर कई बाजू से विरोध होने के बावजूद भी अपना मक्सद पुरा किया और महिलाओं के शिक्षित होने के लिए अपना बहुमोल योगदान दिया और इस बात के लिए आग्रही रही। बडे नाम तो याद रहते है लेकिन आज यह स्थिती है कई छोटे-मोटे कारखाने जो महिला बचत गट संभालते है, जिनकी वजह से आज भारत के परंपरागत चीजे देश के बाहर अपना अस्तित्व बनाएँ है, ऐसे सारी नारी जाती को मेरा शत शत प्रणाम और नमन। क्योंकी भारत की प्रगती में इन उसका योगदान बहुत महत्वपूर्ण तथा प्रशंसनिय है।

भारत में महिलाओं की स्थिती और मेरे बिचार

शीला श्रीवास्तव

नारी : आधी नहीं सारी की सारी

आमर्त्स सेन कहते है कि जब भी वे महिलाओं के कल्याण का मुद्दा उठाते है उन्हें हिंदुस्तान मे विदेशी सोच से ग्रस्त व्यक्ति करार दिया जाता है। ''मुझे बताया जाता है कि समानता के बारे में हिंदुस्तानी महिलाओं के विचार ऐसे नहीं है। पर वे कहना चाहूँगा कि अगर वे ऐसे नहीं सोचती तो उन्हें ऐसा सोचने के वास्तविक मौके मुहैया करवाए जाने चाहिए।''

लेकिन मैं तथा आज की महिलाए जो शिक्षित हैं, वे सभी महिलाएं ऐसा सोचती है कि समानता का अधिकार सभी महिलाओं को मिलना चाहिए, तथा यह सोच बहुत जरूरी है।

हमारे भारत देश में गरीबी और भूखमरी की समस्या कुछ अधिक ही है। भूख और गरीबी से पुरूषों की तुलना में महिलाओं का वास्ता कही अधिक है। अगर महिलाएं शिक्षित होगी तो वह महिलाएं अपना तथा अपने परिवार को अच्छी जीन्दगी सुखी जीवन दे सकती है। पुरूषों के साथ-साथ महिलाओं को शिक्षित करना बहुत जरूरी है। लड़कों की शिक्षा जितनी जरूरी है, उतनी ही लड़कियों की शिक्षा भी जरूरी है।

जब मैं 8 वाँ वर्ग में पढ़ती थी, उस समय मेरे यहाँ घरेलु काम करने के लिए एक विधवा महिला आती थी, उसके साथ एक छोटी सी उसकी बेटी आती थी। वह लड़की करीब 5 वर्ष की रही होगी। मैं उसे पढ़ाती थी। तथा वह मन लगा कर पढ़ती थी। करीब एक साल मैं उसे पढ़ाई और वह कुछ बड़ी हो गई, वह समझदार भी हो गई (और वह 6 साल की हो गई) उसका नाम कुलवन्तिया था, वह अच्छी तरह पढ़ना – लिखना सिख (जान) गई थी।

मुझे भी पढ़ने की प्रबल ईच्छा थी, इसलिए मैं मन लगाकर पढ़ाई करने लगी थी, लेकिन उस समय समाज और गाँव के लोगों की ऐसी सोच थी कि अगर लड़कियाँ अधिक पढ़ जायगी तो पढ़ी लड़कियों की शादी के लिये वर ढुढ़ने में बहुत परेशानी होगी क्योंकि शिक्षित लड़कियों के लिये वर ज्यादा शिक्षित खोजना पड़ता था। हमारे समाज मे दहेज प्रथा एक अभिशाप की तरह थी यह एक बहुत बड़ी समस्या थी। लड़कियों की शादी में लड़कों को या लड़कों के घर वालों को बहुत बड़ी रकम देनी पड़ती थी। हालांकि अब धीरे-धीरे यह कुप्रथा कम हो रही है। मै बी.ए. की पढ़ाई पूरी की, उसके बाद मेरी शादी हो गई तथा शादी के बाद बच्चों की देख-रेख और लालन-पालन में व्यस्त हो गई, पर मेरे पढ़ने का यह फायदा हुआ कि अब मेरे बच्चे पढ-लिखकर उच्च पद पर हैं। मेरे पति एक उच्च पदाधिकारी थे, जो अब सेवानिवृत्त हो गये हैं। अब हम दोंनों अपने बच्चों के साथ सुखी-जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इसलिये मैं शिक्षा का महत्व समझती हूँ।

भारत या दुनिया के किसी भी देश में जहाँ भूखमरी भी एक प्रमुख सामाजिक मुद्दा है, भूख का स्थायीकरण एक सीमा तक महिलाओं के संमतिकरार परतंत्रता और अधिकार हीनता से जुड़ा है। इसके अलावा परंपराओं धार्मिक व्यवहारों तथा धार्मिक शिक्षा-शैक्षिक और कानूनी व्यवस्था तथा परिवारों में मलिाओं का दमन कही न कही इस समस्या को और भी बढ़ाता है।

विड़बना यह है कि भूख खत्म करने के ज्यादातर मूलभुत काम महिलाओं के जिम्मे है तथा पारंपारिक तौर पर परिवार की खुशहाली का प्राथमिक दायित्व महिलाओं के जिम्मे हैं। इसके बावजूद इस जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए जरूरी संसाधनों तक उनकी पहुँच नहीं हैं। महिलाओं को बाकायदा नकारा जाता है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, सुविधायें, काम की ट्रेनिंग और परिवार नियोजित कर पाने की स्वतंत्रता शामिल है।

महिलाओं के अदृश्य काम की पहचान न के बराबर है । बहुत से लोग इस तथ्य को समपोषित करते है कि पुरूषों के ऊपर महिलाओं की आर्थिक निरमर्ता परिवार में उनकी स्थिति को प्रभावित करती है। आम उत्पादक गतिविधियों में इजाफा होगा बल्कि जेंडरगत

असमानता में भी कमी होगी। यह मुद्दा भारत के लिये विशेष महत्व का है क्योंकि देश का आर्थिक अध्ययन कहती है कि आर्थिक उन्नति में महिलाओं की भागीदारी बहुत कम है। इस अंडर रिपोर्टिंग की पीछे की सोच यही है कि महिलाओं का काम आर्थिक रूप से उत्पादक नहीं हैं।

असंगठित क्षेत्रों में महिलाएँ और स्व-रोजगार महिलाओं पर राष्ट्रीय आयोग की रिर्पोट में एक राज्य के समाज कल्याण विभाग के निर्देशक ने कहा कि ग्रामिण क्षेत्रों से महिलाएं जो पशुपालन, जंगल से इंधन लाना, दूध बेचना, मछली पकड़कर उसे बाजार में बेचना इत्यादि काम करती हैं, पर समाज उन महिलाओं को श्रमिक की गीनती में नहीं रखता है, क्या घर के काम और बच्चों का पालन-पोषण काम नहीं हैं? अगर यही काम किसी अन्य महिला से करवाया जाय तो उसे उचित परिश्रमिक दिया जाता है। और वह महिला श्रमिक की गीनती में आती है।

महिलाएं अगर शिक्षित हो जाये और सही ढ़ंग से कुटना-पीसना, बागवानी, कुक्कुट पालन, अनाज के रख-रखाव, उनके सभी काम को रोजगार की तरह करें तो ग्रामिण क्षेत्र में भी महिलाये आर्थिक उन्नति प्राप्त कर सकती हैं, तथा महिलाओं का भी काम आर्थिक रूप से उत्पादक ही माना जाएगा। इससे महिलाओं की जीन्दगी सुखी तथा खुशहाल होगी।

अब इससे यही पता चलता है कि महिलाओं को सबसे जरूरी है शिक्षित होना चाहे किसी क्षेत्र में हो। शिक्षित नहीं होने के कारण महिलाओं को नीरीह और उपेक्षित समझा जाता है, महिलाओं की निरक्षरता अभी भी हमारे देश में है। निरक्षरता हमारे देश में बहुत बड़ा अभिशाप है। अगर कोइ मां पढ़ी-लिखी नहीं होगी तो वह अपने बच्चों का सही मार्गदर्शन नहीं कर पाएगी, तथा बच्चे योग्य नहीं बन पायेंगे। और बच्चे गलत रास्ते पर चले जायेगे जैसे बुरी संगत के कारण वे शराबी, चोर, या काम नहीं करने लगेगें। माँ अपने बच्चों के लिये पहली पाठशाला होती है, तथा बच्चें अपनी माँ से सबसे पहले शिक्षा प्राप्त करते हैं, बच्चों ही देश के भावी भविष्य और करनघार है।

पर अब कुछ महिलाये साक्षर और बहुत शिक्षित हो रही हैं। अब महिलाये शिक्षा पाकर बहुत अच्छे कार्य कर रही है, जैसे वैज्ञानिक, नाविक, पायलट, सेना में भर्ति हो रही है और बड़े-बड़े पद पर कार्य कर रही है। महिलायें हर क्षेत्र में पुरूषों से कंधा से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। ऐसे ही गांव समाज सभी जगह की महिलाओं को साक्षर बनना चाहिये। महिलायें शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़े यही मेरे विचार और चाहत है कि हमारे देश में सभी महिलायें सर उठ कर चल सके ताकि उनको कोई नीरीह या कमजोर न समझे। अब हमारे देश में बलात्कार और महिलाओं को जलाया न जाय तथा पूर्रा शक्तिशाली बने हमारे देश में नारी की पूजा होती है, तथा नारी जननी है, वह महान हैं।

आदर्श विद्यार्थी के गुण

श्रीमती प्रतिभा पौनीकर
संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग

वैसे तो विद्यार्थी कई प्रकार के होते है, जैसे - कुछ पास होने के लिए पढ़ते है, तो कई भविष्य में अच्छी नौकरी पाने के लिए कोई अपने माता पिता के सपने पूरे करने के लिए पढ़ाई करते हैं और कुछ विद्यार्थी तो विद्यालय को अपने दोस्तों से मिलने और मौज मस्ती करने की जगह मानकर वहाँ टाइम पास करने के लिए जाते है। परंतु इनमें से आदर्श विद्यार्थी के गुण किसमें है, इसका पता केवल उनकी अंक सुचि देखकर नहीं लगाया जा सकता क्योंकि यह जरूरी नहीं कि जो विद्यार्थी अच्छे नम्बरों से पास हो, वह आदर्श विद्यार्थी भी हो औसत अंकों के साथ पास होने वाला विद्यार्थी भी आदर्श विद्यार्थी हो सकता है।

भारत की राजकारणी महिलाएँ

राकेश विश्वकर्मा
निदेशक कार्यालय
व्ही.एन.आय.टी. नागपुर

प्रस्तावना

देश की प्रगति में नारी का बराबर का योगदान है। नारी को शक्ति का रूप कहा जाता है। पहले भी नारी पुरुषों से आगे थी और आज भी आगे है और हमेशा आगे ही रहेगी। यह उस समय की बात है जब रजिया सुलतान, चाँदबीबी, जीजाबाई, अहिल्याबाई और रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाओं का उदय हुआ, जिन्होंने पुरुष प्रधान समाज को चुनौती दी और नारीत्व का परचम फहराया। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भी ऐनी बेसेंट, सरोजिनी नायडू, विजयलक्ष्मी पंडित, आजाद हिन्द फ़ौज की कैप्टन लक्ष्मी सहगल और बेगम हजरत महल जैसी महिलाओं ने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर भाग लिया और विजय प्राप्त करके दिखाई है। बहुत सारी नारियों ने अपनी जान की परवाह ना करते हुए अपने फर्ज़ को पूरा किया है। श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा राष्ट्र को दिए जाने वाले योगदान को कोई भी नही भूल सकता, जो लम्बे समय तक भारत की प्रधानमंत्री रही।

आज महिलाएं पुरुषों से कम नहीं हैं और वे हर क्षेत्र में तरक्की कर रही हैं तथा देश के विकास में बहुत योगदान दे रही है। जब भारतीय ऋषियों ने अथर्ववेद में 'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः' (अर्थात भूमि मेरी माता है और हम इस धरा के पुत्र हैं) की प्रतिष्ठा की तभी सम्पूर्ण विश्व में नारी-महिमा का उद्घोष हो गया था। नेपोलियन बोनापार्ट ने नारी की महत्ता को बताते हुए कहा था कि -'मुझे एक योग्य माता दे दो, मैं तुमको एक योग्य राष्ट्र दूंगा।'

भारत में महिलाओं का योगदान

भारत के निर्माण में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत में महिलाएँ अब सभी तरह की गतिविधियों जैसे कि शिक्षा, राजनीति, मीडिया, कला और संस्कृति, सेवा क्षेत्र, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आदि में हिस्सा लेकर अपना योगदान दे रही हैं। इंदिरा गांधी जिन्होंने कुल मिलाकर पंद्रह वर्षों तक भारत के प्रधानमंत्री के रूप में सेवा की, दुनिया की सबसे लंबे समय तक सेवारत महिला प्रधानमंत्री हैं।

कौन भूल सकता है माता जीजाबाई को, जिसकी शिक्षा-दीक्षा ने शिवाजी को महान देशभक्त और कुशल योद्धा बनाया। कौन भूल सकता है पन्नाधाय के बलिदान को पन्नाधाय का उत्कृष्ट त्याग एवं आदर्श इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। वह उच्च कोटि की कर्तव्य परायणता थी। अपने बच्चे का बलिदान देकर राजकुमार का जीवन बचाना सामान्य कार्य नहीं। झांसी रानी के त्याग एवं बलिदान की कहानी तो भारत के घर-घर में गायी जाती है। रानी लक्ष्मीबाई, रजिया सुल्ताना, पद्मिनी और मीरा के शौर्य एवं जौहर एवं भक्ति ने मध्यकाल की विकट परिस्थितियों में भी अपनी सुकीर्ति का झण्डा फहराया। कैसे कोई स्मरण न करे उस विद्यावती को जिसका पुत्र फांसी के तख्ते पर खड़ा था और मां की आंखों में आंसू देखकर पत्रकारों ने पूछा कि एक शहीद की मां होकर आप रो रही हैं । तो विद्यावती का उत्तर था कि 'मैं अपने पुत्र की शहीदी पर नहीं रो रही, कदाचित अपनी कोख पर रो रही हूं कि काश मेरी कोख ने एक और भगत सिंह पैदा किया होता, तो मैं उसे भी देश की स्वतंत्रता के लिए समर्पित कर देती।' ऐसा था भारतीय माताओं का आदर्श। ऐसी थी उनकी राष्ट्र के प्रति निष्ठा।

भारत में नारीवादी सक्रियता ने 1970 के दशक के उत्तरार्द्ध के दौरान रफ्तार पकड़ी। महिलाओं के संगठनों को एक साथ लाने वाले पहले राष्ट्रीय स्तर के मुद्दों में से एक मथुरा बलात्कार का मामला था। एक थाने (पुलिस स्टेशन) में मथुरा नामक युवती के साथ बलात्कार के आरोपी पुलिसकर्मियों के बरी होने की घटना 1979-1980 में एक बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शनों का कारण बनी। विरोध प्रदर्शनों को राष्ट्रीय मीडिया में व्यापक रूप से कवर किया गया और सरकार को साक्ष्य अधिनियम, दंड प्रक्रिया संहिता और भारतीय दंड संहिता को संशोधित करने और हिरासत में बलात्कार की श्रेणी को शामिल करने के लिए मजबूर किया गया। महिला कार्यकर्ताएँ कन्या भ्रूण हत्या, लिंग भेद, महिला स्वास्थ्य और महिला साक्षरता जैसे मुद्दों पर एकजुट हुई। चूंकि शराब की लत को भारत में अक्सर महिलाओं के खिलाफ हिंसा

से जोड़ा जाता है, महिलाओं के कई संगठनों ने आंध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उड़ीसा, मध्य प्रदेश और अन्य राज्यों में शराब-विरोधी अभियानों की शुरुआत की। कई भारतीय मुस्लिम महिलाओं ने शरीयत कानून के तहत महिला अधिकारों के बारे में रूढिवादी नेताओं की व्याख्या पर सवाल खड़े किये और तीन तलाक की व्यवस्था की आलोचना की।

1990 के दशक में विदेशी दाता एजेंसियों से प्राप्त अनुदानों ने नई महिला-उन्मुख गैरसरकारी संगठनों (एनजीओ) के गठन को संभव बनाया। स्वयं-सहायता समूहों एवं सेल्फ इम्प्लॉयड वुमेन्स एसोसिएशन (सेवा) जैसे एनजीओ ने भारत में महिलाओं के अधिकारों के लिए एक प्रमुख भूमिका निभाई है। कई महिलाएँ स्थानीय आंदोलनों की नेताओं के रूप में उभरी हैं। उदाहरण के लिए, नर्मदा बचाओ आंदोलन की मेधा पाटकर।

भारत सरकार ने 2001 को महिलाओं के सशक्तीकरण (स्वशक्ति) वर्ष के रूप में घोषित किया था। महिलाओं के सशक्तीकरण की राष्ट्रीय नीति 2001 में पारित की गयी थी।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के एक दिन बाद, 9 मार्च 2010 को राज्यसभा ने महिला आरक्षण बिल को पारित कर दिया जिसमें संसद और राज्य की विधान सभाओं में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण की व्यवस्था है।

शीर्ष महिलाएँ जिन्होंने भारत को एक नयी दिशा दी :

आजादी से पहले और बाद में भारत को एक देश तथा समाज के रूप में आगे ले जाने में महिलाओं का अतुलनीय योगदान रहा है। महिलाओं ने सभी क्षेत्रो चाहे वो सांस्कृतिक हो, या राजनैतिक हो, या वैज्ञानिक हो, या कला से जुड़ा हो हर क्षेत्र में बढ़ चढ़ कर अपना योगदान दिया है। आजादी के बाद कुछ महिलाएँ जिन्होंने अपने क्षेत्र में भारत के समाज को एक नयी दिशा दी है वो निम्नलिखित है -

1. झांसी की रानी लक्ष्मीबाई

महारानी लक्ष्मीबाई का जन्म काशी में 19 नवंबर 1835 को हुआ। इनके पिता मोरोपंत ताम्बे चिकनाजी अप्पा के आश्रित थे। इनकी माता का नाम भागीरथी बाई था। महारानी के पितामह बलवंत राव के बाजीराव पेशवा की सेना में सेनानायक होने के कारण मोरोपंत पर भी पेशवा की कृपा रहने लगी। लक्ष्मीबाई अपने बाल्यकाल में मनुबाई के नाम से जानी जाती थीं।

एक अंग्रेज अफ़सर ने लक्ष्मीबाई के बारे में लिखा था, 'वो बहुत ही अद्भुत और बहादुर महिला थी। यह हमारी खुशकिस्मती थी कि उसके पास उसी के जैसे आदमी नहीं थे।'

2. सरोजिनी नायडू

सरोजिनी नायडू का जन्म 13 फरवरी 1879 को भारत के हैदराबाद नगर में हुआ था। सरोजिनी नायडू गाँधीजी के विचारों से प्रभावित होकर देश के लिए समर्पित हो गयीं। एक कुशल स्वतंत्रता सेनानी की भाँति उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय हर क्षेत्र में दिया। उन्होंने अनेक राष्ट्रीय आंदोलनों का नेतृत्व किया और जेल भी गयीं।

उनकी बाते खासकर महिलाओं के ह्रदय में जूनून जगाने के साथ साथ देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए प्रेरित करती थी। वे बहुभाषाविद थी और क्षेत्रानुसार अपना भाषण अंग्रेजी, हिंदी, बंगला या गुजराती में देती थीं। लंदन की सभा में अंग्रेजी में बोलकर इन्होंने वहाँ उपस्थित सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया था।

वह अपनी प्रतिभा के कारण 1925 में कानपुर में हुए कांग्रेस अधिवेशन की वे अध्यक्षा बनीं और 1932 में भारत की प्रतिनिधि बनकर दक्षिण अफ्रीका भी गईं। भारत की स्वतंत्रता के बाद वे उत्तरप्रदेश की पहली राज्यपाल बनीं। जो कि आने वाले समय में महिलाओं को प्रेरित करती रहेगी।

3. ममता बनर्जी

ममता बनर्जी का जन्म 5 जनवरी 1955, को कोलकाता, पश्चिम बंगाल में हुआ था। उनको युवा आयु में ही राज्य महिला कांग्रेस की महासचिव चुन लिया गया था। ममता बनर्जी ने कोलकाता के जादवपुर लोक सभा क्षेत्र से उन्होंने अनुभवी नेता सोमनाथ चटर्जी के खिलाफ चुनाव लड़ा और ये चुनाव जीत कर वे सबसे युवा भारतीय सांसद बन गई।

वह 1991 में पी. वी. नरसिम्हाराव की सरकार में वे मानव संसाधन, युवा कल्याण एवं खेलकूद, और महिला-बाल विकास विभाग की राज्यमंत्री भी रहीं।

कांग्रेस पार्टी से मतभेद के चलते उन्होंने आल इंडिया तृणमूल कांग्रेस की स्थापना की। उन्होंने सिंगुर में टाटा मोटर्स के द्वारा कारखाने लगाये जाने का विरोध किया। पश्चिम बंगाल सरकार के 10000 एकड़ जमीन को विशेष आर्थिक क्षेत्र बनाने के प्रस्ताव का ममता बनर्जी ने जोरदार विरोध किया। उनका यह कार्य ग्रामीण परिवेश के सैकड़ो परिवारों तथा महिलाओं, जिनकी जमीन पर यह आर्थिक क्षेत्र बनाना था, के लिए काफी महत्वपूर्ण था।

वर्तमान में वह अभी बंगाल की मुख्यमंत्री है। निम्न माध्यम वर्गीय परिवार से होने के बावजूद उन्होंने कम उम्र में कई राजनैतिक बुलंदियों को छुआ। ममता बनर्जी का एक स्वंतंत्र तथा शासख्त महिला का व्यक्तित्व है जो उनके काम करने के तरीको में भी झलकता है। उनका जीवन महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए एक आदर्श से कम नहीं है।

4. सुनीता विलियम्स

सुनीता लिन पांड्या विलियम्स का जन्म 19 सितम्बर 1965 को अमेरिका के ओहियो राज्य में यूक्लिड नगर में हुआ था। इन्होंने एक महिला अंतरिक्ष यात्री के रूप में 195 दिनों तक अंतरिक्ष में रहकर एक विश्व किर्तिमान स्थापित किया है।

सुनीता का जून 1998 में अमेरिका की अंतरिक्ष एजेंसी नासा में चयन हुआ और प्रशिक्षण शुरू हुआ। सुनीता अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के माध्यम से अंतरिक्ष जाने वाली भारतीय मूल की दूसरी महिला है। सुनीता विलियम्स ने सितंबर / अक्टूबर 2007 में भारत का दौरा भी किया।

जून, 1998 से नासा से जुड़ी सुनीता ने अभी तक कुल 30 अलग-अलग अंतरिक्ष यानों में 2770 उड़ानें भरी हैं। भारत सरकार द्वारा सुनीता को विज्ञान एवं अभियांत्रिकी के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। इसके अलावा उन्हें नेवी एंड मैरीन कॉर्प एचीवमेंट मेडल, नेवी कमेंडेशन मेडल , ह्यूमैनिटेरियन सर्विस मेडल जैसे कई सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है।

सुनीता विलियम्स महिलाओं के विज्ञान तथा तकनीकी के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए एक प्रेरणा हैं।

भारत में महिलाओं द्वारा हासिल उपलब्धियाँ एवं योगदान

- 1879: जॉन इलियट ड्रिंकवाटर बिथयून ने 1849 में बिथयून स्कूल स्थापित किया, जो 1879 में बिथयून कॉलेज बनने के साथ भारत का पहला महिला कॉलेज बन गया।
- 1883: चंद्रमुखी बसु और कादम्बिनी गांगुली ब्रिटिश साम्राज्य और भारत में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने वाली पहली महिलायें बनीं।
- 1886: कादम्बिनी गांगुली और आनंदी गोपाल जोशी पश्चिमी दवाओं में प्रशिक्षित होने वाली भारत की पहली महिलायें बनीं।
- 1905: कार चलाने वाली पहली भारतीय महिला सुज़ान आरडी टाटा थरं।

- 1916: पहला महिला विश्वविद्यालय, एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय की स्थापना समाज सुधारक धोंडो केशव कर्वे द्वारा केवल पांच छात्रों के साथ 2 जून 1916 को की गई।
- 1917: एनी बेसेंट भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली अध्यक्ष महिला बनीं।
- 1919: पंडिता रामाबाई, अपनी प्रतिष्ठित समाज सेवा के कारण ब्रिटिश राज द्वारा कैसर-ए-हिंद सम्मान प्राप्त करने वाली प्रथम भारतीय महिला बनीं।
- 1925: सरोजिनी नायडू भारतीय मूल की पहली महिला थीं जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनीं।
- 1927: अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की स्थापना की गई।
- 1944: आसिमा चटर्जी ऐसी पहली भारतीय महिला थीं जिन्हें किसी भारतीय विश्वविद्यालय द्वारा विज्ञान में डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया।
- 1947: 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता के बाद, सरोजिनी नायडू संयुक्त प्रदेशों की राज्यपाल बनीं और इस तरह वे भारत की पहली महिला राज्यपाल बनीं।
- 1951: डेक्कन एयरवेज की प्रेम माथुर प्रथम भारतीय महिला व्यावसायिक पायलट बनीं।
- 1953: विजय लक्ष्मी पंडित यूनाइटेड नेशंस जनरल एसेम्बली की पहली महिला (और पहली भारतीय) अध्यक्ष बनीं।
- 1959: अन्ना चान्डी, किसी उच्च न्यायालय (केरल उच्च न्यायालय) की पहली भारतीय महिला जज बनीं।
- 1963: सुचेता कृपलानी उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बनीं, किसी भी भारतीय राज्य में यह पद सँभालने वाली वे पहली महिला थीं।
- 1966: कैप्टेन दुर्गा बनर्जी सरकारी एयरलाइन्स, भारतीय एयरलाइंस, की पहली भारतीय महिला पायलट बनीं।
- 1966: कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने समुदाय नेतृत्व के लिए रेमन मैगसेसे पुरस्कार प्राप्त किया।
- 1966: इंदिरा गाँधी भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री बनीं।
- 1970: कमलजीत संधू एशियन गेम्स में गोल्ड जीतने वाली पहली भारतीय महिला थीं।
- 1971: भारतरत्न से सम्मानित होने वाली प्रथम महिला इंदिरा गांधी थीं।
- 1972: किरण बेदी भारतीय पुलिस सेवा (इंडियन पुलिस सर्विस) में भर्ती होने वाली पहली महिला थीं।
- 1979: मदर टेरेसा ने नोबेल शान्ति पुरस्कार प्राप्त किया और यह सम्मान प्राप्त करने वाली प्रथम भारतीय महिला नागरिक बनीं।
- 1984: 23 मई को, बचेन्द्री पाल माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला बनीं।
- 1989: न्यायमूर्ति एम. फातिमा बीवी भारत के उच्चतम न्यायालय की पहली महिला जज बनीं।
- 1997: कल्पना चावला, भारत में जन्मी ऐसी प्रथम महिला थीं जो अंतरिक्ष में गयीं।
- 1992: प्रिया झिंगन भारतीय थलसेना में भर्ती होने वाली पहली महिला कैडेट थीं (6 मार्च 1993 को उन्हें कमीशन किया गया)
- 1994: हरिता कौर देओल भारतीय वायु सेना में अकेले जहाज उड़ाने वाली पहली भारतीय महिला पायलट बनी।
- 2000: कर्णम मल्लेश्वरी ओलिंपिक में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं (सिडनी में 2000 के समर ओलिंपिक में कांस्य पदक)
- 2002: लक्ष्मी सहगल भारतीय राष्ट्रपति पद के लिए खड़ी होने वाली प्रथम भारतीय महिला बनीं।
- 2004: पुनीता अरोड़ा, भारतीय थलसेना में लेफ्टिनेंट जनरल के सर्वोच्च पद तक पहुँचने वाली प्रथम भारतीय महिला बनीं।

- 2007: प्रतिभा पाटिल भारत की प्रथम भारतीय महिला राष्ट्रपति बनीं।
- 2009: मीरा कुमार भारतीय संसद के निचले सदन, लोक सभा की पहली महिला अध्यक्ष बनीं।
- 2016: पी वी सिंधु ने रियो ओलंपिक में रजत पदक जीतकर इतिहास रचा।
- 2019: भारतीय बैडमिंटन स्टार पी.वी. सिंधु ने बीडब्ल्यूएफ बैडमिंटन विश्व चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचा।

हर क्षेत्र में आगे आ रही हैं महिलाएं

आज मीडिया, पत्रकारिता एवं जनसंचार के क्षेत्र में भी महिलाओं का वर्चस्व कायम है। सेना, वायुयान उड़ाना, पर्वतारोहण आदि विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं ने अपनी भागीदारी करके लैंगिक असमानता को दूर कर दिखाया है। शिक्षा, विज्ञान, खेल-कूद, व्यवसाय, सूचना-प्रौद्योगिकी, चिकित्सा आदि सभी क्षेत्रों में महिलाएँ पुरुषों से अधिक योग्य सिद्ध हो रही हैं। अत: देश के विकास में महिलाओं का योगदान काफी अहम है।

खेती में पुरुषों से ज्यादा कार्य करती हैं महिलाएँ

महिलाएँ खेती का आधार हैं। वो हल चलाती हैं, वो निराई करती हैं, फसल बोती हैं और उसे बाजार तक बेचने जाती हैं। महिलाएँ सिर्फ घर ही नहीं, भारत की जीडीपी में सबसे बड़ा योगदान करने वाले कृषि क्षेत्र की धुरी हैं।

महिला किसान अब सिर्फ पिता या पति की सहयोगी नहीं बल्कि घर की कमाऊ सदस्य हैं। ये अपने परिवार की मुखिया हैं, गाँव के विकास की धुरी हैं, ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं और महिला सशक्तिकरण की जीती जागती मिसाल हैं।

रांची जिला मुख्यालय से लगभग 60 किलोमीटर दूर सिल्ली ब्लॉक के ब्राह्मनी गाँव की प्रभा देवी अपने आलू के खेत में काम करते हुए बताती हैं, 'रसायनिक तरीके से उगाई गई चीजें चमकदार होती हैं, एक तरह की होती है, लोग भी उन्हें खरीदते हैं, लेकिन वो नहीं जानते है कि उन्हें कैसे उगाया गया है। 'उन्होंने आत्मविश्वास के साथ कहा, ' गाँव में जितने भी किसान हैं उन्हें हम बताते हैं कि वो अपने खेतों में रासायनिक खाद का प्रयोग बिलकुल न करें। क्योंकि इससे जमीन और हमारा स्वास्थ्य दोनों खराब हो रहे हैं।' ग्रामीण क्षेत्र से लेकर शहरी क्षेत्र तक महिलाओं ने समाज, राष्ट्र के विकास में महतवपूर्ण योगदान दिया है। आज भी देश की लगभग 65 से 70 फीसदी आबादी गांवों में निवास करती है और ग्रामीण क्षेत्र का मुख्य कार्य कृषि है। ग्रामीण क्षेत्र में कृषि से लेकर, मछली पालन, पशुपालन, चाय के बागान जैसे महत्वपूर्ण कार्यों में महिलाओं का योगदान पुरुषों के अपेक्षा ज्यादा है।

कृषि क्षेत्र में कुल श्रम की 60 से 80 फीसदी तक हिस्सेदारी महिलाओं की होती है। फूड एंड एग्रीकल्चर आर्गनाइजेशन (एफएओ) के एक अध्ययन से पता चला है कि हिमालय क्षेत्र में प्रति हैक्टेयर प्रति वर्ष एक पुरुष औसतन 1212 घंटे और एक महिला औसतन 3485 घंटे कार्य करती है। कृषि कार्यों के साथ ही महिलाएँ मछली पालन, कृषि वानिकी और पशु पालन में भी योगदान दे रही हैं। महिलाओं की यह लगन और मेहनत गरीबी उन्मूलन में उनके योगदान को साफ तौर पर दर्शाता है।

ग्रामीण समुदाय को रोजगार देने वाले राष्ट्रीय कार्यक्रम मनरेगा में पुरूषों की बजाए महिलाएँ ज्यादा तादाद में कार्य कर रही हैं। चालू वित्तीय वर्ष में अक्टूबर तक महात्मा गांधी ग्रामीण रोजगार गारंटी कानून में महिलाओं ने 50 प्रतिशत से अधिक रोजगार प्राप्त किया।

देश में 90 प्रतिशत महिला श्रमिक या तो खेतिहर मजदूर हैं या कृषक हैं। उनके द्वारा किए गए कार्य में से अधिकांश का भुगतान भी नहीं होता क्योंकि वे अपने ही खेतों में कार्य करती हैं। मनरेगा ने इस स्थिति को बदला है। अब महिलाओं को भुगतान न किए जाने वाले कार्य जैसे भूमि का समतलीकरण और अपने ही खेतों में तालाब खोदने के लिए भी भुगतान किया जाता है।

पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं का योगदान

पर्यावरण के संरक्षण में भारतीय महिलाओं की महती भूमिका है। पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन में महिलाओं की भूमिका को अलग-अलग विद्वानों ने परिभाषित किया है। कार्ल मार्क्स के अनुसार 'कोई भी बड़ा सामाजिक परिवर्तन महिलाओं के बिना नहीं हो सकता

है।' कोफी अन्नान के अनुसार इस ग्रह का भविष्य महिलाओं पर निर्भर है। रियो डिक्लेरेशन में माना गया है कि पर्यावरण प्रबन्धन एवं विकास में महिलाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। सतत विकास हेतु महिलाओं की पूर्ण भागीदारी आवश्यक है।

भारतीय सन्दर्भ में यदि विवेचना की जाय तो भारतीय महिलाएँ वैदिक काल से ही पर्यावरण संरक्षण की पक्षधर रही हैं। हर भारतीय घर में तुलसी, केले का पौधा होना, उनका पूजन हमारे पर्यावरण से जुड़ाव को ही परिलक्षित करता है। प्रातः काल को सूर्य अर्घ्य देना, चन्द्रमा का पूजन, जल का पूजन, भूमि पूजन सहित पर्यावरण के प्रत्येक अजैविक व जैविक घटक के प्रति सम्मान का सूचक है। बदलते सामाजिक मूल्य, घटते मानवीय मूल्य, वैश्वीकरण एवं आधुनिकता की आड़ में हम पर्यावरण को निरन्तर प्रदूषित करते जा रहे हैं।

प्राचीन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण के प्रति हमारे संस्कारों को आधुनिक समाज ने रुढिवादिता कह कर हमें पर्यावरण संरक्षण से दूर कर दिया है। किन्तु आज पुनः हमें अपनी संस्कृति की ओर लौटकर पर्यावरण को संरक्षित करना होगा।

भारतीय महिलाएँ इस दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती आ रही हैं। पर्यावरण संरक्षण में भारतीय महिलाओं ने सदैव ही योगदान दिया है। जहाँ भी पर्यावरण को हानि पहुँचाने का कार्य हुआ है, उसका विरोध हमारी पर्यावरणविद महिलाओं सहित सभी ने किया है। भारतीय इतिहास में ऐसे कई पर्यावरण संरक्षण आन्दोलन हुए हैं जिनकी प्रणेता महिलाएँ रही हैं। उनमें से कुछ प्रमुख हैं।

देश में हैं 14 फीसदी महिला कारोबार

भारत में आज भी महिलाएँ पुरुषों के मुकाबले कुछ मामलों में काफी पिछड़ी हैं। भारत का केवल 14 फीसदी कारोबार महिला उद्यमी संभाल रही हैं। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (एनएसएसओ) के छठे आर्थिक जनगणना के आंकड़ों के मुताबिक भारत में कुल 5.85 करोड़ उद्यमी हैं, जिनमें से 80.5 लाख महिला उद्यमी हैं, जो 13480000 लोगों को रोजगार मुहैया करा रही हैं। जिन कारोबारी क्षेत्रों को महिलाएं संभाल रही हैं, उनमें फुटपाथ की दुकान से लेकर वेंचर फंड प्राप्त नए स्टार्ट-अप तक शामिल है।

दक्षिण राज्यों में है बेहतर स्थिति

आकंड़ों से पता चलता है कि दक्षिण भारत में महिला उद्यमियों के लिए ज्यादा सहूलियत होती है। दक्षिणी राज्यों ने इस मामले में नेतृत्व किया है और सामाजिक नजरिया बेहद महत्वपूर्ण है। तमिलनाडु में 13.5 फीसदी कारोबार (10.8 लाख) महिलाएं संभाल रही हैं। जो देश के किसी भी अन्य राज्य से अधिक है। उसके बाद केरल में 9.1 लाख और आंध्र प्रदेश में 5.6 लाख महिला कारोबारी हैं।

महिलाओं द्वारा चलाए जा रहे 82.19 फीसदी कारोबार लघु उद्योग हैं और जिनमें कम से कम एक कर्मचारी काम करता है। महिलाओं द्वारा चलाए जा रहे कारोबार में 79 फीसदी स्ववित्तपोषित हैं। केवल 4.4 फीसदी महिला कारोबारियों ने किसी वित्तीय संस्था से ऋण लिया है या फिर सरकार से किसी प्रकार की मदद प्राप्त की है। महिला उद्यमियों में 60 फीसदी वंचित समुदाय से आती हैं। महिलाओं द्वारा चलाए जा रहे कारोबार के 60 फीसदी (48.1 लाख) कारोबार अनुसूचित जाति/जनजाति और अन्य पिछड़े वर्ग की महिलाओं द्वारा चलाए जा रहे हैं।

राष्ट्र के समग्र विकास तथा उसके निर्माण में महिलाओं का लेखा-जोखा और उनके योगदान का दायरा असीमित है तथापि देश के चहुंमुखी विकास तथा समाज में अपनी भागीदारी को उसने सशक्त ढंग से पूरा किया है। अपने अस्तित्त्व की स्वतंत्रता क़ायम रखते हुए वह पुरुषों से भी चार क़दम आगे निकल गई हैं। संकीर्णता, जात-पात, धार्मिक कट्टरता, भेदभाव, मानसिक गुलामी की ज़ंजीरों को तोड़कर महिलाओं ने देश को एक नई सोच, नया विचार प्रदान किया है।

भारतीय लोकतंत्र में महिलाओं की भूमिका

21 वीं सदी शुरुआत से महिलाओं कि रही है। इन सालों में महिलाओं का भारत कि आर्थिक व्यस्था में योगदान बढ़ा है इसका ही परिणाम है कि आज भारत कि महिलाएं राजनीति, कारोबार, कला तथा नौकरियों में पहुँच कर नये आयाम गढ़ रही हैं। भूमण्डलीकृत विश्व में भारत की नारी ने अपनी एक नितांत सम्मानजनक जगह कायम कर ली है। आंकड़े दर्शाते हैं कि प्रतिवर्ष कुल परीक्षार्थियों में 50 प्रतिशत

महिलाएं डॉक्टरी की परीक्षा उत्तीर्ण करती हैं। स्वतंत्रता के बाद लगभग 12 महिलाएँ विभिन्न राज्यों की मुख्यमंत्री बन चुकी हैं। भारत के अग्रणी सॉफ्टवेयर उद्योग में 21 प्रतिशत पेशेवर महिलाएँ हैं। फौज, राजनीति, खेल, पायलट और उद्यमी सभी क्षेत्रों में जहाँ वर्षों पहले तक महिलाओं के होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, वहां सिर्फ महिलाओं ने स्वयं को स्थापित ही नहीं किया है बल्कि वहां सफल भी हो रहीं हैं।

महिलाओं को शिक्षा देने तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिये जो सुधार आन्दोलन शुरू हुआ उससे समाज में एक नयी जागरूकता पैदा हुई है। बाल-विवाह, भ्रूण-हत्या पर सरकार द्वारा रोक लगाने का काफ़ी प्रयास हुआ है। शैक्षणिक गतिशीलता से पारिवारिक जीवन में परिवर्तन हुआ है। गाँधी जी ने कहा था कि एक लड़की की शिक्षा एक लड़के की शिक्षा की उपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि लड़के को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता है किन्तु एक लड़की की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है। शिक्षा ही वह कुंजी है जो जीवन के वह सभी द्वार खोल देती है। शिक्षित महिलाओं को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय होने में बहुत मदद मिली। महिलाएँ अपनी स्थिति व अपने अधिकारों के विषय में सचेत होने लगी हैं, आज देखने में आया है कि महिलाओं ने स्वयं के अनुभव के आधार पर, अपनी मेहनत और आत्मविश्वास के आधार पर अपने लिए नई मंजिलें, नये रास्तों का निर्माण किया है।

वर्तमान समय में भारतीय सरकार द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए अनेक कार्यक्रम एवं योजनाओं का संचालन किया जा रहा हैं इससे स्त्रियों की स्थिति में काफी बदलाव आए हैं, इसका ही परिणाम है कि इस बार के चुनाव में बीजेपी को जो अविस्मरणीय जीत हासिल हुई है उसको दिलाने में महिलाओं कि बहुत बड़ी भूमिका रही है। इसकी रूपरेखा का निर्माण कहीं न कहीं प्रधानमत्री मोदी के द्वारा जो देश व्यापी योजनायें चलाई गईं उनका काफी योगदान है। केंद्र में एनडीए सरकार ने जो उज्जवला योजना, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, सौभाग्य, जनधन, मुद्रा लोन आदि के रूप में जो योजनायें चलाई उन्होंने सीधे तौर पर महिला मतदाताओं को अपनी ओर आकर्षित किया है। इसको हम चुनावी परिणामों के माध्यम से भी देख सकते हैं कि मोदी सरकार ने जिन पांच राज्यों उत्तर-प्रदेश, पश्चिमी बंगाल, बिहार, मध्य-प्रदेश, राजस्थान की 216 सीटों पर जीत हासिल की है उसमें से भाजपा ने 156 यानी 66% सीटों पर जीत हांसिल कि है। ध्यान देने वाली बात है कि मोदी सरकार ने जो 4.30 करोड़ के करीब जो उज्वला गैस कनेक्शन बांटे हैं उनमें से 48% कनेक्शन उत्तर प्रदेश एवं बंगाल में बांटे गए। इससे इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है कि चुनाव परिणाम आने से पूर्व उत्तर प्रदेश में बीजेपी को एसपी बीएसपी गठबंधन के चलते भारी नुकसान के जो कयास लगाये जा रहे थे उनको गलत साबित करने में उज्ज्वला योजना तथा अन्य महिला केंद्रित योजनाओं ने मुख्य भूमिका निभाई है।

निष्कर्ष

चिकित्सा का क्षेत्र हो या इंजीनियरिंग का, सिविल सेवा का हो या बैंक का, पुलिस का हो या फौज का, वैज्ञानिक हो या व्यवसायी प्रत्येक क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण पदों पर स्त्रियाँ आज सम्मान के पद पर आसीन हैं। जैसे किरण बेदी, कल्पना चावला, मीरा कुमार, सोनिया गांधी, बछेंद्री पाल, संतोष यादव, सानिया मिर्जा, सायना नेहवाल, पी. टी. उषा, कर्णम मल्लेश्वरी आदि की क्षमता एवं प्रदर्शन को भुलाया नहीं जा सकता। आज नारी पुरुषों से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं और देश को आगे बढ़ा रही है। देश की प्रगति में नारी का योगदान है और हमेशा रहेगा।

आज के समय में भारत, महिला साक्षरता के मामले में लगातार प्रगति कर रहा है। हिंदुस्तान के इतिहास में भी बहादुर महिलाओं जिक्र किया गया है। मीराबाई, दुर्गावती, अहिल्याबाई, लक्ष्मीबाई जैसी कुछ मशहूर महिलाओं के साथ-साथ वेदों के समय की महिला दर्शनशास्त्री गार्गी, विस्वबरा, मैत्रयी आदि का भी उदाहरण इतिहास का पन्नो में दर्ज है। ये सब महिलाएँ प्रेरणा का स्रोत थी। समाज और देश के लिए दिए गये उनके योगदान को हम कभी नहीं भूल सकते।

स्वामी विवेकानन्द का मानना है - कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है, वहाँ की महिलाओं की स्थिति। हमें महिलाओं को ऐसी स्थिति में पहुंचाने की कोशिश करनी चाहिए, जहाँ वे अपनी समस्याओं को अपने ढंग से खुद सुलझा सकें। हमारी भूमिका महिलाओं की जिंदगी में उनका उद्धार करने वाले की न होकर उनका साथी बनने और सहयोगी की होनी चाहिए. क्योंकि भारत की महिला इतनी सक्षम है कि वे अपनी समस्याओं को खुद सुलझा सकती है।

क्या कलम 370 हटाने से भारत के नंदनवन में खुशहाली आएगी ?

राधा श्रीनिवास मोहरील
जल संसाधन अभियांत्रिकी, प्रथम वर्ष

14 अगस्त 1947 की रात्री को एक अप्रिय घटना ने हमारा दिल दहला दिया कि हमारी भारत माता का दो तुकड़ों में बँटवारा हो गया। यह घटना केवल दो भाईयों की जायदात का बँटवारा नहीं था बल्की हमारी संस्कृती का एवं राष्ट्र का विभाजन था। हम यदि 1947 के पूर्व के भारत का नक्शा हमारे स्मृतीपटल पर लाएँगे तो श्रीलंका से अफगाणिस्तान तक, कश्मीर से तिब्बत तक एक पूरा अखंड भारत था। जिसके पुरखे, संस्कृती एवं विचारधारा एक थी। इस पूरे अखंड भारत – वर्ष में कई संस्थान थे, जहाँ पर विभिन्न राजाओं की हुकूमत चलती थी।

150 वर्ष अंग्रेजोने हम पर जो शासन किया, हमारे देश की संपत्ती को लूटा, हमारी संस्कृती और सभ्यता को नष्ट कर दिया, और आने वाले दिनों में अपना राष्ट्र कैसे कमजोर बनेगा, इसकी भी व्यवस्था कर डाली। अंग्रेजों के खिलाफ जब असंतोष बढ़ा, तब शांती पूर्ण आंदोलन एवं क्रांतीकारीयों के प्रयास से जब स्वतंत्रता आंदोलन ने गती ली तब अंग्रेजोंको भारत छोड़ने पर मजबूर होना पडा। लेकिन जाते जाते अंग्रेजोने एसी चाल चली कि हमारे भारत वर्ष के बँटवारे की नौबत आ गई। लेकिन अखंड भारत की जनताके न चाहने पर भी कुछ परिवारों के राजनैतिक स्वार्थ को मद्देनजर रखते हुए हमें विभाजन की बात स्वीकार करनी पडी। इसमें कई संस्थान ऐसे थे जो हिंदुस्तान के पक्ष में थे, किन्तु कुछ ऐसे संस्थान थे जो मद्देनजर रखते हुए उनका विलिन भारत में करना आवश्यक था। इसलिए कही पर प्यार से तो कही समझा बुझाकर और किसीको धाक दिखाकर हिंदुस्तान ने विलिन करना निश्चित किया गया।

पाकिस्तान की निर्मिती के पश्चात हमारी उत्तरी सीमा पर स्थित जम्मू–कश्मीर को हर हालत में भारत में विलिन करना आवश्यक था। वो हमारी उत्तरी सीमा को सुरक्षित रखने के लिए एक सुरक्षा दीवार थी। इस संस्थान के महाराजा हरीसिंह थे, जो कि जम्मू–कश्मीर को भारत में विलीन करने के पक्ष में थे, परंतु शेख अब्दुल्ला अपने राज्य के लिए कुछ विशेष अधिकारों की माँग कर रहे थे, जो प्रधानमंत्री नेहरूजी ने स्विकार कर लिए थे। जो की देशहित के लिए उचीत नहीं था। इसीलिए भारतीय संविधान में धारा 35A और 370 का प्रावधान अमल में लाया गया और उनको कुद हद तक विशेष दर्जा दिया गया। जो की अस्थायी स्वरुप का है जो राज्यसंविधान में स्पष्ट रूप से लिखित है।

इस निबंध के विषय में पूछा गया है कि, ''क्या कलम 370 हटाने से भारत के नंदनवन में खुशहाली आएगी'' इसका मतलब यह निकलता है कि, भारत में विलीन होने के समय जम्मू–कश्मीर नंदनवन था, तभी तो उसको फिरसे नंदनवन बनाने की बात चल रही है। इस बात से यह स्पष्ट होता है कि, जो राज्य नंदनवन रहा है वह अब उजड गया है। तो उसके लिए जिम्मेदार तो धारा 35A एवं 370 को ही माना जाना चाहीए ना !

धारा 370 के तहत, कश्मीर को जो विशेष दर्जा प्राप्त था, जिसमें दो प्रधान, दो विधान, दो निशान का जो प्रावधान था, वो हमारे सार्वबहुमत्व पर बडा प्रहार था। इस प्रकार के विरूद्ध सर्व प्रथम यदि किसीने आवाज उठाई होगी तो वह डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जीजी जो भारतीय जनसंघ के संस्थापक थे । इस आंदोलन में उन्हें शहीद भी होना पडा लेकिन हमारा दुर्भाग्य यह है, की 1947 से लेकर 2019 तक 72 सालों में शासकोने इस कलम को बरकरार रखा जिसके दुष्परिणाम हम सभी आज तक भुगत रहे है। इस दरमियान लाखों कश्मिरी पंडितो के परिवारों पर अत्याचार किए गए, उनकी संपत्ती हडपली गई और उनको कश्मीर से खदेडा गया। परिणाम यह हुआ कि जम्मू–कश्मीर यह राज्य मुस्लिम बहुसंख्य हो गया। वहाँ पर शासन उनका, पुलिस उनकी, सबकुछ उनके लिए, उनको ऐसा लगने लगा था। हमारा कोई बालबॉका नहीं कर सकता । उनमें कुछ नागरिक ऐसे भी थे जो मुस्लिम होने बावजुद भी, भारत की सेना में गए, भारत की राजनीति में आए और देश के लिए कुछ करने का सोचा, लेकिन ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम थी। वही दूसरी ओर अधिकांश युवा, शत्रु राष्ट्र के बहकावे में आकर अपनी भारतीय सेना पर ही पत्थर –बाजी करने में धन्यता मानने लगे। जब उनका ऐसी नीतियों में विश्वास बढने लगा तब उनका शिक्षा से व्यापार से प्रदेश की खुशहाली से, शांती और अमन से, प्यार और बंधुभाव से नाता टूट गया। परिणाम स्पष्ट था, प्रदेश की शिक्षा खत्म हो गई, पर्यटकों ने जाना बंद कर दिया, व्यापार खोखला हो गया और हमारा नंदनवन सा प्रदेश धीरे–धीरे उजडने लगा।

तुष्टीकरण की नीती के कारण धारा 370 का दुष्प्रभाव धीरे –धीरे बढतेही गया । इसे खत्म करने के लिए देश के राष्ट्रभक्त नागरिकोने, देशभक्त संघटनाओं ने बहुत से आंदोलन चलाए लेकिन किसीको कामयाबी हासिल नही हुई। लेकीन 2019 में सरकार में होनेवाली दूरदर्शी नेताओं की फौज ने ऐसी योजना बनाई कि आज हम कलम 370 का प्रावधान राज्य के संविधान से निष्प्रभ करने में सफल रहे। अभी थोडे ही दिन हुए है, इसके अच्छे संकेत प्राप्त हो रहे है। कश्मीर का नौजवान जो अच्छे विचारोंवाला था, जो इन अराष्ट्रीय तत्वों के सामने झुकता था वे अब देश के लिए खडा हो रहा है। धीरे–धीरे व्यापार खुल रहे है। हमारे शत्रूराष्ट्र को हमारी सरकार ने दबोच कर रखने के कारण हमारे देश के आंतरिक, असामाजिक तत्व निष्प्रभ हो गए है। हम आशा करते है इन सब प्रयासों के बाद धीरे–धीरे हमारा उजडा हुआ कश्मीर नंदनवन की ओर अग्रेसर होगा। हमारे भारत माँ का क्रीट अब नंदनवन तो बनेगा ही, लेकिन उसके परिणाम स्वरूप हमारा समूचा राष्ट्र इस नंदनवन को पुनः स्थापित करने के लिए पूरी ताकद के साथ खडा रहेगा। पहले हम कहते थे, ‘‘कश्मीर हमारा है’’ लेकीन अब कहेंगे ‘‘कश्मीर बनाना है’’।

इस संदर्भ में किसी कवि ने कहा है कि –

‘‘वादियों का शहर फिर से हसने लगा
तिरंगा अपना वहाँ फिर लहरने लगा
370 की जकड़न में जंकड़ा था जो
तोड़कर जकड़ने फिर से नंदनवन बनने लगा।’’

मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम मंजिल की और चलो तो सही

नई राहो पे चलना इतना आसान नहीं, तुम अपने कदम बढाओं तो सही।
कट जायेगी आने वाली सभी मुसीबते, तुम डर कर उनसे लड़ो तो सही।
मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम मंजिल की ओर चलो तो सही।।
मुसीबते है पर इतनी नहीं तुमको तोड़ देगी, तुम उनका सामना करो तो सही।
दूर है मंजिल पर इतनी नहीं की पहुँच न सको, तुम रिश्ते बना कर उनपे चलो तो सही।
मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम मंजिल की ओर चलो तो सही।।
सपनो की दुनिया में कब तक खोये रहोगे, तुम उनको साकार करने की कोशिश करो तो सही।
कब तक कहते रहोगे कल कर लेंगे, हो जाएगा, तुम उसको आज करने की जिद करो तो सही।
मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम मंजिल की ओर चलो तो सही।।
कुछ नहीं मिले तो कोई बात नहीं, तुम ना मिलने से कुछ सीखोगे तो सही।
गिरते, पड़ते संभल जाओगे समय के साथ फिर तुम कभी न कभी जीतोगे भी तो सही मैं तुम्हारे साथ हूँ,
तुम मंजिल की और चलो तो सही।
सब कुछ दे दूंगा मैं तुमको, तुम उसके लायक बनो तो सही।
मैं तुम्हारे साथ हूँ , तुम मंजिल की और चलो तो सही।

सोनवीर सिंह
तकनिकी सहायक
कंम्प्यूटर साइंस एण्ड इंजीनियरिग डिपार्टमेंट
संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग

चंद्रयान से उभरी हुई भारत की प्रतिमा

दीपक कुमार झा
ई.सी.ई, द्वितीय वर्ष

मानव सभ्यता प्राकृति की सबसे बड़ी देन मानि जाति है। क्यूकी मानव संसार के सभी प्राणीयों में सबसे जाँदा संवेदनशील और चेतनशील प्राणी है। और मानवीय चेतना का रहस्य उसकी जिज्ञासा और उत्सुकता पर आधारित है। इसी जिज्ञासा एवंम् उत्सुकता के गर्भ से संसार के सभी विषयों का जन्म हुआ है। जिनमें हमारा विज्ञान भी एक है। और आजका यह निबंध विज्ञानके ही एक विभाग खगोल शास्त्र की अध्ययन एवम् उपलब्धियों पर केन्द्रीत है।

आज हम इस निबंध के माध्यम से कुछ चन्द्र कार्यक्रम उनका महत्व उनके प्रभाव उनका इतिहास तथा मुलतः उनके कारण भारत की उभरी हुई व्याप्त प्रतिमा पर प्रकाश डालने जा रहे है।

चन्द्रमा पृथ्वीका एकमात्र प्राकृतिक उपग्रह है। यह सौर मंडल का पाचवां सबसे बड़ा उपग्रह है। यह बृहस्पति के उपग्रह आई.ओ. के बाद सबसे अधिक घनत्व वाला दूसरा उपग्रह है। जिसके कारण इस पर खनिज पदार्थ होने कि प्रबल आशंका है। यह पृथ्वी कि परिक्रमा 27.3 दिन में पुरा करता है और अक्ष के चारो ओर एक पूरा चक्कर भी लगभग 27.3 दिनो में ही लगाता है। यही कारण है कि चन्द्रमाका शिर्फ एक हिस्सा की हमेशा पृथ्वी की ओर होता है। जो वैज्ञानिको को और उत्सुकता प्रदान कर्ता है की चन्द्रमा के दूसरे ओर का माहौल कैसा होगा। क्या उस तरफ का पर्यावरण पृथ्वी के तरफ वाले हिस्से से अलग होगा, अगर अलग होगा तो किस हद तक। वैज्ञानिको के अनुसार चन्द्रमा की उत्पत्ति 4.5 अरब वर्ष पहले पृथ्वी के साथ एक विशाल चट्टान के टक्कर से हुई थी। जो वैज्ञानिकों के मष्तिस्क में ये ख्याल को जन्म देता है कि, "अगर चन्द्रमा भी पृथ्वी का ही अंश है तो क्या चन्द्रमा पर भी पृथ्वीके माती जीवन संभव है ?" इन सभी कारणों से ही चन्द्रमा एवम् पहेली बन चुका है। और सारा संसार इस पर अध्ययन करने को उत्सुक है।

इन ही सोच और जिज्ञासाको अग्रसर करते हुए सोवियत राष्ट्र ने विश्व में सर्वप्रथम चन्द्र कार्यक्रमों की नींव रखी, जीसके दौरान उनका लुना -1 पहला अंतरिक्ष यान था जो चन्द्रमा के पास से गुजरा था, उसके बाद उनका ही लुना -2 पहला चन्द्रयान था जो चन्द्रमा की धरती पर 14 सितंबर 1959 में उतरा था। सन 1969 में केवल नासा के अपोलो कार्यक्रम ने ही मानव युक्त मिशन सफलता पूर्वक करने कि उपलब्धि को हासिल किया था। सन 1969 से 1972 के बीच छह मानवयुक्त यानो ने चन्द्रमा की धरती पर कदम रखा। जिसमें से अपोलो -11 पर सावर निल आर्मस्ट्राग संसार के पहले मनुष्य थे जिन्होंने चन्द्रमा पर पहला कदम रखा था।

उसी समय हमारे भारत में भी एक अंतरिक्ष अनुसन्धान संगठन का गठन किया जा रहा था। जिसको हम आज भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (संक्षेप में इससे) के नाम से जानते है। इसका गठन देरी से होने के कारण हमारा देश अंतरिक्ष अनुसंधान लगभग लगभग दशक पीछे चल रहा था। परंतु हमारे देश की युवा शक्ति की चेतना एवम् कठिन परिश्रम से आज हमारा देश अंतरिक्ष कार्यक्रमों में संसार के अंतरिक्ष महाशक्ति साथ कंधे से कंधा मिला कर चलने में सक्षम हो पाया है। तथा अपने अनेको अंतरिक्षीय प्रयोगों एवम् उपलब्धियों से संसार में भारत का कीर्तिमान स्थापित किया है।

हमारे भारत ने चन्द्रमा के प्रति अपनी रूची 2008 में दिखाई जब चंद्र अन्वेषण कार्यक्रम के अंतर्गत चंद्र कि ओर पहला मानव रहित यान 22 अक्टूबर 2008 को भेजा गया। वह 30 अगस्त, 2009 तक चन्द्रमा की कक्षा में सक्रिय रहा। यह यान ध्रविय उपग्रह प्रमोचन यान (पोलार सेटलाईट लांच वेहिकल, पी.एस. एल.वी.) के एक संशोधित संस्करण वाले राकेट की सहायता से सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र, श्री हरीकोटा से प्रक्षेपित किया गया था। इसे चन्द्रमा तक पहुंचने में 5 दिनों का समय लगा था। परंतु चंद्रमा की कक्षा में स्थापित करने में 15 दिनों का समय लगा था। चन्द्रयान -1 ऑर्बिटर का मुन इन्पैक्ट प्रोब (MIP)14 नवंबर 2008 को चन्द्र सतह पर उतरा जिससे भारत चंद्रमा पर अपना झंडा लगाने वाला चौथा देश बन गया।

- चन्द्रयान -1 की मदत से भारत ने अनेको अध्ययन और कुछ बहुमुल्य शिद्धिया भी प्राप्त किए। जिनमें से कुछ निम्न लिखित है।
- स्थायी रूप से छाया में रहने वाले उत्तर और दक्षिण ध्रुविय क्षेत्रों के खनिज एवम् रसायनिक इमेजिंग किए गए।
- चन्द्रमा पर सर्वप्रथम जल और बर्फ होने की खोज भी हमारे चन्द्रयान की ही देन है। जिसकी पुष्टि बाद में नासा समेत अन्य राष्ट्र के अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थाओं ने भी की।

चन्द्रयान के अनेकों उपलब्धियों में से सबसे प्रभाव कारी चंद्रमा की सतह पे जल का पता लगाना था। क्योंकी हमारा चन्द्रयान ऐसा करने वाला पहला चन्द्र मिशन था। और इस खोज को संसार में सदी की सबसे महत्वपूर्ण एवम् बड़ी अनुसंधान की सुचि में अंकित किया गया। इस उपलब्धि के बाद से ही समस्त संसार को ये ज्ञात हो गया की भारत भी अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में विश्वशक्ति बढने कि ओर तेजी से बढ रहा है।

वो कहते है ना कि,

''जो न देते थे जवाब, उनके सलाम आने लगे,
वक्त बदला तो, मेरे नीम पे आम आने लगे।''

ठीक इसी प्रकार संसार के कुछ संस्था एवम् कुछ समाचार कंपनी जो भारती अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन को बालकों का समुह मानते थे और उनकी निन्दा करने से कभी नही चुक्ते थे चन्द्रयान की सफलता के बाद उनके तरफ से भी बधाई एवम् इज्जत सतकार मिलने प्रारम्भ हो गए।

उसके बाद भारत के चन्द्रमा कि ओर बढ़ते हुए कदम ने दूसरा चन्द्र कार्यक्रम करने का निश्चय किया जिसके अंतर्गत इससे एक ऑर्बिटर, एक लैंडर के साथ एक प्रज्ञान रोवर को चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतार कर उसके जरिये चन्द्रमा के सतहका विशिष्ट अध्ययन करने जैसा लक्ष्य निर्धारित किया। और इस कार्यक्रम को चन्द्रयान-2 का नाम दिया गया। इस मिशन में लगने वाले समस्त यंत्रों को अपने देश में ही स्वदेशी तकनीक से विकसित किया गया । इस मिशन को पूर्णतः रूप से तैयार करने में लगभग 10 वर्षों का समय लगा। अंततः 10 वर्षों की कठिन परिश्रम लगन एवम् जटिल तकनिकों द्वारा भारत के वैज्ञानिकों ने चन्द्रयान -2 को पूरी तरह से तैयार कर 22 जुलाई 2019 को श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र से भारत का बाहुबली कहे जाने वाले जी.एस.एल.भी. संस्करण 3 प्रक्षेपण यान सवार कर अंतरिक्ष को चिरते हुए लक्ष्य को भेदने के लिए सफलता पूर्वक प्रक्षेपित कर दिया गया।

चन्द्रयान -2 अपने निर्धारित समय अनुसार अपने हर पढाव को सकुशलता पूर्वक पार करते हुए आगे की ओर बढ़ता रहा। साथ ही अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने के क्रम में विभिन्न दृष्यों का साक्षात्कार करा कर अपने सुदृढ़ता का परिचय अनुसंधान केन्द्र ने लैंडर को चन्द्रमा के सतह पर उतारने के लिए 7 सितंबर कि रात करीब 2 बजे का समय निर्धारित किया था। परंतु चन्द्रमा की सतह पर उतरने के क्रम में लगभग 2.1 कि.मी. की दुरी पे लैंडर का संपर्क इसरो के संपर्क एजेन्सी से खंडित हो गया। जिसके बाद मानो कुछ समय के लिए जैसे ब्रम्हांड की गति थम सी गई थी, भारत समेत सारे संसार पर दुःख के बादल छा गए थे। परंतु उस कठिन घड़ी में भारत समेत समस्त संसार का मार्गदर्शन करते हुए हमारे प्रधान मंत्री जी ने कहाँ कि, ''विज्ञान में असफलता जैसी शब्द का कोई स्थान नहीं है, विज्ञान में सिर्फ प्रयोग होते है और प्रयोग सफलता की शिखर पर पहुचने तक जारी रहेगे।'' और आज भी इसरो इस विषय पर गहन अध्ययन कर रहा है।

चन्द्रयान-2 कार्यक्रम को संबोधित करते हुए इसरो के निर्देशक कैलाशवादिवू सीवन ने ये पुष्टि किया की लैंडर से संपर्क नहों ने पर भी, हमरे अपने लक्ष्य का सिर्फ 5 प्रतिशत भाग खोया है। हमारा 35 प्रशिक्षत अनुसंधान पुरा करने वाला ऑर्बिटर अभी भी अपने पूरे क्षमता से कार्य करते हुए चन्द्रमा की परिक्रमा कर रहा है। साथ ही इसकी पुष्टि संसार के अन्य विदवानों ने एवम् नासा जैसी संस्थाओं ने भी किया।

नासा ने चन्द्रयान -2 मिशन पर ट्वीट करते हुए कहा कि, ''अंतरिक्ष कठिन है। हम चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर इसरो के चन्द्रयान-2 मिशन को उतारने के प्रयास की सराहना करते हैं। '' साथ ही यह भी कहा की, ''इसरो ने हमें अपनी यात्रा से प्रेरित किया है और आपके साथ सौर मंडल का पता लगाने के लिए भविष्य के अवसरों के लिए हम सदैव तत्पर है।''

नासा के बाद न्यूर्याक टाइन्स, वॉशिंगटन पोस्ट, गार्डियन और बीबीसी जैसे अंतराष्ट्रीय अखबारोंने इसरो के कार्य एवम् तकनिक के मुरीद होते हुए, इसरो की जमके तारीफ कि। वॉशिंगटन पोस्ट ने लिखा, ''इतनी कम लागत में इतने बड़े स्पेस प्रोग्राम लाँन्च करना भारत के लिए अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। चंन्द्रयान-2 का खर्च 989 मिलियन डॉलर है जो अमेरिका के ऐतिहासिक अपोलो मून मिशन से कई गुना कम है।''

न्यूर्याक टाइम्स ने भारत की तकनीकी कौशलता का मिसाल देते हुए लिखा, ''चन्द्रयान पहली कोशिश में चांद पर भले न उतर पाया हो लेकिन इससे तकनीकी कौशल और देश के अंतरिक्ष विकास का पता जरूर चलता है। चन्द्रयान-2 के लैंडर से संपर्क टुटने से भारत उन देशों की सुचि में शामिल होने से चुक गया जो पहले प्रयास में चांद की सतह पर उतर सके हो जिनमें आज तक किसी राष्ट्र का नाम शामिल नहीं है।''

ब्रिटिश अखबार द गार्डियन ने चन्द्रयान मिशन पर लिखा है कि, ''भारत आज वहा जाने की कोशिश में है जहाँ भविष्य में 20,50 या 100 वर्ष बाद इंसानों के बसेरे बनेंगे अर्थात चन्द्रमा का दक्षिणी ध्रुव।''

अत: मेरे अनुसार चन्द्रयान-2 कार्यक्रम अपने लैंडर को खोने के बावजूद भी एक प्रेरणादायक एवम् सत प्रतिशत सफल प्रयोग रहा जीसने केवल हम 134 करोड़ भारतीय को ही नहीं बलके सारे संसार के 770 करोड़ लोगों के मन में जोश, साहस एवम् उत्साह का संचार करते हुए प्रेरणा का एक स्त्रोत कायम किया है। और साथ ही चन्द्रयान-2 कार्यक्रम सोहनलाल द्विवेदी जी द्वारा रचित कविता की इन पंक्तियों
''लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।।''
को प्रष्ट करते हुए हमें इनकी सराहना करने का उपदेश देती है।

इस प्रकार चन्द्रयान कार्यक्रम ने भारत की प्रतिमा में सोने के गुणों में सुगंध का समावेश करने जैसा योगदान दिया है। और संसार के समक्ष एक अलौकिक और दिव्य प्रतिमा युक्त भारत का अनावरण किया है।

मुसाफिर

इस नगर के शहर से उस नगर के शाम तक
है मुसाफिर चल रहा स्वप्नों के मुकाम तक।
मंजिलों के राह में वो थक सा गया है और
संबंध सारे टूट गए है शहर से लेकर गाँव तक
वो मुतमइन है की सफर बदल नही सकता पर
लिबास उसके बदल गए है सर से लेकर पाँव तक।
वो घर छोड़ के चल पड़ा है घर के ही वास्ते
कदम उसके नादान है और बोहत कड़े है रास्ते
वो चल नहीं पाया ना पहुँच सका अंजाम तक
और आज वो पुकार रहा........
काश मुझे पहुंचा दे कोई मेरे गाँव के शमशान तक।

श्रीमति त्रिवेणी ली. हटवार
भंडारा विभाग,
वि.न.आइ.टी.,नागपुर

मैं

मुश्किलें जरूर है, मगर ठहरा नही हूं मैं
मंजिल से जरा कह दो, अभी पहुंचा नहीं हूं मैं
कदमों को बांध न पाएंगी, मुसीबत कि जंजीरे
रास्तों से जरा कह दो, अभी भटका नहीं हूँ मैं,
सब का बांध टूटेगा, तो फना कर के रख दूंगा,
दुश्मन से जरा कह दो, अभी गरजा नही हूं मैं,
दिल में छुपा के रखी है, लडकपन कि चाहते,
मोहब्बत से जरा कह दो, अभी बदला नहीं हूं मैं
साथ चलता है, दुआओं का काफिला
किस्मत से जरा कह दो, अभी तनहा नहीं हूं मैं.....

श्रीमती प्रतिभा पौनीकर
संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग

महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण की आवश्यकता

श्रीमती त्रिवेणी ली. हटवार
भंडार विभाग

हम सभी जानते है की हमारा देश हिंदुस्तान पूरे विश्व में अपनी अलग रीती रिवाज़ तथा संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। भारत में प्राचीन काल से ही यह परंपरा रही है की यहाँ महिलाओं को समाज में विशिष्ट आदर एवं सम्मान दिया जाता है। भारत वह देश है जहाँ महिलाओं की सुरक्षा और इज्ज़त का खास ख्याल रखा जाता है। भारतीय संस्कृति में महिलाओं को देवी लक्ष्मी का दर्जा दिया गया है। अगर हम इक्कीसवीं सदी की बात करे तो महिलाएं हर कार्यक्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला काम कर रही है चाहे वो राजनीति, बैंक, विद्यालय, खेल, पुलिस, रक्षा क्षेत्र, खुद का कारोबार हो या आसमान में उड़ने की अभिलाषा हो।

हम यह तो नही कह सकते की हमारे देश में महिला सुरक्षा को लेकर कोई मुद्दा नहीं है परन्तु हम कुछ सकारात्मक बिंदुओ को अनदेखा भी नहीं कर सकते। अगर हम अपने इतिहास पर नज़र डाले तो हम देखते है की उस ज़माने में पांचाली प्रथा होती थी जिसके तहत एक महिला (द्रौपदी) को पाँच पुरुषों (पांडव) से विवाह करने की अनुमति दी गई थी। ये तो वो तथ्य है जो हम सब जानते है परंतु अगर पर्दे के पीछे की बात की जाये तो दफ्तरों, घरों, सड़को आदि पर महिलाओं पर किये गए अत्याचारों से अनजान है। पिछले कुछ समय में ही महिलाओं पर तेज़ाब फेंकना, बलात्कार, यौन उत्पीड़न जैसी वारदातों में एकाएक वृद्धि आई है। इन घटनाओं को देखने के बाद तो लगता है की महिलाओं की सुरक्षा खतरे में है।

हमे अपनी विचारधारा, सोच और मानसिकता को बदलना होगा। कुदरत ने स्त्री को सिर्फ भोग-विलाश या शोषण के लिए नही बनाया है। उसे भी अच्छा जीवन जीने का हक है जैसे पुरुषो को है। उसके साथ दहेज़, पुत्र को जन्म देने, चारित्रिक संदेश के आधार पर शोषण उत्पीड़न नही करना चाहिये। हमे अपनी सोच बदलनी होगी।सरकार को चाहिये कि महिलाओं की सुरक्षा के लिए कठोर कानून बनाये जायें। बलात्कार के कानून को सख्ती से लागू करना चाहिये। आरोपियों को जमानत नही देनी चाहिये। कड़े कानून बनाने चाहिये। हमे महिलाओं की साक्षरता को बढ़ाना होगा।

'परिदृश्य बदल रहा है। महिलाओं की भागीदारी सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय रूप से बढ़ रही है। 'Women Empowerment हो रहा है।' ये कुछ चुनिन्दा पंक्तियां हैं जो यदा कदा अखबारों में, टीवी न्यूज़ चैनल पर, और नेताओं के मुँह से सुनी जाती रही है।अपने क्षेत्र में खास उपलब्धियां हासिल करने वाली कुछ महिलाओं का उदाहरण देकर हम महिलाओं की उन्नती को दर्शाते हैं। पर अगर आप ध्यान दें तो कुछ अद्भुत करने वाली महिलाएं तो हर काल में रही है। सीता से लेकर द्रौपदी, रज़िया सुल्तान से लेकर रानी दुर्गावति, रानी लक्ष्मीबाई से लेकर इंदिरा गांधी, किरण बेदी एवं सानिया मिर्ज़ा। परन्तु महिलाओं की स्थिति में कितना परिवर्तन आया? और आम महिलाओं ने परिवर्तन को किस तरह से देखा? दरअसल, असल परिवर्तन तो आना चाहिए आम लोगों के जीवन में। ज़रूरत है उनकी सोच में परिवर्तन लाने की। उन्हें बदलने की। आम महिलाओं के जीवन में परिवर्तन, उनकी स्थिति में, उनकी सोच में परिवर्तन। यही तो है असली परिवर्तन है।

अगर हम आसान शब्दों में महिला सशक्तिकरण को समझें तो इसका उद्देश्य होता है महिलाओं को शक्ति प्रदान करना ताकि वह हमारे समाज में पीछे ना रह सकें और पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपने निर्णय ले सके और सर उठा कर समाज में चल सके। महिला सशक्तिकरण का मुख्य लक्ष्य महिलाओं को उनका सही अधिकार दिलाना है। महिला सशक्तिकरण विश्व भर में महिलाओं को सशक्त बनाने की एक मुहिम है जिससे की महिलाएं स्वयं अपने निर्णय ले सके और हमारे इस समाज और अपने परिवार के कई निजी दायरों को तोड़कर अपने जीवन में आगे बढ़ सके।आज ना सिर्फ समाज की महिलाओं को इसके विषय में समझाया जा रहा है बल्कि बच्चों को भी शिक्षा के माध्यम का से महिला सशक्तिकरण के विषय में बताया जा रहा है ताकि बड़े होने पर वह भी अपने पैरों पर खड़ी हो सके।

स्वस्थ्य महिला - स्वस्थ्य परिवार

सुमित्रा चटर्जी
काउन्सेलर
व्ही.एन.आई.टी. स्वास्थ्य केन्द्र

स्वास्थ्य महिला, स्वास्थ्य परिवार एवं स्वास्थ्य समाज का निर्माण करती है, इसलिए महिलाओं को तनावमुक्त और काम के बोझ से मुक्त रखता परिवार के सदस्यों की जिम्मेदारी है।

स्वास्थ क्या है ?

स्वास्थ रहना सबसे बड़ा सुख है। कहावत भी है पहला सुख निरोग काया। कोई भी इंसान तभी अपने जीवन का पूरा आनंद उठा सकता है जब वह शारीरिक व मानसिक रूप से स्वास्थ रहे। स्वास्थ शरीर में स्वास्थ मस्तिष्क निवाज करता है। इसलिए मानसिक स्वास्थ के लिए भी शारीरिक स्वास्थ अनिवार्य है। ऋषियों ने कहा है ''शरीरमाघं खलु धर्म साधनम'' अर्थात यह शरीर ही धर्म का श्रेष्ठ साधन है। यदि हम धर्म में विश्वास रखते है तो स्वयं को धार्मिक कहते है तो अपने शरीर को स्वस्थ रखना हमारा पहला कर्त्तव्य है। यदि शरीर स्वस्थ नहीं है तो जीवन भारसंभव हो जाता है। विश्व स्वास्थ संगठन द्वारा दी गई स्वास्थ की परिभाषा – ''शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टि से सही होने की संतुलित सतह का नाम स्वास्थ्य है, न कि बीमारी के न होने का।''

महिला एवं उनका स्वास्थ -

भारत में महिलाओं का स्वास्थ एक उपेक्षित मुद्दा रहा है। वैसे तो महिलाएँ अपने परिवार के सदस्यों का बहुत ध्यान रखती है लेकिन खुद के लिए कही न कही लापरवाही करती है।

आजकल की इस भागदौड़ की भरी जिंदगी में महिलाएं पुरूषों के बराबर कंधे से कंध मिलाकर उन्हें एक बराबरी दे रही है। आज के इस समय में कई महिलाएँ तो ऐसी है जो पूरे विश्व में भारत का नाम रोशन कर चुकी है। इस समय महिलाएँ वो सभी काम कर रही है जो कि एक पुरूष करता है। इसलिए जरूरी है कि वो खुद को स्वस्थ्य रखें। तभी वो आज के दौर में सबके साथ चल पायेंगी।

महिलाओं के स्वास्थ्य खराब होने के कारण -

1) तनावा। 2) पारिवारिक झगड़ा। 3) काम का दबाव। 4) पौष्टिक भोजन की कमी। 5) दिनचर्या खराब होना । 6) नींद में कमी होना। 7) आपसी संबंध अच्छा न रखना। 8) प्रत्येक पहलू में नकारात्मक भाव रखना। 9) विपरीत परिस्थिती का सामना न करते हुए वहां से भाग जाना । 10) उत्साह की कमी।

महिलाओं के लिए स्वस्थ्य रहने के तरीके -

1) नियमित रूप से व्यायाम करें। 2) तनाव से बचने के लिए अपने मनपसंद काम में रूचि को विकसित करें। 3) स्वयं गीत गाये या संगीत सुने आपके पसंद के अनुसार, डांस या एरोबिक भी कर सकते है। 4) अपने लिए थोड़ा समय निकालकर योगा एवं मेडिटेशन करें। 5) पौष्टिक भोजन ले एवं समय पर भोजन लें। 6) पर्याप्त नींद लें। 7) पानी खूब पीये। 8) सकारात्मक सोच रखें। 9) जिंदगी में हर परिस्थिति का सामना करने की आदत डालें। 10) मदद करने की आदत विकसित करें। 11) मन को संतुलित रखें। 12) सकारात्मक सोच वाले लोगों से मित्रता करें। 13) सभी प्रकार के व्यवहारों में विनम्रता रखें और अवसरों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखें। 14) परिवार एवं समाज के संबंधों को खुशहाली की ओर ले जाने का लगातार प्रयास करें। 15) अन्तरवैयक्तिक (पारस्परिक आपसी) संबंध को अच्छा बनाये रखें। 16) प्रत्येक काम को खुश होकर उत्साह के साथ करें। 17) प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान करें। 18) किसी अच्छे (जो आपको अच्छा लगे) काम में अपने आप को व्यस्त रखे। 19) खाली समय का सदोपयोग करें। 20) अपनी मनपसंद कोई खेल चुने।

इस प्रकार जब एक महिला स्वस्थ्य होती है तब वह प्रसन्न रहती है। जब वो प्रसन्न रहती है तो परिवार के प्रत्येक सदस्य का सही ढंग से ध्यान दे पाती है एवं परिवार के प्रत्येक व्यक्ति को खुश रख पाती है।

आधुनिक नारी

डॉ. सत्येंद्र मा. देशमुख
उपकुलसचिव

''आदर्श भारतीय नारी '' यह शब्द प्रयोग थोड़ा हास्यास्पद लगता है, क्या हमें सिर्फ नारी का ही आकलन करना चाहिए, पुरूष का नहीं? भारतीय संस्कृति में समस्त नारी जाति को प्रतिष्ठा एवं सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। कोई भी परिवार, समाज अथवा राष्ट्र प्रगति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता, जब तक नारी के प्रति भेदभाव, निरादर इत्यादि को समूल नष्ट नहीं किया जाता।

ब्रह्मा के पश्चात इस धरातल पर मानव को वितरित करने वाली इस नारी का स्थान सर्वोपरि है। नारी- माँ, बहन, पुत्री एवं पत्नी के रूप में अपनी भूमिका निभाती है । मानव का समाज से संबंध स्थापित करने वाली नारी ही होती है। इसका सम्मान सम्पूर्ण संसार को बदलने की क्षमता रखता है।

जब एक महिला स्वयं को उत्पादक कार्य में लगाती है, तो न केवल परिवार अपितु पुरे देश को उसका लाभ होता है। यदि वह आर्थक सुरक्षा का आनंद लेती है, तो वह सम्पूर्ण परिवार में हँसी-खुशी ले आती है। और परिवार धरती पर स्वर्ग का स्थान बन जाता है। नारी में विद्यमान उसकी प्रतिभा समाज की प्रगति के लिए आवश्यक है, परंतु आधुनिकता के नाम पर नारी को समाज को दूषित करने का कोई अधिकार नहीं है। क्योंकि नारी का दर्जा माँ, बेटी और पत्नी का है एवं वह माँ दुर्गा, लक्ष्मी एवं सरस्वती के रूप में भी पूजी जाती है। इसलिए उसे भी उसका सम्मान रखते हुए आगे बढ़ना है। न कि रिश्तों, परिवार को तोड़कर आधुनिकता को अपनाना है।

आज की नारी पुरूष के बराबरी से चल रही है, कल्पना चावला, किरण बेदी, अरूणा रॉय, मेघा पाटकर, मदर टेरेसा, लता मंगेशकर आदि नारियों ने विभिन्न क्षेत्रों में अपना नाम रोशन किया है। ''यत्र नार्यास्तु पूज्यंते, रमते तत्र देवता'' इसके अनुसार - ''जहाँ नारी का आदर सम्मान होता है, उनकी आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं की पूर्ति होती है वहाँ देवता रमण करते हैं।''

पूरे विश्व में 8 मार्च का दिन ''अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस'' के रूप में मनाया जाता है। नारी का इस धरती पर सबसे सम्माननीय रूप माँ का है, माँ के सम्मान को कभी कम नहीं होने देना चाहिए। आज नारी दोहरी जिम्मेदारी निभा रही है, घर के कामकाज के अलावा बाहर के कामों में भी घरवालों का हाथ बँटा रही है। जिससे उन्हें समाज में अग्रणी पंक्ति में स्थान मिल रहा है। नारी पराधीनता से मुक्त होकर अपनी गरिमा को पा रही है। वह मानवता की प्रतिमूर्ति है।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने स्पष्ट ही कहा है -

''एक नहीं दो -दो मात्राएँ, नर से बढ़कर नारी।''

महाकवि जयशंकर प्रसाद जी ने अपनी काव्यकृति में लिखा है -

''नारी ! तुम केवल श्रद्धा हो।''

नारी आज समाज में सम्मानित एवं प्रतिष्ठित हो रही है। बाहर समाज का दायित्व निर्वाह करने के लिए आगे बढ़ी है। समाज की विकलांग दशा को सुधारने के लिए कार्यरत है । इसके लिए वह पुरूष के समानांतर पद एवं अधिकार को प्राप्त कर रही है। नारी में किसी प्रकार की शक्ति एवं क्षमता की कमी नहीं है। उसने Digital India में भी असाधारण भूमिका निभाई है।

हर क्षेत्र में अपनी विलक्षण प्रतिभा, क्षमता एवं लगन से पूरे देश को गौरवान्वित कर रही है। आज वह आर्थिक एवं मानसिक रूप से आत्मनिर्भर है। चुनौतियों का हँसकर स्वागत करने वाली महिलाएँ आज हर क्षेत्र में अपना लोहा मनवा रही हैं।

महिला सुरक्षा भी एक बड़ा सामाजिक मुद्दा है, जिसे तत्काल हल करने की आवश्यकता है। यह देश के विकास को बाधित करता है। हिंसा संबंधी घटनाएँ नारी को भयाक्रांत करने व अपने कदम पीछे लेने को मजबूर करती है।

नारी आज अपनी काबिलियत व साहास के बूते पर कामयाबी के मुकाम तक पहुँची है एवं कामयाबी के नित नए कीर्तिमान रचती जाती है। भारत का इतिहास बहादुर दार्शनिक महिलाओं से भरा पड़ा है। वे सभी महिलाएँ हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत है, हम समाज और देश के लिए उनके योगदान को कभी नहीं भूलेंगे।

अचर्चित उर्मिला

श्रीमती भारती अनिल खडसिंगे
पुस्तकालय विभाग

पौराणिक मान्यता के अनुसार शेषनाग के कई अवतारों का उल्लेख मिलता है, जिनमें राम के भाई लक्षण और कृष्ण के भाई बलराम मुख्य है। रामायण अनुसार राजा दशरथ के तीसरे पुत्र थे लक्षण। उनकी माता का नाम सुमित्रा था। लक्षण के लिए राम ही माता-पिता, गुरू, भाई सबकुछ थे और उनकी आज्ञा का पालन ही इनका मुख्य धर्म था।

कहते है कि जब लक्षण का जन्म हुआ तब तक रोता रहा जब तक वह राम के बगल में नहीं रखा गया था। उस दिन से वह हमेशा राम के बगल में ही था। श्री रामायण को आजतक हमने और इस समाज ने श्रीराम की दृष्टिकोण से देखा। लक्ष्मण को, सिता को, रामभक्त हनुमान और रावण के ज्ञान को देखा। लेकिन कभी यह ध्यान नहीं किया कि इस रामयण में सबसे अधिक उपेक्षित और अनदेखा किंतु महत्वपूर्ण पात्र था तो वह भी लक्षण की पत्नी और जनकनंदिनी सीता की अनुजा उर्मिला।

वाल्मीकी रामायण के अनुसार, उर्मिला अपनी बहन सीता के विवहा के समय ही दशरथ और सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण को ब्याही गई थी। ये वो लक्ष्मण है जो राम के साथ सदा छाया की तरह रहते थे। कैकयी के इच्छाओं के अनुसार 14 साल के लिए राम को जंगल में निर्वासित किया गया था, तब राम और सीता की छाया बनकर उनके साथ लक्ष्मण भी वनवास को जाने लगे, तब उनकी पत्नी उर्मिला ने भी उनके साथ जाने की जिद की। परंतु लक्ष्मण ने उन्हें यह कहकर मना कर दिया कि अयोध्या के राज्य को और माताओं को उनकी आवश्यकता है। उर्मिला के लिए यह बहुत कठीण समय था, ऐसे में जब कि वह नववधू थी। लक्ष्मण के वनवास जाने के बाद उर्मिला के पिता अयोध्या आए और उर्मिला को मायके चलने का अनुरोध करने लगे, ताकि मां सखियों के सानिध्य में उर्मिला का पतिवियोग का दुःख कुछ कम हो सके। परंतु उर्मिला ने अपने मायके मिथिला जाने से इनकार करते हुए कहा कि पति की आज्ञा अनुसार पति के परिजनों के साथ रहना और दुःख में उनका साथ न छोड़ना ही अब उनका धर्म है। यह उर्मिला का अखंड पतिव्रत धर्म था।

वह पल, वह जीवन सरिता जो कोई भी नववधू अपने पति के साथ गुजारती है, वह उर्मिला के नसीब में नहीं लिखी गयी थी। यह उर्मिला की अवर्णित, अचर्चित, अघोषित महानता थी। उर्मिला के महान चरित्र, अखंड पतिव्रत, स्नेह और त्याग की चर्चा कहीं भी न हो सकी। वे केवल उपेक्षित ही रही । लक्ष्मण से विदा होते समय, सबसे बिकट क्षणों में भी उर्मिला आंसू न बहा सकी क्योंकि उनके पति लक्ष्मण ने उनसे एक और वचन लिया था कि वह कभी आंसू न बहाएगी। अगर वह अपने दुःख में डूबी रहेगी तो परिजनों का ख्याल नहीं रख पाएगी।

एक नवविवाहिता के लिए कितना कष्टकारी, कितना हृदयविदारक पल था वह जब अपने पति को 14 वर्ष के लिए अपने से दूर जाने देना और उनकी विदाई पर आंसू भी न बहाना और ससूर के स्वर्ग सिधारने पर भी वचन के सम्मान में आंसू न निकालना।

मान्यता के अनुसार, वनवास की पहली रात में जब भगवान राम और सीता कुटिया में विश्राम करने चले गये तो लक्ष्मण कुटिया के बाहर पहरा दे रहे थे। तभी उनके पास निद्रा प्रकट हुई थी। लक्ष्मण ने निद्रा देवी से यह वरदान मांगा था कि उन्हें 14 वर्षों तक निद्रा से मुक्त कर दे। निद्रा देवी ने उनकी इस इच्छा को स्वीकार करते हुए यह कहा था कि उनके हिस्से की निद्रा को किसी और को लेना ही होगा। तब लक्ष्मण ने निद्रा देवी से बिनती की थी कि उनके हिस्से की निद्रा उनकी पत्नी उर्मिला को दे दिया जाए। कहा जाता है कि निद्रा देवी के इस वरदान से उर्मिला लगातार 14 वर्ष सोती रही और लक्ष्मण जागते रहे। एक और वाक्या ऐसा भी है कि लक्ष्मण और रावण के पुत्र मेघनाद के युद्ध में लक्ष्मण की विजय का मुख्य कारण उर्मिला थी, क्योंकि मेघनाद को यह वरदान था कि ज्यों इंसान 14 वर्षो तक न सोया हो केवल वहीं उसे हरा सकता है। इसलिए केवल उर्मिला की वजह से ही लक्ष्मण मेघनाद को मोक्ष दिलवाने में कामयाब हो सके।

अब प्रश्न यह उठता है कि निद्रा देवी के वचन के अनुसार अगर उर्मिला 14 वर्ष तक सोती रहीं तो बाकी जीवन वह कैसे जी पाई तथा सास और अन्य परिजनों की सेवा करने का वादा उन्होंने कैसे पूरा किया। तो उत्तर यह है कि सीता माताने वनवास जाते समय अपना एक वरदान उर्मिला को दे दिया था। उस वरदान के अनुसार उर्मिला एक साथ तीन कार्य कर सकती थी।

14 वर्ष के पश्चात जब सभी अयोध्या लौट आए तो लक्ष्मण राम का राजतिलक नहीं देख पाए। क्योंकि निद्रा देवी के शर्त के अनुसार लक्ष्मण जैसे ही अयोध्या लौटेंगे तो उर्मिला की नींद टूट जाएगी और लक्ष्मण गहन निद्रा में चले जाएंगे। इसलिए राम का राजतिलक लक्ष्मण ने नहीं देखा उनके स्थान पर राजतिलक की यह रस्म उर्मिला ने देखी थी ऐसा माना जाता है।

अहिल्याबाई होलकर - एक अद्भूत, अद्वितीय एवंम् विलक्षण प्रतिभा संपन्न नारी

डॉ. सुषमा म. गिरीपुंजे
भौतिकशास्त्र विभाग
व्ही.एन.आई.टी., नागपुर

डिसेंबर माह, गुलाबी थंडी के दिन, जब मुझे इंदौरा जाने का मौका मिला और इंदौर शहर भ्रमण ने मुझे एक महान हस्ती, अत्यंत प्रभावशाली, सक्षम व अत्यंत धार्मिक वृत्ती की नारी से अवगत कराया और मेरे लिए एक भाग्यशाली मौका था।

मध्यप्रदेश स्थित इंदौर एक जानी मानी Tourist Place है। मालवा Plateau में बसा इंदौर शहर मध्यप्रदेश का सबसे बडा शहर है।

इंदौर शहर और उसके आजुबाजूका इलाका देवी अहिल्याबाई होलकर की पुरी पहचान है। इंदौर शहर में बसा होलकर राजवाडा आज भी देवि अहिल्याबाई होलकर के कर्त्तृत्व की साक्ष देता हुआ हमें ए आगाज कराता है कि उस जमाने भी ऐसी नारी थी जिन्होंने समाज वृद्धींगत करने के लिए आनी जिंदगी कुर्बान कर दी थी। उनकी जीवनगाथा एवम् कर्तृत्व देखकर मुझे उनके बारे में दो शब्द लिखने की प्रेरणा हुई।

अहिल्याबाई एक विलक्षण प्रतिभा संपन्न नारी थी। अहिल्याबाई का जन्म सन 1725 में चौंडी गाव के पटेल माणकोजी शिंदे के यहां हुआ था। चौंडी महाराष्ट्र में अहमदनगर के पास सीना नदी के किनारे पर बसा है। उनके पिता माणकोजी शिंदे एक साधारण गृहस्थ थे । वे बड़े सात्विक सरल व धर्मपरायण व्यक्ति थे। उस युग की अन्य लड़कियों के समान अहिल्याबाई को भी कोई विद्यालयी शिक्षा नहीं मिली थी। उन दिनों आज जैसा न तो शिक्षा का प्रचार था और न इतने विद्यालय थें। उनके गांव चौंडी में भी कोई स्कूल न था। फिर तब लड़कियों को पढ़ाने की प्रथा भी नहीं थी। घर पर ही उनकी दूनिया थी। पर उनके पिताजी ने घर से ही अहिल्याबाई को लिखना - पढना सिखाया व कुछ धर्म-ग्रंथ भी पढ़ाए थे। धार्मिक ग्रंथों में व घर के कामकाज में बचपन से ही उन्हें बड़ी रूचि थी। उनकी माता सुशीला बडी ही विदुषी धर्मात्मा व कर्त्तव्य परायण महिला थीं। पूजा-पाठ कर कथा भागवत सुनना उनका नित्य का काम था।

माता-पिता के परम धार्मिक, सरल-सात्विक व कर्तव्यपरायण जीवन का प्रभाव अहिल्याबाई के जीवन पर स्थाई रूप से पड़ा था। बचपन के श्रेष्ठ संस्कारों के कारण ही अहिल्याबाई इतनी महान बनकर स्मरणीय कार्य कर सकी थीं। ईश्वर में उनकी अविचल श्रद्धा थी जो जीवन भर बनी रही।

चौंडी गांव में अति प्राचीन भगवान शंकर का एक छोटा मंदिर था जहा रोज शाम भगवान की आरती हुआ करती थी। ऐसेही एक श्याम शंख घड़ियाल के ध्वनी के साथ भगवान शंकर की आरती हो रही थी। मंदिर में पवित्रता व सरलता का वातावरण छाया हुआ था। मंदिर में गांव वे कुछ निवासी एकत्रित थे तथा कुछ यात्री भी थे जो शत भर ठहरकर आगे बढ़ जाने वाले थे। मंदिर में उपस्थित यात्रियों में पेशवा के प्रतापी सेनापती मल्हारराव होलकर व उनके कुल सहायक थे। उन्होंने देखा की एक बालिका, अपने हाथों में पूजा सामग्री की थाली लेकर, बड़ी श्रद्धापूर्वक आरती करते हुए और आरती के पश्चात शिवजी पर पुष्प चढाए, दीपक रखा व श्रद्धा भक्तिपूर्वक हाथ जोड़कर वहां खड़ी हो गई। उसमें कुछ ऐसा साात्विक आकर्षण था कि सबकी आंखे उस पर स्थित हो गई। वह ऐसी दिखाई दे रही थी मानो सरलता, भक्तित्व पवित्रता की मूर्ति ही हो। उस तेजस्वी बालिका को देखने के बाद मल्हारराव के मन में कुछ और ही योजनाएं बनने लगी थी।

उस बालिका की धर्मपरायणता, शील व विनम्रता पर मल्हारराव मुग्ध हो गए थे। उसके मुख मंडल पर एक अपूर्व गंभीरता व तेज था। उसकी आखों में बड़ी गहराई व शाति थी। केवल आठ वर्ष की आयु में ही उसमें कितनी प्रौढ़ता, शालीनता व मर्यादा थी। मल्हारराव ने बालिका अहिल्या को देखा और एक महत्वपूर्ण निर्णय भी कर लिया। उन्होंने अहिल्या को अपनी पूत्रवधू बनाने के संकल्प मंदिर में ही कर

लिया। इतिहास साक्षी है कि जिस दिन अहिल्याबाई ने होलकर वंश की देहरी में अपने चरण रखें उसी दिन से होलकरो के वैभव में उत्तरोत्तर वृद्धि ही होती रही । केवल नौ वर्ष के उम्र में विवाह होकर अहिल्याबाई ससुराल आई। इतनी कम उम्र में भी बुद्धि और समझदारी की उनमें कमी नहीं थी । अपने सद्‌गुणों व मधुर व्यवहार के कारण ससुराल में वे सबकी प्रिय बन गई। सास-ससुर को माता-पिता के समान मानकर उनकी सेवा व आदर करती थी। अहिल्याबाई उनके घर पर आई थी, उसी दिन से उनका वैभव, प्रभाव व राज्य का विस्तार भी बढ़ता ही जा रहा था। अहिल्याबाई के पति खण्डेराव के जीवन में भी सुखद परिवर्तन होने लगे थे। मल्हारराव के अनुपस्थिती में राज्य का सारा कार्य अहिल्याबाई ही बड़ी सफलता से संचालित करती थीं। सच्चें अर्थों में वे एक आदर्श हिंदू नारी थीं। राज्य के अधिकारी व प्रजा भी उनकी व्यवस्था से पूर्ण संतुष्ट व सुखी थे। वे कई बार युद्ध क्षेत्रों में भी गई थी। वहां उन्होंने बड़ी बुद्धिमानी व अदम्य साहस के साथ समस्त कार्यों में सफलतापूर्वक भाग लिया था। युद्ध से संबंधित अनेक छोटी-मोटी बातों का उन्हें ज्ञान था। एक अच्छे शासक बनने हेतु देश की भौगोलिक, सामाजिक व राजनितिक स्थितीयाँ जानने और व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने हेतु अहिल्याबाई घोडे पर बैठकर सारी यात्राए करती थी। वे ही राज्य का लगान वसून करती, शासन संभालती, न्याय करती और राज्य के लिए आवश्यक धन, सेना, गोला-बारूद, रसद, तोप, बैल, चाराबंदी आदि की भरपूर व्यवस्था करती थी।

तत्कालीन मराठा साम्राज्य के एक प्रमुख निर्माता व शक्तिशाली सेनापति मल्हारराव की शिक्षा दीक्षा के कारण अहिल्याबाई ने एक अच्छे व सफल शासक के लिए आवश्यक कई गुणों व विशेष लोगों को आत्मसात कर लिया था। वह अमूल्य पूंजी अनेक भावी जीवन के लिए बड़े काम की सिद्ध हुई थी।

पति खण्डोबा, पुत्र मालेराव व ससुर मल्हारराव के मृत्यु के बाद अहिल्याबाई बहुत दुखी हो गई थी। मन शांती के लिए उन्होंने नर्मदा के किनारे महेश्वर में अपनी राजधानी व निवास स्थान बना लिया । जीवन के अंतिम क्षणों तक पुरे तीस वर्ष वे अधिकतर महेश्वर में ही रही । इस अवधी में महेश्वर ने बहुत अधिक प्रगति की । अहिल्याबाई ने महेश्वर के प्राचिन व गौरवपूर्ण इतिहास में कुछ स्वर्णिम पृष्ठ और जोड़ दिए ।

सन 1795, अगस्त का महिना, 13 तारीख महेश्वर का उनका घर, उस दिन अहिल्याबाई जैसे जान गई थी कि उनका अंतिम समय अब दूर नही है। सावन का महिना था। उन्होंने बारह हजार ब्राह्मणों के भोजन का संकल्प छोडा बहुत सा दान धर्म किया। फिर सब तरफ से मन हटाकर अपना सारा ध्यान भगवान के चरणों में केंद्रित कर आँखे मूंद कर वे भगवान का स्मरण करने लगी। और कुछ क्षणों के बाद बड़ी ही शांति से उन्होंने प्राण-त्याग दिए।

आज भी हमें अहिल्याबाई के कर्तृत्व से निर्मित नर्मदा तट पे बेहतरीन धाटा महेश्वर में देखने को मिलते है, जीसमें यात्री लोग नौकायन कर सकते है। धन्य हो उस देवी की जिनके कारण हमें प्राकृतिक सुंदरता, नर्मदा घाट जो इतना प्रभावशाली व सुंदर बनाया की हर एक यात्री गण देखते ही दंग रह जाता है। महेश्वर गांव जिस गांव में हर घर में महेश्वरी साडी की बुनाई होती है, हमारी धरोहर की याद दिलाती है। ऐश्वर्य होने के बावजूद भी उन्होंने अपना जीवन समाज के लोगों के लिए समर्पित किया यह अपने आप में एक बहुत बड़ी मिसाल है। हमने उनके जिवन से प्रेरणा लेनी चाहिए, उनका जिवन ही समस्त लोगों के लिए व जिता-जागता संदेश है। जिवन में मोक्ष पाना है तो अपना जिवन दुसरोंप्रेती समर्पण और सभी के प्रति दया, प्रेम, करूणा होना चाहिए।

यही कारण है कि समस्त जनता ने उन्हें देवी की उपाधी दी। महेश्वर में मंदिर, घाट, किला, छत्रियां नर्मदा का पाट आदि दर्शनिय स्थाकों की कमी नहीं है पर वहा सबसे दर्शनीय स्थान देवी अहिल्यादेवी का निवास स्थान है। संसार भर के किसी भी राजा या रानी का निवास स्थान इतना छोटा सरल-साधारण नहीं होगा, जितना देवी का है। अहिल्याबाई एक वैभव संपन्न राज्य की सर्वशक्तीमान महारानी थी, पर उनका निवास स्थान कोई विशाल व गगनचुंबी राजमहल नहीं है। अहिल्याबाई के महान जीवन के समान ही उनका यह निवास स्थान अत्यंत सरल, साधारण, प्रेरक, महान व दर्शनीय है। भारत की आत्मा व संदेश के दर्शन महेश्वर स्थित अहिल्याबाई के घर में सहज ही होते हैं।

सिंधुताई सपकाल

जयश्री अडाणे
छात्रावास अनुभाग

सिंधुताई सपकाल अनाथ बच्चों के लिए समाजकार्य करनेवाली मराठी समाजकार्यकर्ता है। उन्होंने अपने जीवन में अनेक समस्याओं के बावजूद अनाथ बच्चों को सम्भालने का कार्य किया है।

सिंधुताई का जन्म 14 नवम्बर, 1948, महाराष्ट्र के वर्धा जिले में 'पिंपरी मेघे' गॉव में हुआ। उनके पिताजी का नाम 'अभिमान साठे' है, जो कि एक चरवाह (गाय भैस चरानेवाला) थे। क्योंकि वे घर में नापसंद बच्ची (क्योंकि वे एक बेटी थी, बेटा नही) थी। इसलिए उन्हें घर में 'चिंधी' (कपडे का फटा टुकडा) बुलाते थे। परन्तु उनके पिताजी सिन्धु को पढ़ाना चाहते थे। इसलिए वे सिन्धु कि माँ के खिलाफ जाकर सिंधु को पाठशाला भेजते थे। माँ का विरोध और घर की आर्थिक परिस्थितीयों की वजह से सिंधु की शिक्षा में बाधाएँ आती रही। आर्थिक परिस्थिती, घर की जिम्मेदारियाँ और बालविवाह इन कारणों की वजह से उन्हें पाठशाला छोडनी पड़ी तब वे चौथी कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण हुई।

जब सिंधुताई दस साल की थी तब उनकी शादी तीस वर्षीय 'श्रीहरी सपकाल' से हुई। जब उनकी उम्र बीस साल की थी तब वे तीन बच्चों की माँ बनी थी। गावबालों को उनकी मजदुरी के पैसे ना देनेवाले गाँव के मुखिया की शिकायत सिंधुताई ने जिल्हा अधिकारी से की थी। अपने इस अपमान का बदला लेने के लिए मुखियाने श्रीहरी (सिंधुताई के पती) को सिंधुताई को घर से बाहर निकालने के लिए प्रवृत्त किया। जब उनके पती ने उन्हें घर से बाहर निकाला तब वे नौ महिने की पेट से थी। उसी रात उन्होंने तबेले में (गाय-भैसों के रहने की जगह) में एक बेटी को जनम दिया। जब वे अपनी माँ के घर गयी तब उनकी माँ ने उन्हें घर में रहने से इनकार कर दिया। (उनके पिताजी का देहांत हुा था वरना वे अवश्य अपनी बेटी को सहारा देते) सिंधुताई अपनी बेटी के साथ रेल्वे स्टेशन पे रहने लगी। पेट भरने के लिए भीक माँगती और रात को खुद को और बेटी को सुरक्षित रखने हेतू शमशान रहती। उनके इस संघर्षमय काल में उन्होंने यह अनुभव किया कि देश में कितने सारे अनाथ बच्चे है जिनको एक माँ की जरूरत है। तब से उन्होंने निर्णय लिया कि जो भी अनाथ उनके पास आएगा वे उनकी माँ बनेंगी। उन्होंने अपनी खुद की बेटी को 'श्री दगडुशेठ हलवाई, पुणे, महाराष्ट्र ट्रस्ट' में गोद दे दिया ताकि वे सारे अनाथ बच्चों की माँ बन सकें।

सिंधुताई ने अपना पुरा जीवन अनाथ बच्चों के लिए समर्पित किया है। इसलिए उन्हें "माई" (माँ) कहा जाता है। उन्होंने 1050 (एक हजार पचास) अनाथ बच्चों को गोद लिया है। उनके परिवार में आज 207 दामाद और 36 बहुएँ है। एक हजार से भी ज्यादा पोते-पोतियाँ है। उनकी खुद की बेटी वकील है। और उन्होंने गोद लिए बहुत सारे बच्चे आज डॉक्टर, अभियंता, वकील है और उनमें से बहुत सारे खुद का अनाथआश्रम भी चलाते है। सिंधुताई को कुल 273 राष्ट्रीय और आंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए है। जिनमें 'अहिल्याबाई होळकर' पुरस्कार है जो महिला और बच्चों के लिए काम करनेवाले समाजकार्यओं को मिलता है। महाराष्ट्र राज्य सरकार द्वारा यह पुरस्कार दिया जाता है। यह सारे पैसे वे अनाथाश्रम के लिए इस्तेमाल करती है। उनके अनाथाश्रम पुणे, वर्धा, सासवड (महाराष्ट्र) में स्थित है। 2010 साल में सिंधुताई के जीवन पर आधारित मराठी फिल्म बनायी गयी 'सिंधुताई सपकाळ' जो 54 वें लंडन चित्रपट महोत्सव के लिए चुनी गयी थी।

सिंधुताई के पती जब 80 साल के हो गये जब वे उनके साथ रहने के लिए आए। सिंधुताई ने अपने पती को एक बेटे के रूप में स्वीकार किया ये कहते हुए कि अब वो सिर्फ एक मां है। आज वे बडे गर्व के साथ बताती है कि वो (उनके पती) उनका सबसे बडा बेटा है। सिंधुताई कविता भी लिखती है । और उनकी कविताओं में जीवन का पूरा सार होता है। वे अपनी माँ के आभार प्रकट करती है क्यों कि वे कहती है अगर उनकी माँ ने उनको पती के घर से निकालने के बाद घर में सहारा दिया होता तो आज वो इतने सारे बच्चों की माँ नही बन पाती। सिंधुताई ने अन्य समकक्ष संस्था की स्थापना की वह निम्नलिखित है।

- बाल निकेतन हडपसर, पुणे
- सावित्रीबाई फुले लडकियों का वसतिगृह, पुणे
- चिखलदरा अभिमान बाल भवन
- वर्धा गोपिका गाईरक्षण केंद्र
- वर्धा (गोपालन) ममता बाल सदन
- सासवड सप्तसिंधु महिला आधार बालसंगोपन व शिक्षणसंस्था, पुणे

आंरतराष्ट्रीय स्तर पर सिन्धुताई ने अपनी संस्था के प्रचार के लिए और कार्य के लिए निधी संकलन करने के हेतु से प्रदेश दौरे किए। आंतरराष्ट्रीय मंचपर उन्होंने अपनी वाणी और काव्य से समाज को प्रभावीत किया है। विदेशी अनुदान आसानी पूर्वक मिले इस उद्देश्य से उन्होंने 'मदर ग्लोबल फाउंडेशन संस्था' की स्थापना की।

सिंधुताई को कुल 273 पुरस्कार मिले। अहिल्याबाई होळकर पुरस्कार (महाराष्ट्र राज्य द्वारा) राष्ट्रीय पुरस्कार "आयकौनिक मदर", सह्याद्री हिरकणी पुरस्कार, राजाई पुरस्कार शिवलीला महिला गौरव पुरस्कार, दत्तक माता पुरस्कार, रियल हिरोज पुरस्कार (रिलायन्स द्वारा) गौरव पुरस्कार, सिंधुताई को लगभग 750 राष्ट्रीय और आंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले है।

इतने सारे पुरस्कार पानेवाली माता को हमारा कोटी कोटी प्रणाम !!!

कुछ आँखे जो कभी सोयी नहीं, बचपन की मासूमियत जिसने बोयी नहीं
चाँद को बनाया सिरहना,
तारों की टिमटिमाहट का ओढ़ा वो बिछौना,
हर कसबे, हर कोने में रोते हुए वो 'अनाथ',
किलकारियों की जगह लेने लग गए भीख माँगते नन्हें हाथ,
"वर्धा महाराष्ट्र" से जन्मी एक मायी
थी वो कलियुग की मणिकर्णिका नाम है उनका "सिंधुताई"
जीवन उनका आरम्भसे था यूं कठोर
लढ़ के, मर के जीता उसने हर बादल घनघोर
आज वो हजारों अनाथों का आश्रय है माता है
इस युग में इंसानियत की मिसाल देनी वाली
वो अतुलनीय सत्यता है।
हाँ वो एक मिसाल है, पढ़ो उस धात्री को, वो ऐसी अमुल्य गाथा है,
हाँ वो "सिंधुताई" दुर्गा की एक अलग कथा है।
हमारे जीवन का सबेरा निश्चित है, बस जीना सीख लों।

– सिंधुताई सपकाल

सावित्रीबाई फुले

मिनाक्षी भिवगडे (भाले)
नेटवर्क सेंटर

हमारे संस्था में इस बार ''प्रेरणा'' विशेषांक महिलाओं के कार्य को समर्पित किया गया है। इसलिए मैं थोडा सावित्रीबाई फुले जी के बारे में कुछ कहना चाहुँगी । जिन्होंने महाराष्ट्र में जन्म लिया था। और महिलाओं के जीवन के लिए बहुत कुछ किया। आज महिलाएँ जो अपने क्षेत्र में नाम कमा रही है या फिर इसके पहले जिन्होंने 18वी, 19 वी शताब्दी में कमाए है (भारतीय नारी महाराष्ट्रीयन) वे सब कही ना कहीं सावित्रीबाई फुले जी की वहज से ही है।

सावित्रीबाई फुले जी एक अग्रणी समाज सुधारक, शिक्षिका व कवयित्री का शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए सलाम किया जाता है। सावित्रीबाई फुले जी का जन्म 3 जनवरी 1831 में हुआ था। उनकी शादी नौ साल की उम्र में श्री ज्योतिरावफुले जी के साथ हुई। शादी के बाद जब वह ससुराल आयी तब उन्होंने लड़कियों की दुर्दशा देखी। उस मंडार को देखने के बाद वो बहुत व्यवस्थित हुई और उसी से प्रेरित होकर उन्होंने अपने पति के साथ मिलकर 1848 में पहली महिला स्कुल शुरू किया । हालांकि शुरूवात में बहुत कम याने की केवल 9 ही लड़कियां उन्हें मिली । लेकिन धीरे धीरे यह संस्था बढ़ने लगी।

उन्होंने गर्भवती बलात्कार पीडिताओं के लिए बालहत्या प्रतिभा खंड गृह केंद्र भी खोला और उनके बच्चों को वहाँ पहुचाने के लिए मदद भी की थी। उन्होंने कई सामाजिक सुधार लाए और कईयों की मानसिकता को भी बदल दिया था। उन्होंने विधवाओं पर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ भी लढ़ाई लढी और महिलाओं के अत्याचार के खिलाफ भी लढ़ी। इसलिए उन्हें नारी वादी महिला से भी जाना जाता है।

नवंबर 1890 में जब उनके पति का देहांत हुआ तो उन्होंने अपने पति की अंतिम यात्रा का नेतृत्व किया था। शायद उन्नीसवी शताब्दी के भारत में यह पहली बार था जब महिला ने मृत्यु संस्कार किया था।

जब 1897 में पुणे के आसपास के क्षेत्र में प्लेग दिखाई दिया तो सावित्रीबाई फुले और उनके दत्तक पुत्र यशवंत ने बुबोनिक प्लेग के तीसरे महामारी से प्रभावित लोगों के इलाज के लिए एक क्लिनीक खोला था। अपने रोगियों की देखभाल करते हुए सावित्रीबाई जी ने खुद को बिमारी का अनुबंध किया और 10 मार्च 1897 को एक प्लेग रोगी की सेवा करते हुए मृत्यु हो गई।

जैसा कि पहले कहा था वह एक साहित्यक और कवयित्री भी थी। उनके कई लेख प्रकाशित हुए है उनमें से कुछ है –काव्यफुले, बावनकशी, सुबोध रत्नाकर और कुछ गीत भी थे।

1998 में सावित्रीबाई फुले जी के सम्मान में इंडिया पोस्ट द्वारा एक डाक टिकट जारी किया गया था। पुणे विश्वविद्यालय का नाम बदल कर उनके नाम पर रखा गया है। अब सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है।

सावित्रीबाई फुले महिला सशक्तीकरण के लिए एक योद्धा थी। बिना कोई भेदभाव किये उन्होंने समस्त नारी वर्ग के लिए आजीवन महान कार्य किया।

सावित्रीबाई फुले को प्रोत्साहन और प्रेरित करने वाले मा. श्री ज्योतिराव फुले जी है जो स्वयं एक महान समाज सुधारक रहे है। इन्हीं की कदमों पर चलते हुए उन्होंने उनके लिखे हुए कई भाषणों को भी प्रकाशित किया था।

बहुत से लोग आज भी उन्हें शिक्षा की देवी भी कहते है। यह सावित्रीबाई फुले जी के बारे में संक्षिप्त में जानकारी दी गई है। सावित्रीबाई फुले जी की जानकारी पुरे विस्तार से गुगल पर या उनके किताबें पढ़कर भी जानी जा सकती है।

इंदिरा गांधी

मनिषा सुजीत चेपे
शैक्षीक अनुभाग

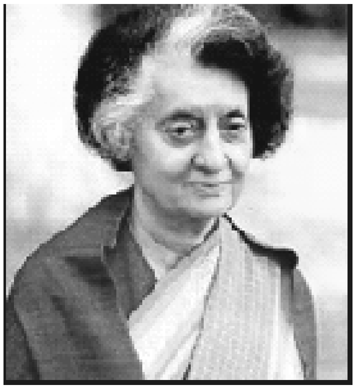

जन्म : 19 नवम्बर 1917, इलाहाबाद, यूनाइटेल प्रोविंस

मृत्यु : 31 अक्टूबर, 1984, नई दिल्ली

इंदिरा गांधी भारत की चौथी और प्रथम महिला प्रधानमंत्री थी। वो एक ऐसी महिला थी जिसने न केवल भारतीय राजनीति बल्कि विश्व राजनीति के क्षितिज पर भी विलक्षण प्रभाव छोडा। इसी कारण उन्हें लोह महिला के नाम से भी संबोधित किया जाता है। वह भारत के पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की इकलौती संतान थी और नेहरू के प्रधानमंत्री रहते ही उन्होंने सरकार के अन्दर अच्छी पैठ बना ली थी। वे अपनी प्रतिभा और राजनीतिक दृढ़ता के लिए इंदिरा गांधी को भारतीय इतिहास में हमेशा जाना जायेगा।

प्रारंभिक जीवन

उनका पूरा नाम 'इंदिरा प्रियदर्शिनी' था। उनके पिता जवाहरलाल नेहरू और दादा मोतीलाल नेहरू थे। जवाहरलाल और मोतीलाल दोनों सफल वकील थे और दोनों ने ही स्वतंत्रता संग्राम में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इंदिरा की माता का नाम कमला नेहरू था। उनका परिवार आर्थिक एवं बौद्धिक दोनों दृष्टि से बहुत संपन्न था। उनके दादा मोतीलाल नेहरू ने उनका इंदिरा नाम रखा था।

इंदिरा दिखने में अत्यंत प्रिय थी इसलिए पंडित नेहरू उन्हें 'प्रियदर्शिनी' के नाम से पुकारते थे। माता-पिता का आकर्षक व्यक्तित्व इंदिरा को विरासत के रूप में मिला था। इंदिरा गांधी को बचपन में एक स्थिर पारिवारीक जीवन नहीं मिल पाया था क्योंकि पिता हमेशा स्वतंत्रता आंदोलन में व्यस्त रहे और जब वह 18 वर्ष की थी तब उनकी मां कमला नेहरू भी तपेदिक के से चल बसी।

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में अध्ययन के दौरान इनकी मुलाकात फिरोज गांधी से अक्सर होती थी, जो लंदन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स में अध्ययन कर रहे थे। फिरोज को इंदिरा इलाहाबाद से ही जानती थी। भारत वापस लौटने पर दोनों का विवाह 16 मार्च 1942 को आनंद भवन, इलाहाबाद में हुआ।

स्वतंत्रता आंदोलन में भागीदारी

इंदिरा ने बचपन से ही अपने घर पर राजनैतिक माहौल देखा था। उनके पिता और दादा भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से एक थे। इस माहौल का प्रभाव इंदिरा पर भी पडा। उन्होंने युवा लड़के-लड़कियों के मदद से एक वानर सेना बनाई जो विरोध प्रदर्शन और झंडा जुलूस के साथ-साथ संवेदनशील प्रकाशनों तथा प्रतिबंधित सामग्रीओं का परिसंचरण भी करती थी। लंदन में अपनी पढ़ाई के दौरान भी वो 'इंडियन लीग' की सदस्य बनी। इंदिरा ऑक्सफोर्ड से सन 1941में भारत वापस लौट आयी। आने के बाद वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गयी। स्वातंत्रता आंदोलन के दौरान उन्हें सितम्बर 1942 में गिरफ्तार कर लिया गया जिसके बाद सरकार ने उन्हें मई 1943 में रिहा किया।

राजनैतिक जीवन

अंतरिम सरकार के गठन के साथ जवाहरलाल नेहरू कार्यवाहक प्रधानमंत्री बना दिए थे। इसके बाद नेहरू की राजनैतिक सक्रियता और अधिक बढ़ गई। त्रिमूर्ति भवन स्थित नेहरूजी के निवास पर सभी आगंतुकों के स्वागत का इंतजाम इंदिरा द्वारा ही किया जाता था। इसके साथ-साथ उम्रदराज हो रहे पिता की आवश्यकताओं को देखने की जिम्मेदारी भी इंदिरा पर ही पड गयी। वह पंडित नेहरू की विश्वस्त, सचिव और नर्स बनी।

इंदिरा को परिवार के माहौल में राजनीतिक विचारधारा विरासत में प्राप्त हुई थी और पिता की मदद करते करते उन्हें राजनीति की भी अच्छी समझ हो गयी थी। काँग्रेस पार्टी की कार्यकारिणी में इन्हें सन 1955 में ही शामिल कर लिया गया था। पंडित नेहरू इनके साथ राजनैतिक परामर्श करते थे और उन पर अमल भी करते थे। धीरे-धीरे पार्टी में इंदिरा का कद बढ़ता गया और मात्र 42 वर्ष की उम्र में सन 1959 में वह काँग्रेस की अध्यक्ष भी बन गई। नेहरू के इस फैसले पर कई लोगों ने उनपर पार्टी में परिवारवाद फैलाने का आरोप भी लगाया पर पंडित नेहरू की सक्शियत इतनी बड़ी थी की इन बातों को ज्यादा तूल नहीं मिला। सन 1964 में नेहरू के निधन के बाद इंदिरा चुनाव जीतकर शास्त्री सरकार में सूचना और प्रसारण मंत्री के तौर पर आकाशवाणी के कार्यक्रमों को मनोरंजक बनाया तथा उसमें गुणात्मक वृद्धि भी की। 1965 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान आकाशवाणी ने राष्ट्रीयता की भावना को मजबूत करने में अतुलनीय योगदान दिया। इंदिरा गांधी ने युद्ध के दौरान सीमाओं पर जाकर जवानों का मनोबल ऊँचा किया और अपने नेतृत्व के गुण को दर्शाया।

प्रधानमंत्री पद पर

इंदिरा गांधी 4 बार भारत की प्रधानमंत्री रही लगातार तीन बार (1966-1977) और फिर चौथी बार (1980-1984)

1) सन 1966 में भारत के भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री की अकस्मात मृत्यु के बाद श्रीमती इंदिरा गांधी भारत की प्रधानमंत्री चुनी गयी।
2) 1967 के चुनाव में वह बहुत ही कम बहुमत से जीत पायी और प्रधानमंत्री बनीं।
3) सन 1971 में एक बार फिर भारी बहुमत से वे प्रधानमंत्री बनी और 1977 तक रहीं।
4) 1980 में एक बार फिर प्रधानमंत्री बनी और 1984 तक प्रधानमंत्री के पद पर रहीं।

लालबहादुर शास्त्री की मृत्यु के बाद काँग्रेस के अध्यक्ष के कामराज ने इंदिरा का नाम प्रधानमंत्री पद के लिए सुझाया पर वरिष्ठ नेता मोरारजी देसाई ने भी प्रधानमंत्री पद के लिए स्वयं का नाम प्रस्तावित कर दिया। काँग्रेस संसदीय पार्टी द्वारा मतदान के माध्यम से इस गतिरोध को सुलझाया गया और इंदिरा गांधी भारी मतों से विजयी हुई। 24 जनवरी, 1966 को इंदिरा गांधी ने प्रधानमंत्री पद का शपथ ग्रहण किया। सन 1967 के चुनाव में काँग्रेस को बहुत नुकसान हुआ पर पार्टी सरकार बनाने में सफल रही। उधर मोरारजी देसाई के नेतृत्व में एक खेमा इंदिरा गांधी का निरंतर विरोध करता रहा जिसके परिणाम स्वरूप सन 1969 में काँग्रेस का विभाजन हो गया।

आपातकाल - (1975-1977)

सन 1971 के चुनाव में इंदिरा गांधी को भारी सफलता मिली थी और उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में विकास के नए कार्यक्रम भी लागू करने की कोशिश की थी पर देश के अंदर समस्याएं बढ़ती जा रही थी। महंगाई के कारण लोग परेशान थे। युद्ध के आर्थिक बोझ के कारण भी आर्थिक समस्याएं बढ़ गयी थी। इसी बीच सूखा और अकाल ने स्थिती और बिगाड़ दी। उधर अंतर्राष्ट्रीय बाजार में पेट्रोलियम बढ़ती कीमतों से भारत में महंगाई बढ़ रही थी। और देश का विदेशी मुद्रा भंडार पेट्रोलियम आयात करने के कारण तेजी से घटता जा रहा था। कुल मिलकर आर्थिक मंदी का दौर चल रहा था। जिसमें उद्योग धंधे भी चौपट हो रहे थे । बेरोजगारी भी काफी बढ़ चुकी थी और सरकारी कर्मचारी महंगाई से त्रस्त होने के कारण वेतन वृद्धि की मांग कर रहे थे। इन सब समस्याओं के बिच सरकार पर भ्रष्टाचार के आरोप भी लगने लगे।

जनवरी 1977 में लोकसभा चुनाव कराए जाने की घोषणा की और इसके साथ ही राजनैतिक कैदियों की रिहाई हो गई। मीडिया की स्वतंत्रता फिर से बहाल हो गई और राजनीतिक सभाओं और चुनाव प्रचार की आजादी दे दी गई। अब जनता का समर्थन विपक्ष को मिलने लगा जिससे विपक्ष अधिक सशक्त होकर सामने आ गया। जनता पार्टी के रूप में एक जुट विपक्ष और उसके सहयोगी दलों को 542 में से 330 सीटें प्राप्त हुई जबकि इंदिरा गांधी की काँग्रेस पार्टी मात्र 154 सीटें ही हासिल कर सकी।

सत्ता में वापसी - 81 वर्षीय मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी ने 23 मार्च 1977 को सरकार बनायी पर यह सरकार शुरूआत से ही आंतरिक कलह से जूझती रही और अंततः अंर्तकलह के कारण अगस्त 1979 में यह सरकार गीर गई। जनता पार्टी के शासनकाल में इंदिरा

गांधी पर अनेक आरोप लगाए गए और कई कमीशन जांच के लिए नियुक्त किए गए। उन पर देश की कई अदालतों में मुकदमें भी दायर किए गए और सरकारी भ्रष्टाचार के आरोप में श्रीमती गांधी कुछ समय तक जेल में भी रहना पडा।

तक तरफ जनता पार्टी के अंर्तकलह के कारण उनकी सरकार सभी मोर्चो पर विफल हो रही थी और दूसरी ओर इंदिरा गांधी के साथ हो रहे व्यवहार के कारण जनता को इंदिरा गांधी के साथ सहानुभूति बढ़ रही थी।

जनता पार्टी सरकार चलाने में असफल रही और देश को मध्यावधि चुनाव का भार झेलना पडा। इंदिरा गांधी ने आपातकाल के लिए जनता से माफी मांगी जिसके परिणामस्वरूप उनकी पार्टी को 592 में से 353 सीटें प्राप्त हुई और इंदिरा गांधी पुनः प्रधानमंत्री बन गई।

ऑपरेशन ब्ल्यू स्टार और हत्या -1984

भिंडरवाले के नेतृत्व में पंजाब में अलगाववादी ताकते सिर उठाने लगी भिंडरवाले को ऐसा लगने लगा था कि अपने नेतृत्व में वें पंजाब का अलग अस्तित्व बना लेगा। स्थिती बहुत बिगड़ गयी थी और ऐसा लगने लगा था कि नियंत्रण अब केंद्र सरकार के हाथ से भी निकलता जा रहा था। दुसरी और भिंडरवाले को ऐसा लगने लगा था वह हथियारों के बल पर अलग अस्तित्व बना सकता था।

ऑपरेशन ब्ल्यू स्टार के पाँच महीने बाद ही 31 अक्टूबर 1984 को इंदिरा गांधी के दो सिक्ख अंगरक्षकों ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी।

गुलज़ार ने कितनी खूबसूरती से बता दिया जिंदगी क्या हैं।

कभी तानों में कटेगी,
कभी तारीफों में;
ये जिंदगी है यारों,
पल पल घटेगी !!

पाने को कुछ नही
ले जाने को कुछ नहीं;
फिर भी क्यों चिंता करते हो,
इससे सिर्फ खूबसूरती घटेगी,
ये जिंदगी है यारों पल-पल घटेगी !

बार-बार रफू करता रहता हूँ,
...जिन्दगी की जेब !!
कम्बखत फिर भी,
निकल जाते हैं...,
खुशियों के कुछ लम्हें !!

ज़िन्दगी में सारा झगड़ा ही...
ख़्वाहिशों का है !!
ना तो किसी को गम चाहिए,
ना ही किसी को कम चाहिए !!

खटखटाते रहिए दरवाजा...,
एक दूसरे के मन का;
मुलाकातें ना सही,
आहटें आती रहनी चाहिए !!
उड़ जाएंगे एक दिन ...,
तस्वीर से रंगों की तरह !
हम वक्त की टहनी पर...,
बेठै हैं परिंदों की तरह !!
बोली बता देती है, इंसान कैसा है !
बहस बता देती है, ज्ञान कैसा है !
घमण्ड बता देता है, कितना पैसा है !
संस्कार बता देते है, परिवार कैसा है !!

ना राज़ है... ‘ज़िन्दगी’,
ना नाराज़ है... ‘ज़िन्दगी’;
बस जो है, वो आज है, ज़िन्दगी !

जीवन की किताबों पर,
बेशक नया कवर चढ़ाइये;
पर...बिखरे पन्नों को,
पहले प्यार से चिपकाइये !!

राकेश विश्वकर्मा
कनिष्ठ सहायक
निदेशक कार्यालय
व्ही.एन.आय.टी., नागपुर

पदम्श्री कमलाबाई होस्पेट

सीमा नाईकवाडे
धातुशास्त्र विभाग

हम अगर स्वयं को बदल ले, बेहतर बना ले तो समस्त समाज के लोगों को इसी बेहतर जीवन जीने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

ऐसे ही अपने सेवाकार्य के जुनन से महिला के प्रति सबसे आवश्यक सुविधा 'प्रसुतीगृह' का नागपुर में निर्माण किया कमलाबाई होस्पेट ने सन 1921 स्वतंत्रता पूर्व भारत में प्रसुतीगृह के प्रति असमज, अशिक्षित समाज, उदासीनता, उपहास और अविश्वास के परिस्थिति में 'प्रसुतीगृह' का निर्माण करना कोई सहज काम नहीं था । वो भी एक स्त्री द्वारा इतम्य महान सामाजिक कार्य करनेवाली ममता नयी कमलाबाई एक सामान्य परिवार से थी।

कमलाबाई का जन्म महाराष्ट्र में खानदेश के शिरपूर गाव में 23 में 1896 को हुआ। कमलाबाई यमुना कृष्णाजी मोहनी – इनके पिता पोलीस खाते में थे। यमुना का सिर्फ प्रायमरी शिक्षण हुआ था। माता ने सन 1909 में परिवार को संभालते हुए सन सिर्फ-- साल के यमुना का विवाह गुरूराव होस्पेट से कराया । और यमुना का नाम कमलाबाई होस्पेट हुआ। शादी के दो साल बाद उनके पति का निधन हुआ। 15 साल के इस लडकी के सामने जिंदगी का पूरा अंधकार अशिक्षित, असंस्कृत समाज ने किस तरह से उनकी प्रतारणा की होगी यह सोचते ही रोंगटे खडे हो जाते है। भारतीय समाज में नारी सदैव मुख्यधारा से अलग उपेक्षित, उत्पीडित, असहाय रही है। ऐसी विषम परिस्थिती में सन 1918-20 में कमला ने दृढ निश्चय कर नागपुर के उफीस हॉस्पिटल में परिचारिका एवं दाई (नर्सिंग और मिडवाइफरी) का प्रशिक्षण लिया। खुद पर का उनका विश्वास आन्तरिक शक्ति एवं ऊर्जा और महिला समस्या के प्रति जागरूकता के कारण 8 में 1921 में कमलाबाई होस्पेट ने नागपुर के सीताबर्डी के सुतिका गृह की स्थापना की। उनके साथ थी उनकी सहकारी परिचारिका वेणुताई नेने। लोगों के प्रोत्साहन और आर्थिक मदत से जल्द ही सुतिका गृह की एक और शाखा महाल में शुरू की।

कमलाबाई होस्पेट यही नहीं रूकी। वर्षो से उपेक्षित तिरस्कृत स्त्री की समाज की मुख्यधार के साथ जोडने के लिए विधवा और परित्यक्ता स्त्रीयों के लिए 1927 में नर्सिंग प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की । उनकी सहकारी डॉ. इंदिरा नियोगी ने उनका साथ दिया। इसके साथ वे भारत के स्वातंत्र्य संग्राम सत्याग्रही को वह भी मदत करती थी। सुतिकागृह की उपयुक्तता के कारण 11 शाखाएँ प्रांत में स्थापित की गई। तब 1954 में इस संस्था का नाम 'मातृसेवा संघ' रखा गया।

श्रीमती कमलबाई होस्पेट ने अपने संघर्षमयी जीवन से मुख्यस्थित सामाजिक संरचना बुनी । उनके द्वारा

1958 – समाजकार्य महिला महाविद्यालय

1960 – मतिमंद बच्चों के लिए नंदनवन विद्यालय

1961 – पंचवटी वृद्धाश्रम

1981 – शारिरिक दुर्बल, विकलांगो के लिए चिकित्सालय

इसके अलावां परिवार समुपदेशन केन्द्र फ्रौडिंग होम, महिला विद्यार्थी वसतिगृह, स्त्री पुरूष कामगारों के लिए वैद्यकिय सेवा केन्द्र स्थापित किए। इनके द्वारा स्थापित सभी केन्द्र मुख्यत्वे स्त्री और बच्चों के लिए कार्य में अग्रेसर है। निस्वार्थ रूप से समाज सेवा मे जुटी इस तपस्विनि को भारत सरकार ने 1961 में पद्मश्री सन्मान से सम्मानित किया। रेडक्रॉस सोसायटी द्वारा उन्हें 1959 में पुरस्कृत किया गया। 1980 में जमनालाल प्रतिष्ठान का जानकीदेवी बजाज पुरस्कार दिया गया।

FOCSI संस्था ने समाजकार्य के लिए पद्मश्री कमलाबाई होस्पेट पुरस्कार जाहीर किया है जिसने 25000/- रोख और स्मृतिचिन्ह कप समावेश है। सीताबर्डी मातृसेवा संघ में पद्मश्री कमलाबाई होस्पेट का अर्धपुतला आज भी उनके कार्य की याद दिलाता है।

"सिद्धि स्वयं मिलती है उनको जो होते कर्म सन्यासी,
समय साथ देता है उनका जो होते है श्रम के अभ्यायी
गति मंजिल तक खुद ले जाती मन का दृढ विश्वास चाहिए।"

गणितीय विज्ञान में महिलाओं के लिए अनुसंधान नेटवर्क स्थापित करता एक केंद्र : Banff इंटरनेशनल रिसर्च स्टेशन

डॉ. ज्योती सिंह
गणित विभाग

गणित के अनुसन्धान संस्थानों व विभागों में महिला प्राध्यापकों की कमी ने गणितज्ञों को नए विकल्प तलाशने की एक चुनौती दी है। एक सर्वेक्षण के आधार पर स्नातक स्तर पर 41% महिला विद्यार्थी होती है पीएचडी स्तर पर यह प्रतिशत 28% का है और संस्थानों में प्रोफेसर और असिस्टेंट प्रोफेसर पर यह प्रतिशत केवल 11% का रह जाता है महिलाओं की कम भागीदारी के अनेक सामाजिक व आर्थिक कारण हैं। एक बड़ा कारण महिलाओं के शोध समूहों व नेटवर्क की कमी का भी है। इस कमी को पूरा करने के लिए Association For Women In Mathematics जो कि 1971 में कुछ उत्साही महिला गणतिज्ञों द्वारा स्थापित एक अग्रणीय संस्था है, ने हाल ही में एक परियोजना प्रारम्भ की है इसके माध्यम से महिलाओं के लिए गणित के कई क्षेत्रों में अनुसंधान नेटवर्क का निर्माण व उसे बनाए रखने में मदद मिलेगी। इस परियोजना का उद्देश्य AWM कार्यशालाओं में अनुसंधान सहयोग (research collaborations) को बढ़ावा देकर महिलाओं के लिए अनुसंधान नेटवर्क स्थापित करना है।

Banff इंटरनेशनल रिसर्च स्टेशन के द्वारा Women In Mathematics श्रृंखला की कार्यशालों का आयोजन इसी दिशा में महिला गणितज्ञों को प्रोत्साहित करने का एक प्रयास है संयोग से इसी क्रम की एक कार्यशाला Women In Commutative Algebra के अंतर्गत मुझे भी इसमें भाग लेने का निमंत्रण प्राप्त हुआ। VNIT और उच्च गणित राष्ट्रीय आयोग के आर्थिक सहयोग से मैं इस कार्यशाला का हिस्सा बन पायी ।

Banff इंटरनेशनल रिसर्च स्टेशन (BIRS) गणितीय विज्ञान में अनुसंधान सहयोग तथा अन्तर्विषयक शोध की अनिवार्यता को बढ़ावा देने हेतु स्थापित एक केंद्र है जहाँ पर विभिन्न प्रकार की गणित (शुद्ध, एप्लाइड, कम्प्यूटेशनल और वैचारिक) तथा विभिन्न प्रेरणाओं (बौद्धिक रूप से प्रेरित या औद्योगिक रूप से प्रेरित) में समान रूचि रखने वाले लोग अनुसंधान परियोजनाओं पर काम करने के लिए शामिल होते हैं।इसकी प्रेरणा ब्लैक फॉरेस्ट के छोटे जर्मन गांव ओबेरवॉल्फ (Oberwolfach) में बसे एक स्टेशन Mathematisches Forschungsinstitut (MFO) से आयी थी जो साल भर साप्ताहिक कार्यशालाएं आयोजित करता है तथा जो दुनिया के बेहतरीन गणितीय वैज्ञानिकों को आकर्षित करता है। फ्रांस ने अस्सी के दशक में दक्षिणी फ्रांस के लुमिनी में इसी तरह के केंद्र की स्थापना की। यूरोपियन समकक्षों की प्रेरणा लेकर उत्तरी अमेरिका महाद्वीप पर कनाडा के Banff नामक जगह पर इस केंद्र की स्थापना की गयी. BIRS को विशिष्ट रूप से गणितीय संस्कृति के प्रसार में मदद करने के लिए बनाया गया है ।

Banff Centre पहले से ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उच्च संस्कृति के स्थान के रूप में मान्यता प्राप्त है। संगीत और ध्वनि, लिखित, दृश्य और प्रदर्शन कला, नेतृत्व और प्रबंधन में इसके कार्यक्रम दुनिया भर से कई सैकड़ों कलाकारों, छात्रों और बौद्धिक नेताओं को आकर्षित करते रहे हैं रचनात्मक और कल्पनाशील लोगों के साथ समृद्ध और उपजाऊ वातावरण में BIRS की उपस्थिति अद्वितीय तालमेल के अवसर प्रदान करती है।

Banff इंटरनेशनल रिसर्च स्टेशन में गणित नेटवर्क पर आयोजित होने वाले सप्ताह भर चलने वाली इन कार्यशालाओं में महिलाओं के लिए अनुसंधान सहयोग नेटवर्क (RCN) को बढ़ावा दिया जाता है, जहां कनिष्ठ और वरिष्ठ महिलाएं पूर्व-परिभाषित अनुसंधान परियोजनाओं पर काम करने के लिए एक साथ आती हैं। इन कार्यशालाओं का प्रमुख लक्ष्य कनिष्ठ और वरिष्ठ गणितज्ञों के बीच

सहयोगात्मक बातचीत को सुगम बनाना तथा महिला शोधकर्ताओं के बीच अनुसंधान प्रकाशनों और व्यावसायिक कनेक्शनों के माध्यम से महिलाओं के अकादमिक करियर को आगे बढ़ाना, और प्रारंभिक कैरियर गणितज्ञों के लिए सलाह प्रदान करना है ।

कार्यशाला आयोजन के एक वर्ष पूर्व ही 42 प्रतिभागियों का चयन कर लिया जाता है। प्रतिभागी के चयन में ऐसे लोगों को तरज़ीह दी जाती है जो ऐतिहासिक रूप से अविकसित समूहों से, छोटे कॉलेजों, और उन विश्वविद्यालयों से आते हैं जो संभावित सहयोगियों से भौगोलिक रूप से अलग हैं। प्रत्येक कनिष्ट प्रतिभागी को किसी अनुभवी परामर्शदाता प्रतिभागी की निगरानी में रखा जाता हैं BIRS में आगमन के पश्चात इन समूहों को 7-7 के उपसमूहों में बाँट दिया जाता है। कार्यशैली के तहत इन समूहों को आवास, खाने और अन्य आवश्यक सुविधाओं से सम्पूर्ण और पहाड़ों से घिरे एकांत वातावरण में विभिन्न प्रकार के प्रारूपों में निर्बाध शोध गतिविधियों के लिए छोड़ दिया जाता हैं ताकि वो शुद्ध और अनुप्रयुक्त गणित के साथ-साथ सूचना प्रौद्योगिकी के गणित, सैद्धांतिक और अनुप्रयुक्त कंप्यूटर विज्ञान, सांख्यिकी और गणितीय भौतिकी और सांख्यिकीय विज्ञान के पहलुओं पर गहन और लंबे समय तक बातचीत कर सकें। आमतौर की कार्यशालाओं में एक विशेषज्ञ अन्य प्रतिभागियों को किसी विषय पर व्याख्यान या फिर उस विषय की व्यावहारिक व क्रियाशील पद्धतीयों का ज्ञान देता हैं। यह कार्यशालाएं इस बात में दूसरो से भिन्न हैं क्योंकि इनमे उपसमूह मिल कर एक सप्ताह के लिए पूर्व-परिभाषित अनुसंधान परियोजनाओं पर शोध करते हैं तथा Birs से जाने के पश्चात इस पर शोध ग्रंथ प्रकाशित करते हैं। अब तक गणित की 17 शाखाओं में इस तरह की कार्यशालों का आयोजन किया जा चुका हैं आशा है कि BIRS के इस सराहनीय कदम से महिलाओं के अनुसंधान नेटवर्क्स की संख्या और दायरे का विस्तार होगा और परिणामस्वरूप नेटवर्क को बनाए रखने और विकसित करने में मदद करने के लिए अनुवर्ती घटनाओं और बुनियादी ढांचे की एक श्रृंखला का विकास होगा

भूलना सीखो

बचपन बीता इस दौर से.. माँ डाटकर कहती
पढ़ाई करो गौर से बात (समय) थी वह माँ के सम्मान की
प्रथम शिक्षक माँ के संस्कार की नए - नए सपने जगाना
जों कुछ पढा उसे याद रखना ज्यो याद किया उसे रटते रहना
छोटे थे हम, वहीं करते थे बड़ों के बातों का अनुकरण
याद करना भी सीख चुके भूलने का न था सवाल
और स्मरण करते करते सुख-दु:खों को भी दोहराने लगे
बड़े होकर अच्छी और बुरी हर बातों को याद रखने लगे
अब, अब वही लोग कहते है... गड़े - मुर्दे मत निकालो
उठो, सपना से अब जागो जीने के लिए ही सही
भूलना भी सीख लिया करो क्योंकि सुख की बातें
हमेशा मिठी लगने लगती और दु:ख की बातें
मन को कडवा बनाती भाई-जमाने का यह दस्तूर है
वक्त के साथ चलना सीखो जींदगी में आगे बढ़ने के लिए
बीती बातों को भूलना सीखो

कर्म का फेरा

जन्म-मृत्यु, जाप-पात में
हे मानव, तू क्यू उलझां है।
जन्म के पूर्व, मरने के बाद क्या
अभी यहीं नहीं तो सुलझा है।।

जन्म -मृत्यु के फासले को
जिंदगी का नाम दिया है।
ज्यों अरबों वर्षों पश्चात
एक ही बार मिलता है।।

विधाता ने यह जीवन दिया
केवल जीने के लिए नहीं।
सत्कर्म तुझसे करवाने होंगे
उससे दूसरा कोई धर्म नहीं।।

अपने कर्म-धर्म से मानव तूने
भले ही खूब कमाया है।
बस इतना तू गौर से जान ले
रंग-रूप-द्रव्य यहीं छोड़ जाना है।।

बस, सृष्टि के चक्र सा
कर्म निरंतर करता चल।
जनम सिर्फ एक बार मिलता
अपने प्रगतिपथ पर बढ़ता चल।।

श्रीमती भारती खडसिंगे
पुस्तकालय विभाग

डॉ. आनंदीबाई जोशी - एक प्रेरणादायी व्यक्तित्व

दिपाली देशपांडे
परीक्षा अनुभाग

भारत की इस पहली महिला डॉक्टर का जन्म 31 मार्च, 1865 को कल्याण में एक पारंपरिक रूढिवादी परिवार में महाराष्ट्र के ठाणे जिले में हुआ था। बचपन में, परिवार के सदस्य उन्हे यमुना नाम से बुलाते थे। उनके पिता एक जमींदार थे। ब्रिटिश काल के दौरान महाराष्ट्र में भूमि व्यवस्था बंद होने के कारण, उनके परिवारों की स्थिति बहुत खराब थी।

उस जमाने में बालविवाह का प्रचलन था, 9 साल कि उम्र मे यमुना का विवाह गोपालराव जोशी, से हुआ जो यमुना से 20 साल बड़े थे तथा विधुर थे। शादी के बाद, यमुना का नाम बदलकर आनंदी रख दिया गया और उसे आनंदी गोपाल जोशी के नाम से जाना जाने लगा। आनंदीबाई के पति गोपालराव पोस्ट ऑफिस के कर्मचारी होने के साथ-साथ उच्च विचारधारा के व्यक्ति थे। आनंदीबाई की शिक्षा में उनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण था।

शादी के बाद, उन्हें 14 साल की उम्र में मां बनने का सौभाग्य मिला। लेकिन दुर्भाग्य से दस दिनों के भीतर इलाज के अभाव में उनके बच्चे की मृत्यु हो गई। आनंदीबाई शिशु की मृत्यु से स्तब्ध थी।

उस समय, जब वैद्यकीय क्षेत्र मे पुरुषों का ही वर्चस्व होता था तब महिलाए उनकी समस्याओं के बारे में पुरुष डॉक्टरोंसे खुलकर बात नहीं कर सकती थीं।

इस घटना ने उनका हृदय हिलाकर रख दिया। वह महिलाओं और बच्चों के इलाज के बारे में सोचने लगी। चिकित्सा में उनकी रुचि बढ़ने लगी और उन्होंने अध्ययन करके डॉक्टर बनने का फैसला किया। उस समय भारत में एलोपैथिक चिकित्सा पाठ्यक्रमों के लिए कोई सुविधाएं नहीं थीं और इसलिए उन्हें चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश जाना आवश्यक था। गोपालराव ने आनंदीबाई के फैसले का पूरा समर्थन किया और उनकी तरफ से खड़े हुए। रूढिवादी समाज के प्रकोप का सामना किया जब आनंदीबाई ने चिकित्सा शिक्षा को आगे बढ़ाने का फैसला किया, तो महिलाओं को अध्ययन करने की अनुमति नहीं थी, इसलिए उन्हें समाज के क्रोध का सामना करना पड़ा। समाज, जो रूढिवादी परंपराओं को महत्व देता है, आनंदीबाई के फैसले के खिलाफ खड़ा था।

जब आनंदीबाई को इन बातों का एहसास हुआ, तो उन्होंने कॉलेज में लोगों को इकट्ठा किया और उनके सामने अपना पक्ष रखा और लोगों को एक महिला डॉक्टर के महत्व का एहसास कराया। उन्होंने लोगों को यह भी समझाया कि वह केवल चिकित्सा शिक्षा के लिए विदेश जा रही थी। विदेश में काम करने के बारे में सोचने के बजाय, वह अपने देश में आना चाहती है और लोगों की सेवा करना चाहती है, क्योंकि भारत में एक भी महिला चिकित्सक नहीं है, सैकड़ों महिलाएं और छोटे बच्चे अपना जीवन खो रहे हैं। लोग उनके विचारों से प्रभावित होने लगे और उनके निर्णय का समर्थन करने लगे।

आनंदीबाई ने आखिरकार डॉक्टर बनने का सपना देखा और 1885 में चिकित्सा शिक्षा के लिए अमेरिका पहुंच गईं। उन्होने युनाइटेड स्टेट्स में वुमन मेडिकल कॉलेज ऑफ पेन्सिलवेनिया में प्रवेश के लिए आवेदन किया और फिर कॉलेज में भर्ती हो गई। वहाँ रहते हुए, उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। वहां की तेज ठंड का उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा था। शुध्द शाकाहारी होने के कारण भोजन आदि मे भी बहुत दिक्कते थी । उनकी स्थिति लगातार बिगड़ती चली गई और वे 'तपेदिक' के शिकार हो गई। स्वास्थ्य की कमी के बावजूद, उनके दुर्दम्य आशावाद ने उन्हें ताकत देना जारी रखा। 11 मार्च, 1886 को, आनंदीबाई ने अपनी शिक्षा पूरी की और एमडी (डॉक्टर ऑफ मेडिसिन) मेडिकल की डिग्री प्राप्त की। आनंदीबाई गोपालराव जोशी भारत की पहली महिला डॉक्टर बनी।

भारत लौटने के बाद, उन्होंने उन रोगियों की सेवा शुरू कर दी। उन्होंने कोल्हापुर के अल्बर्ट एडवर्ड अस्पताल में एक महिला चिकित्सक के रूप में काम करने की जिम्मेदारी स्वीकार की। उसके बाद तपेदिक से उनकी मृत्यु हो गई। 22 फरवरी, 1987 को 22 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। वह भारत में महिलाओं और बच्चों को बेहतर स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने के लिए जीवन भर संघर्ष करती रहीं । महाराष्ट्र सरकार ने आनंदीबाई जोशी के नाम पर युवा महिलाओं के लिए फेलोशिप कार्यक्रम शुरू करके विशेष सम्मान दिया। आनंदीबाई गोपालराव जोशी का व्यक्तित्व में सभी के लिए प्रेरणा है !

दुनिया पर छाई भारत की 'कल्पना'

डॉ. रूपाली राखुंडे
निर्देशक कार्यालय

हमारे वैज्ञानिकों के अनुसंधानों के परिणामस्वरूप कई अंतरिक्षयान अंतरिक्ष के अनसुलझे रहस्यों का पर्दाफाश कर रहे हैं। इसी श्रृंखला में हाल ही में 'चंद्रयान' ने चंद्रमा की ओर उड़ान भरी।

वर्ष 2003 में अंतरिक्ष की शोध के इसी प्रकार के 'नासा' के एक अनूठे मिशन का हिस्सा बनी थी भारतीय मूल की अंतरिक्ष यात्री 'कल्पना चावला'। जिसने दुनियाभर के लोगों की उम्मीदों को पूरा करने के लिए छह अंतरिक्षयात्रियों के साथ 'कोलंबिया' अंतरिक्षयान में उड़ान भरी थी।

भारतीय मूल की अंतरिक्ष यात्रा में जाने का गौरव पाने वाली पहली महिला थी कल्पना चावला। उनका जन्म 17 मार्च 1962 में हरियाना के करनाल जिले में एक व्यापारि परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री बनारसी लाल चावला और माता का नाम संजयोती था। वह अपने परिवार में सभी भाई बहनों मे सबसे छोटी थी। घर मे सब उसे प्यार से मोटो कहते थे । बचपन से ही कल्पना ने अपनी एक अलग राह चुनी और अपनी मंजिल तक पहुँचने के लिए कदम बढ़ाए।

उन्होंने अपनी स्कूल की शिक्षा करनाल के टैगोर स्कूल से की थी। बचपन से ही कल्पना की रुची पढ़ाई के साथ-साथ हवाई करतब में भी थी। वह हमेशा अंतरिक्ष में घूमने की कल्पना करती थी। उसकी माँ ने अपनी बेटी की भावनाओ को समझा और आगे बढने मे मदद की । उन्होंने पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज से एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री प्राप्त की थी। डिग्री प्राप्त करने के बाद कल्पना नें 1884 में टेक्सास से इंजनियरिंग में मास्टर डिग्री प्राप्त की थी। इसके बाद उन्होंने कोलोराडो से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी।

कल्पना का सर्वाधिक महत्व पूर्ण गुण था – उसकी लगन और जुझारू प्रवर्ती। प्रफुल्ल स्वभाव तथा बढते अनुभव के साथ कल्पना न तो काम करने मे आलसी थी और न असफलता मे घबराने वाली थी। अपनी उच्च शिक्षा के लिये कल्पना ने अमेरिका जाने का मन बना लिया । उसने सदा अपनी महत्वाकाक्षा को मन मे सजाए रखा ।

अमेरिका पहुँचने पर उसकी मुलाकत एक लंबे कद के एक अमेरिकी व्यक्ति जीन पियरे हैरिसन से हुई। कल्पना ने हैरिसन के निवास के निकट ही एक अपार्टमेन्ट में अपना निवास बनाया इससे विदेशी परिवेश में ढलने में कल्पना को कोई कठिनाई नहीं हुई। विश्वविद्यालय परिसर में ही पलाईंग क्लब होने से कल्पना वहा प्राय जाने लगी थी पलाईग का छात्र होने के साथ-साथ जीन पियरे अच्छा गोताखोर भी था।

एक साल बाद 1983 में एक सामान्य समारोह में दोनों विवाह – सूत्र में बन्ध गए । मास्टर की डिग्री प्राप्त करने तक कल्पना ने कोलोरेडो जाने का मन बना लिया। मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डाक्टरेट करने के लिए उसने कोलोरेडो के नगर बोल्डर के विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। सन 1983 में कल्पना कॅलिफोर्निया की सिल्कान ओनर सेट मैथड्स इन्फ्रो में उपाध्यक्ष एवं शोध विज्ञानिक के रूप में जुड़ गयी। 1988 में कल्पना नासा में शामिल हुई। नासा में रहकर उन्होंने काफी शोध किए। नासा के अंतरिक्ष अभियान कार्यक्रम में भाग लेने की इच्छा रखने वालो की कमी नहीं थी । नासा अंतरिक्षा यात्रा के लिये जाने का गौरव विरले ही लोगो के भाग्य में होता है और कल्पना ने इसे प्राप्त किया । उन्हें 1998 में अपनी पहली उड़ान के लिए चुना गया था।

6 मार्च 1995 को कल्पना ने एक वर्षीय प्रशिक्षण प्रारंभ किया था वेह दस चालको के दल मे सम्मलित होने वाले नौ अभियान विशेषज्ञ मे से एक थी । नवम्बर 1996 मे अंततः वह सब कुछ समझ गई । जब उसे अभियान विशेषज्ञ तथा रोबोट संचालन का कार्य सौपा गया । तब से कल्पना सम्प्रायता के.सी के नाम से विख्यात हो गई थी। वह नासा दवारा चुने गये अन्तरिक्ष यात्रियो के पंद्रहवे दल के सदस्य के रूप मे प्रशिक्षण मे सम्मिलित हो गई ।

पहली बार अंतरिक्ष यात्रा का स्वपन 19 नवम्बर 1997 को भारतीय समय के अनुसार लगभग 2 बजे एस.टी.एस– 87 अंतरिक्ष यान के द्वारा पूरा हुआ । कल्पना के लिए यह अनुभव स्वयं में विनम्रता व जागरूकता लिए हुआ था कि किस प्रकार पृथ्वी के सौन्दर्य एवं उसमें

उपलब्ध धरोहरों को संजोये रखा जा सकता हे । नासा ने पुनः कल्पना को अंतरिक्ष यात्रा के लिए चुना। जनवरी 1998 मे, उसे शटल यान के चालक दल का प्रतिनिधि घोषित किया गया और शटल संशन फलाइट क्रू के साजसामान का उत्तरदायित्व दिया गया बाद में वह चालक दल प्रणाली तथा अवासीयें विभाग कि प्रमुख नियुक्त की गयी । सन 2000 में उसे एस.टी.एस – 107 के चालक दल में सम्मनित किया गया ।

अंतरिक्ष यान का –नाम कोलंबिया –रखा गया जिसकी तिथि 16 जनवरी 2003 निश्चित की गई । एस.टी एस – 107 अभियान वैज्ञानिक खोज पर केन्द्रित था । प्रतिदिन सोलह घंटे से अधिक कार्य करने पर अंतरिक्ष यात्री पृथ्वी सम्बन्धी वैज्ञानिक अंतरिक्ष विज्ञान तथा जीव विज्ञान पर प्रयोग करते रहे । अंतरिक्ष पर पहुंचने वाली पहली भारतीय महिला कल्पना चावला की दूसरी अंतरिक्ष यात्रा ही उनकी अंतिम यात्रा साबित हुई। सभी तरह के अनुसंधान तथा विचार – विमर्श के उपरांत वापसी के समय पृथ्वी के वायुमंडल मे अंतरिक्ष यान के प्रवेश के समय जिस तरह की भयंकर घटना घटी वह अब इतिहास की बात हो गई । नासा तथा सम्पूर्ण विश्व के लिये यह एक दर्दनाक घटना थी । सोलह दिन के अंतरिक्ष अभियान के बाद लौट रहा अमरीकी अंतरिक्ष यान 2 फरवरी की शाम में कोलंबिया में धरती से 63 किलोमीटर की ऊंचाई पर धमाके के साथ टूटकर बिखर गया। कल्पना सहित उसके छह साथियों की दुर्भाग्यपूर्ण मृत्यु से चारो ओर सन्नाटा छा गया ।

इन सात अंतरिक्ष यात्रियों की आत्मा, जो फरवरी 2003 की मनहूस सुबह को शून्य मे विलीन हुई, सदैव संसार मे विदयमान रहेगी । करनाल से अंतरिक्ष तक की कल्पना की यात्रा सदा हमारे साथ रहेगी ।

इन्सान का इन्सान से हो भाईचारा

संभ्रम में पड गया हूं सुनके इस मासुम की बात,
जो पुछ रहा है सवाल, 'क्या होती है जात?'
किन किन शब्दों से, समझाएंगे भला इसे ?
नन्ही सी जान को, जवाब देंगे भी भला कैसे?
शरीर कांप उठता है,सुनकर उस दौर की दरिंदगी,
कैसे क्रूर थे वे? उन्हे नहीं थी,जरासी भी शर्मिंदगी?
क्या वाकई दलितके छूनेसे जहर बन–जाता पानी?
अजीब हथकंडोने, शोषितोंकी बदली जिंदगानी।
दकियानूसी विचारधाराएं उन दिनों थी प्रचलित,
उसीका ही खामियाजा, सहते रहे है सब वंचित।
इस बालक के दिलोदिमाग में जो बनी है छाप,
वो रह गई इतिहास में बनकर एक अभिशाप।
आओ! ईश्वर के सपूतो, मिलकर ये काम करो,
जितना भेदभाव रहा है बाकी,उसे तमाम करो।
इन्सानियतही है हमारी जात, ये रहेगा अब नारा,
कोई छोटा नहीं,कोई बडा नहीं,ये संकल्प हमारा।
दिखेगा गर कोई, या जो करेगा, अब भी भेदभाव,
ऐसे दरिंदो को एक होकर उनकी जगह दिखाव।
हम भारतीय थे, भारतीय है और भारतीय ही रहेंगे।
शपथ लेते है हम, आपस में समता–बंधुता ही रखेंगे।

2019 के जाते जाते....

आओ सूनाएं हम आपको 2019 के खास किस्से,
देखें! कितने खट्टे–कितने मीठे, हमारे आए हिस्से!
कुछ प्राणी मिले, जो बनते थे सामने गूंगे–बहरे,
उन्होनेही हमारे भेद खोले, तोडकर कानके पहरे!
कुछ तो हमें धोखा देनेकी करते रहे कई कोशीश,
नहीं चलने दी! हमने कर दी उनकी टाय टाय फीश!
रूप के उन सायलंसर्स पर, कभी आता है हमें तरस,
कित्ते मजबूत है बावा? ये कभी न होते टस से मस!
2019 तेरा साथ रहकर हमने एक अनुभव पाया,
हमें अंदरवालेने रूलाया पर बाहर वालेने हसाया!
चंदही सही,पर मिले हमें 'क्रांतिवीर योद्धा' की तरा,
ध्येय बनाया सबने, फैसला हो बस, 'जिंदा या मरा'
हमें मूरख समझनेवाले चापलूस–चमचाई भैया,
सपने गर हमारे तोडोगे तो, डूबी आपकी भी नैया!
जीते रहे और रहेंगे हम, संभालकर अपना मिजाज,
जिन्हे पुकारते रहे हम, देखना अब वो देंगे आवाज!
सुना है की कोशिश करने वालों की हार नहीं होती,
गवै है हमें । योध्याओं में कोई हीरा है, तो कोई मोती।
आ रहा है चार रोज में, नई सुबह का नया सवेरा,
और ये ले आएगा। साथ अपने खुशियों का डेरा।

प्रा. किशोर जोगलेकर
वास्तुकला एवं नियोजन

शतरंज : हम्पी कोनेरु

योगेश घोंगे
खनन अभियांत्रिकी

शतरंज आज भी खेले जाने वाला सबसे पुराना खेल है। तीक्ष्ण बुद्धि के खेल शतरंज में अब तक तो विश्वनाथन आनंद का दबदबा था लेकिन अब इसमें एक और नाम जुड़ गया है और वो है, कोनेरु हम्पी का भारत की शतरंज क्वीन कहे जाने वाली हम्पी का जन्म 31 मार्च 1987 गुडिवाडा, आन्ध्र प्रदेश में हुआ।

जीवन परिचय : इनके पिता का नाम अशोक माता का नाम कोनेरू लता हैं। हम्पी शब्द का अर्थ होता है 'विजयी' इसी लिए कोनेरू के पिताजी का नाम हम्पी रखा था। इनके पिता अशोक कोनेरू आंध्र प्रदेश राज्य शतरंज में प्रतिनिधित्व कर चुके थे। वे अपना सपना हम्पी से पूर्ण करवाना चाहते थे। मात्र छह वर्ष की आयु से ही हम्पी ने खेल में रूचि लेना शुरू कर दिया। प्रशिक्षक के तौर पर उनके पिता ही हम्पी को शतरंज के दावपेंच सिखाते थे। मात्र 9 वर्ष की आयु में ही हम्पी ने शतरंज में 3 राष्ट्रीय स्तर के गोल्ड मेडल अपने नाम कर लिए थे। यही प्रतिभावान महिला खिलाड़ी आगे जाकर देश की पहली पुरुष ग्रेडस्लेम विजेता बनी।

खेल जीवन : हम्पी ने शतरंज के क्षेत्र में भारत का नाम रोशन कर के अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है। 1998 में हम्पी ने तीन प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक हासिल कर अपने पदकों की संख्या में वृद्धि की। 1998 मे 12 वर्ष से कम आयु वर्ग में गुंटूर में होने वाली राष्ट्रीय रैपिड शतरंज चैंपियनशिप में प्रथम स्थान प्राप्त किया। फिर 1998 में ही 15 वर्ष से कम आयु की लड़कियों की राष्ट्रीय शतरंज चैंपियनशिप में स्वर्ण हासिल किया। उसके बाद 1998 में ही औरंगाबाद के राष्ट्रीय शतरंज चैंपियनशिप में 15 वर्ष से कम आयु वर्ग में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। वर्ष 2000 में 14 वर्ष से कम आयु के बालकों की राष्ट्रीय शतरंज टूर्नामेंट में हम्पी ने अहमदाबाद में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

1997 में वर्ल्ड चैंपियन और अंडर 12 चैंपियन 1999 में एशिया की सबसे युवा महिला इंटरनेशनल मास्टर 2000 में एशियन गर्ल्स अंडर 20 चैंपियन 2001 में वर्ल्ड गर्ल्स अंडर 14 चैंपियन 2001 में वर्ल्ड गर्ल्स अंडर 20 इन्यर चैंपियन 2000 में ब्रिटिश लेडी टाइटल चैंपियनशिप जीतने वाली सबसे युवा 2002 में एक बार फिर ब्रिटिश लेडीस टाइटल 2001 में एशिया की सबसे युवा महिला ग्रैंडमास्टर 2002 में 15 साल 1 महीने और 27 दिन की उम्र में सबसे युवा ग्रैंडमास्टर चैपियन बन गई । 2006 के दिसम्बर में हुए दोहा एशियाई खेलों में कोनेरू हम्पी ने शानदार प्रदर्शन किया। महिलाओं के रेपिड चेस में कोनेरू ने स्वर्ण पदक जीता। उसके बाद टीम इवेंट, क्लॉसिकल स्विस राउंड में भी स्वर्ण पदक जीत लिया। दोहा एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक का आगाज़ भी शतरंज से हुआ और अंत भी शतरंज के स्वर्ण से ही हुआ।

कोच : कोनेरू हम्पी के पिता श्री कोनेरू अशोक ही हम्पी के कोच हैं। कोनेरू के पिता ने ही अपनी बेटी हम्पी की इतनी अच्छी कोचिंग दी है, कि आंध्र प्रदेश सरकार ने उन्हें राज्य कोच का दर्जा देने का निर्णय किया। जहाँ अधिकांश अभिभावक अपने बच्चे को आगे बढ़ाना चाहते हैं। परंतु उसके लिए सार्थक प्रयास नहीं करते, वहाँ हम्पी के पिता अशोक ने उसको आगे बढ़ाने के प्रयास उसके बचपन से ही आरम्भ कर दिए थे। उसके पूर्व अशोक रसायन विज्ञान के अध्यापक थे, परंतु 1995 में 8 वर्ष से कम आयु वर्ग में हम्पी के चौथे स्थान पर रहने पर पिता अशोक ने शिक्षण कार्य छोड़ हम्पी का प्रशिक्षण आरम्भ कर दिया। हम्पी की माँ लता को आज भी याद है कि हमारे कप्यूटर ख़रीदने के निर्णय की लोगों ने किस तरह हँसी उड़ाई थी । लेकिन आज जब कोनेरू विश्व चैंम्पियन बन गई है, तो माता-पिता को दूसरों के दृष्टिकोण पर हँसी आती है।

एकमात्र महिला ग्रांड मास्टर : भारत की सबसे कम उम्र की महिला ग्रांड मास्टर कोनेरू हम्पी की विश्व में वरीयता क्रम नम्बर दो तक पहुँच गई फिर भी उसे कोई स्पांसर नहीं मिल पाया। इन्हीं परिस्थितियों के चलते विजयवाड़ा की इस खिलाड़ी को अगस्त 2006 में ओ एन. जी. सी. में पर्सनल एडमिनिस्ट्रेटर की नौकरी लेनी पड़ी। कोनेरू का मानना है कि शतरंज एक मंहगा खेल है, जिसके लिए खिलाड़ी को टूर्नामेंटों में भाग लेने के लिए अनेकों बार विदेश यात्रा करनी पड़ती है। कोनेरू ने नौकरी इसीलिए की है, ताकि उसके यात्रा खर्चे कंपनी वहन कर सके। अधिकांश कंपनियाँ क्रिकेट खिलाड़ियों को स्पांसर करना चाहती हैं। भारत की एकमात्र महिला शतरंज खिलाड़ी होने के अतिरिक्त

पुरुषों का ग्रैंडमास्टर नाम पा जाने वाली कोनेरू एक विदेशी कोच पाने को मोहताज रही। उसे यही सोच कर संतोष करना पड़ा कि वह अपने पिता की कोचिंग से ही विश्व की नम्बर दो रैंकिग वाली खिलाड़ी बन गई है। अगस्त 2006 में कोनेरू की ईलो रेटिंग 2545 थीं।

2007 में इन्होने सुशान पोल्गर द्वारा स्थापित 2577 के स्तर को पार किया और विश्व में दुसरे स्थान की सबसे बड़ी खिलाडी होने का गौरव प्राप्त किया। इनका जनवरी 2010 में फाईड स्तर 2614 था, फिरसे वह संसार की दुसरे स्थान की (जुड़ीट पोल्गार के बाद) महिला शतरंज खिलाडी बन गई । हम्पी पुरुषों का ग्रैंड मास्टर जीतने वाली सबसे कम उम्र की प्रथम भारतीय लड़की है। इसके पूर्व हंगरी की जुदित पोलगर ने यह खिताब जीता था, वह उस वक्त 15 वर्ष 4 माह 27 दिन की थीं। कोनेरू हम्पी ने 15 वर्ष 1 माह 27 दिन की आयु में पुरुषों का ग्रैंड मास्टर खिताब जीता जो एक रिकार्ड है।

- कोनेरू हम्पी दो बार ग्रैंड मास्टर बनने वाली प्रथम भारतीय लड़की है।
- हम्पी टॉप 20 खिलाड़ियों में विश्व की नम्बर एक खिलाड़ी बनने वाली प्रथम भारतीय लड़की है।
- विश्व की टॉप 50 महिलाओं की सूची में 16 वां स्थान पाने वाली कोनेरू प्रथम भारतीय लड़की है।
- ई एल ओ रेटिंग में इतना ऊँचा स्थान पाने वाली हम्पी भारतीय शतरंज के इतिहास की प्रथम भारतीय लड़की है।
- विश्व जूनियर महिला शतरंज चैम्पियनशिप में जीतने वाली हम्पी एक-मात्र भारतीय लड़की है।
- शतरंज में विश्व खिताब जीतने वाली प्रथम भारतीय लड़की है।
- विश्व चैंपियनशिप मुक़ाबलों में दस, बारह व चौदह वर्ष के आयु वर्ग में लगातार विजेता रही है।
- एशियन जूनियर शतरंज चैंपियनशिप की वह विजेता है।
- ब्रिटेन के 61 वर्ष के इतिहास में हम्पी सबसे कम उम्र की ब्रिटिश महिला शतरंज चैंपियनशिप की विजेता है।
- हम्पी 12 वर्ष से कम आयु वर्ग में लड़कों की एशियाई शतरंज चैंपियनशिप की एकमात्र लड़की विजेता है।
- हम्पी एशिया की सबसे कम उम्र की अंतरराष्ट्रीय महिला मास्टर है।
- हम्पी को 1997 व 1998 का स्पोर्ट्स स्टार 'यंग अचीवर एवार्ड' दिया गया।

प्रतियोगिताओं में विजय :

- एथेंस (ग्रीस) में 2001 में विजय जूनियर गर्ल्स शतरंज चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक।
- स्पेन में विश्व शतरंज चैंपियनशिप में 2000 में 14 वर्ष से कम आयु वर्ग में स्वर्ण पदक।
- 1999 में स्पेन में विश्व शतरंज चैंपियनशिप में 12 वर्ष से कम आयु वर्ग में रजत पदक।
- 1998 में स्पेन मे 12 वर्ष से कम आयु वर्ग में गर्ल्स शतरंज चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक।
- 10 वर्ष से कम आयु वर्ग में लड़कियों की विश्व शतरंज चैंपियनशिप में फ्रांस में स्वर्ण पदक।
- स्मिथ एंड विलियन सन ब्रिटिश चैंपियनशिप 2002 में विजय।
- हंगरी का 2001 का होटल लीपा ग्रैंड मास्टर्स शतरंज टूर्नामेंट में स्वर्ण पदक।
- सांगली में वर्ष 2000 में कामन वेल्थ शतरंज चैंपियनशिप में महिला व 16 वर्ष से कम आयु लड़कियों के मुक़ाबले में क्रमश: कांस्य व स्वर्ण पदक।
- ब्रिटिश वीमेन चैंपियनशिप 2000 में सोमरसेट, इंग्लैंड में स्वर्ण पदक।
- मुम्बई में 2000 में एशियन जूनियर शतरंज चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक।
- कामनवेल्थ शतरंज चैंपियनशिप (19 वर्ष से कम आयु लड़कियाँ) 1999 में बीकानेर में स्वर्ण पदक, इसी वर्ष इस मुक़ाबले के महिला वर्ग में कांस्य पदक।

- 1999 के महिलाओं की राष्ट्रीय प्रतियोगिता, कालीकट में वूमन मास्टर खिताब हासिल।
- 1999 में लंदन में 21 वर्ष से कम वर्ग के माइंड स्पोर्ट्स ओलंपियाड में स्वर्ण पदक। इसी वर्ष महिला वर्ग में भी स्वर्ण पदक हासिल।
- अहमदाबाद में 1999 में 12 वर्ष से कम आयु के लड़कों की एशियाई शतरंज प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक।
- कोनेरू हम्पी की वर्ष 2003 की शतरंज उपलब्धियों के लिए उन्हें 21 सितम्बर 2004 को 'अर्जुन पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।
- हीरो होंडा स्पोर्ट्स अकादमी ने वर्ष 2004 के लिए कोनेरू हम्पी को शतरंज की श्रेष्ठता खिलाड़ी के लिए नामांकित किया।
- 2007 में कोनेरू हम्पी को 'पद्मश्री पुरस्कार' प्रदान किया।

यूथ आइकॉन : कोनेरू हंपी ने हाल ही में वर्ल्ड रैपिड चैंपियनशिप जीतकर दुनिया के शतरंज के नक्शे पर एक बार फिर अपना नाम सुनहरे हरफों में लिख दिया वह यह कारनामा अंजाम देने वाली देश की पहली महिला शतरंज खिलाड़ी हैं ।मां बनने के बाद दो साल तक भारत की सबसे युवा महिला ग्रैंडमास्टर हंपी ने साल 2016 में शतरंज को विराम देने का फैसला किया था, जिसने भारतीय शतरंज प्रेमियों को निराश कर दिया था। इसके बाद हंपी मां बन गईं और शतरंज से उनका ब्रेक दो साल तक बरकरार रहा। साल 2018 में जब वह शतरंज में वापस लौटी तब सभी उनके प्रदर्शन को लेकर संशय में थे। लोगों को संदेह था कि वे पहले की तरह प्रदर्शन नहीं कर पाएंगी।देश के महानतम शतरंज खिलाड़ी विश्वनाथन आनंद पुरूष वर्ग में यह उपलब्धि अपने नाम कर चुका हैं । पिता से शतरंज सीखने के दौरान हंपी को सबसे बड़ी उपलब्धि यही लगती थी, कि एक दिन वह अपने पिता को हराएगी, लेकिन उसके मोहरों की 'चालें' इतनी सटीक थीं कि वह देखते ही देखते विश्व शतरंज के आसमान का चमकता सितारा बन गई।

भारत की शतरंज ग्रेंड मास्टर कोनेरू हम्पी शतरंज में रूजि रखने वाले युवाओं के लिए एक मिसाल हैं। हम्पी ने अपनी प्रतिभा के दम पर साबित कर दिया कि अगर ठान लिया जाए तो कोई लक्ष्य मुश्किल नहीं है। हम्पी दुनिया की दूसरे नंबर की शतरंज खिलाड़ी हैं। हम्पी ने भारतीय महिलाओं को शतरंज के प्रति नए सिरे से आकर्षित किया।

रिश्ते

'रिश्तों' की कश्ती पर होकर सवार
लेकर हाथों में हिम्मत की पथवार
पल पल आगे बढ़ना हैं, साहिल पर दस्तक देना है ...
साहिल पर दस्तक देना है ।।
बड़ी सहज नहीं 'रिश्तो' की डोर,
हर किसी पर चलता इसका जोर
कभी चिर खामोशी कभी मस्त और शोर
बंधन रिश्तों का खीचें सबको अपनी ओर,
'रिश्तों' की पगडी पर चलकर कारवाँ नये बनाना है
पल पल आगे बढ़ना है, साहिल पर दस्तक देना है...
साहिल पर दस्तक देना है ।।
कभी मीठी कभी कड़वी समझ न पाये कोई 'रिश्तों' की बोली।
खेले ये संग में आँखमिचोली कभी आँसुओं से भिगोदे दामन,
कभी खुशियों से भर दे झोली। इन्हीं 'रिश्तों' को ढाल बनाकर
तूफानों से लढ़ना है...
पल पल आगे बढ़ना है
साहिल पर दस्तक देना है...
साहिल पर दस्तक देना है ।।
बड़ी नाजुक है यह 'रिश्तों' की नाव
बड़े सँभलकर इसमें रखना है पाँव,
'रिश्तों' की कश्ती में जब पड़ती है दरार
तब निराशा की लहरें डुबाती है संसार
मतभेद के भँवर में डूब जाता है प्यार,
खो जाता है सुखमय जीवन का सार।।
इन 'रिश्तों' को स्नेह से सींचकर वटवृक्ष विशाल बनाना है...
पल पल आगे बढ़ना है, साहिल पर दस्तक देना है...
साहिल पर दस्तक देना है ।।
माना सुख, दुःख का यह ताना - बाना है,
पर 'रिश्तों' से ही रंगीन जमाना है।।
यदि जीवन को सुंदर बनाना है, तो 'रिश्तों' से रिश्ते निभाना है...
'रिश्तों' से रिश्ते निभाना है।

अभिलाषा जैन
धातुकी एवं पदार्थ
अभियांत्रिकी विभाग

डॉ. सुधा नारायण मूर्ति

मनिषा हरडे
संगणक विज्ञान अभियांत्रिकी विभाग

''आप जो भी काम करें, अच्छी तरह से करें। प्रत्येक कार्य में मेरा उद्देश एक ही रहा हैं। जब आप एक अधीनस्थ हो, तो अपने व्यवसाय के प्रति ईमानदार और निष्ठावान रहें तथा व्यावसायिक बनें, लेकिन जब आप बॉस की हैसियत में हो, अपने अधीनस्थों का ध्यान रखें ठीक उसी तरह जैसे जब बच्चे घर पर हो, माँ को उनके साथ होना चाहिए, क्योंकि उन्हें माँ की जरूरत होती हैं।'' – डॉ. सुधा नारायण मूर्ति

सुधा कुलकर्णी मूर्ति का जन्म कर्नाटक के शिग्गाव यहाँ माधवा ब्राह्मण कुटूंब मे 1650 में हुआ हैं। माँ का नाम विमला कुलकर्णी और पिता का नाम डॉ. आर.एच. कुलकर्णी । उनका पालन–पोषण माँ–बाप और नाना–नानीने किया। उनको अपने बचपन में जो अनुभव आये हैं वो उन्होंने अपने किताबों में लिखे हैं।

सुधा मूर्तिने 'बी.वी.बी. कॉलेज ऑफ इंजिनियरींग अॅन्ड टेक्नॉलॉजी' हुबली में इलेक्ट्रीकल और इलेक्ट्रॉनिक में इंजिनियरिंग कि हैं। आज इस का नाम के एल.ई. टेक्नॉलॉजीकल यूनिवर्सिटी ने नाम से जाना जाता हैं।

1668 में सुधा मूर्ति ने जब कॉलेज में प्रवेश लिया था, उस वक्त लड़कियाँ अभियांत्रिकी शिक्षण नहीं लेती थी। उस समय अभियांत्रिकी शिक्षण लेना लड़कियों के लिए निषिद्ध था। लेकिन सुधा मूर्तिने साहस दिखाकर कॉलेज में प्रवेश किया। तब लड़कों में वह एकमेव लड़की थी। अकेले शिक्षण लेते वक्त सुधा मूर्ति को बहुत संघर्ष करना पड़ा। कॉलेज मे प्रवेश होते हुए भी सुधा मूर्तिने माँ–पिताने दी हुई संस्कार छोड़ें नहीं और भूले भी नहीं। इंजीनियरिंग करते समय उनको बहुत कठनाई का सामना करना पड़ा। इसी कठनायों में उन्होंने इंजिनियरिंग में प्रथम श्रेणी प्राप्त किया। सुधा मूर्ति जब कर्नाटक राज्य में सर्वप्रथम आयी तब कर्नाटक के मुख्यमंत्री की तरफ से उनको स्वर्ण पदक मिला।

इंजीनियरिंग की स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद 1674 में 'इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइन्स' में प्रवेश करके कंम्प्यूटर सायन्स में मास्टर्स की उपाधि प्राप्त कि। मास्टर्स में उन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त कर इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियर्स से उपाधि के आधार पर उन्हें स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। अभियांत्रिकी क्षेत्र में सुधा मूर्तिने श्रेष्ठतम शिक्षा हासिल की थी।

सुधा मूर्तिने शिक्षण समाप्ति के बाद अभियंता के रूप में अपने करियर की शुरूवात की। सुधा मूर्ति ने जब अभियांत्रिकी की तौर पर 'टाटा मोटर्स' काम करने निश्चित किया, तब उस वक्त केवल पुरूषों को ही नोकरी मिलती थी। सुधा मूर्तिने 'केवल पुरूष' नीति की आधार पर जे आर.डी. टाटा को एक पोस्टकार्ड भेजा । इस शिकायत के कारण 'टाटा मोटर्स' के अधिकारियों ने उन्हें लंबी चर्चा को बुलाया था। उसका असर ये हुआ टाटा मोटर्स ने इन्हें विशेष साक्षात्कार लेकर उनका टेल्को में इंजिनियर के तौर पर नौकरी के लिए चयन किया। टाटा इंजीनियरिंग अॅण्ड लोकोमोटिव कम्पनी में काम करने वाली वह पहिली महिला अभियंता थी । बाद में उन्होंने पुणे के बालचंद ग्रुप ऑफ इंडिस्ट्रीज में काम किया। बाद में मुंबई और जमशेदपुर में कार्य किया।

सुधा मूर्तिने क्राईस्ट कॉलेज के कॅम्पस में एम.बी.ए. और एम.सी.ए. विभाग में प्रोफेसर की आधार पर काम किया। वह अभियांत्रिकी कारण भारत में 'बौद्धिक क्रांति' में अग्रणी थी। बंगलोर विद्यापीठ से अभ्यागत प्राध्यापिका काम कर रही हैं।

सुधा मूर्ति पुणे में नोकरी कर रही थी तब उनकी मुलाकात नारायण मूर्ति से हुई थी। उसके बाद उनका विवाह नारायण मूर्ति से हुआ। उनके दो बच्चे हैं। लड़का रोहन और लड़की अक्षता। सुधा मूर्ति का जीवन सादगीभरा हैं।

सन 1666 में सुधा मूर्ति के पती नारायण मूर्ति को अपनी खुद की कम्पनी निकालना चाहते थे, स्टार्ट अप करना था। ये बात उन्होंने अपनी पत्नी को बताई। पर नारायण मूर्ति के पास कम्पनी स्टार्ट अप करने के लिए पैसे नहीं थे। तब सुधा मूर्ति ने अपने पती को कम्पनी की शुरूवात करने के लिए अपने आप की जमापुंजी देकर उनका हौसला बढ़ाया। उनके पास सिर्फ 10,000 थे। नारायण मूर्ति ने उसी 10,000 की राशी को लेकर अपनी कम्पनी की शुरूआत की । इस छोटी सी प्रारंभिक राशि से नारायण मूर्ति ने 'इन्फोसिस' नाम की कम्पनी खोली। सुधा मूर्तिने दुःख विपत्ती के लिए बचाकर रखी हुई वह जमापुंजी थी। नारायण मूर्ति से जब कम्पनी के बारे में बात होती हैं, तो वो अपने पत्नीने दिये हुए जमापुंजी 'धनराशि' की हमेशा गर्व से बात कहते हैं। बंगलोकर में 'इन्फोसिस' कम्पनी के लिए वह राशि सहायक बनीं।

सुधा मूर्ति के पतीने कम्पनी का स्टार्ट अप किया तब सुधा मूर्ति ने अपनी नोकरी छोड़ी और अपने पति के कम्पनी में सहभाग दिया। इन्फोसिस कम्पनी से उनका जीवन बदल गया।

सुधा मूर्ति कहती हैं –

''यह वास्तव में व्याकुलता भरा दौर था । मैं रिसेप्शनिस्ट –कम–क्लर्क–कम–प्रोग्रामर थी और मुझे यह भी देखना पड़ता था कि सबकुछ ठीक–ठाक चल रहा है। लेकिन उस स्वप्न को साकार करने की दिशा में काम करना बहुत अच्छा लगता था। जब 'इन्फोसिस' अस्तित्व में आ गया, मैं बंगलूर के एक कॉलेज में कंप्यूटर सायन्स पढ़ने लगी। पढ़ने और छात्रों के बीच रहने में मुझे हमेशा सबसे ज्यादा खुशी मिलती है।''

इन्फोसिस कम्पनी के आधार पर सुधा मूर्तिने सार्वजनिक धर्मार्थ ट्रस्ट की स्थापना की। वह इस ट्रस्ट की विश्वस्त भी हैं। इस ट्रस्ट की आधार पर वह समाजसेवा करती हैं। फांऊडेशन के माध्यम से उन्होंने पूरग्रस्त भाग में 2,300 घर बांधकर दी। सामाजिक कार्य में उन्होंने आरोग्य शिक्षण, महिला सबलीकरण और सशक्तीकरण, सार्वजनिक स्वच्छता, कला और संस्कृति और नीचले स्तर पर हरने वाले लोग के लिए कार्य करती हैं और दारिद्रय निर्मूलन के लिए भा लेती हैं। उन्होंने 70,000 ग्रंथालय की स्थापना की । उन्होंने कर्नाटक सरकार के सरकारी स्कूल में संगणक और ग्रंथालय उपलब्ध करके दिये। हार्वर्ड विद्यापीठ में मूर्ति क्लासिकल लायब्ररी ऑफ इंडिया के नाम पर ग्रंथालय तयार किया। शेकडो शौचालये बांधकर ग्रामीण भाग में ग्रामीण लोगों की मदत की । उन्होंने तामिलनाडू और अंदमान मे आये त्सुनामी, गुजरात के कच्छ में आये हुए भूकंप, ओरिसा आये हुए चक्रवात और पूर में मदत की और कर्नाटक तथा महाराष्ट्र आये हुए राष्ट्रीय नैसर्गिक आपत्ती में काम किया हैं। विविध क्षेत्र में विकास कामों भी वे लोगों को प्रोत्साहित करती रहती है। वह एक सफल समाज सेविका हैं।

व्यावसायिक में सफलता के आधार पर सुधा मूर्ति कहती हैं–

''आज जो भी काम करें, अच्छी तरह से हो, तो प्रत्येक कार्य में मेरा उद्देश एक ही रहा हैं– जब आप एक अधीनस्थ हो, तो अपने व्यवसाय के प्रति इमानदार और निष्ठावान रहें तथा व्यावसायिक बनें। लेकिन जब आप बॉस की हैसियत में हो, तो अपने अधीनस्थों का ध्यान रखें। ठीक उसी तरह, जैसे जब बच्चे घर पर हो, माँ को उनके साथ होना चाहिए, क्योंकि उन्हें माँ की जरूरत होती हैं।''

''मैंने अपने जीवन में सबसे महत्वपूर्ण बाते 'टेल्को' में काम करते हुए सीखीं हैं। जैसे कि अनुशासन और समय का पाबन्द होना। मैंने समय का महत्व समझा और डायरियों में काम का विवरण लिखने कि आदत डाल ली ।''

सुधा मूर्ति समाजसेविका के साथ साथ वह उत्कृष्ट शिक्षिका और लेखिका भी हैं।

सुधा मूर्तिने शिक्षिका के रूप में जो सफलता प्राप्त की हैं, उससे उनका छात्रों के प्रति प्रेम, छात्राओं के प्रति समर्पण की भावना और निःस्वार्थ प्रेम दिखाता हैं। इस कारणही उनको छात्रों की तरफ से आदर और सम्मान मिलता है। उन्होंने महिलाओं के लिए महाराणी लक्ष्मी अम्मन्नी महिला कॉलेज की स्थापना की। आज यह कॉलेज बेंगलूर यूनिवर्सिटी के नाम से जानी जाती हैं। यह कॉलेज कंम्पयूटर सायन्स विभाग के लिए सबसे ज्यादा जाना जाता हैं। महिला अधिकारों की समानता के लिए काम करती हैं।

सुधा मूर्ति का साहिल्यों में भी बड़ा योगदान हैं। वह कथा और साहित्य लेखन करती हैं। कर्नाटक भाषा कन्नड में उन्होंने 'डालर बहू' के नाम से एक पुस्तक लिखी हैं। 'डालर बहू' यह पुस्तक कन्नड भाषा में इसका अर्थ 'डालर–पुत्र–वधू' ऐसा कहाँ जाता हैं। बाद में इंग्लिश भाषा में इस पुस्तक का अनुवाद हुआ। इसी पुस्कर के आधार पर 2001 में एक टीवी धारावाहिक बनी थी। इसके अलावा सुधा मूर्ति ने आम आदमी के पीड़ा और दुःखों को अपनी पुस्तकों में अभिव्यक्त किया हैं, ऐसे उनके 8 उपन्यास हैं। वैसे उन्होंने 4 तकनीकी पुस्तके, लघु कहानियाँ, दो पुस्तके बच्चों के लिए लिखी हैं। सन 1665 में उन्हें उत्तम शिक्षक का पुरस्कार से नवाजा गया हैं। अध्यापन के लिए उन्हें अनेक पुरस्कार मिले हैं।

सुधा मूर्ति को समाज सेवा में उत्कृष्ट योगदान देने पर सन 2000 में 'राज्यप्रष्टि' अवार्ड ने नवाजा गया। भारत के सार्वजनिक संबंधित राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार मिले हैं। रोटरी साऊथ द्वारा पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। सन 2006 में साहित्य क्षेत्र में योगदान के लिए सुधा मूर्ति को 'आर.के. नारायण' पुरस्कार मिला हैं। राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा उन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सन्मानित किया। सन 2010 में श्री राणी लक्ष्मी फाऊंडेशन की तरफ से भारत अस्मिता राष्ट्रीय पुरस्कार मिला हैं। और उन्हें सत्यभामाा विद्यापीठ की तरफ से सन्माननीय डॉक्टरेट पदवी भी मिली हैं।

सन 2011 में कर्नाटक सरकारने उनके साहित्यिक कार्य के लिए प्रतिष्ठित पुरस्कार ''अत्तिम्बे अवार्ड'' प्रदान किया। इसी साल भारत में औपचारिक कानूनी शिक्षण और छात्रवृत्ति को बढ़ावा और योगदान देने के पर उन्हें मानद डॉक्टर ऑफ लॉ की उपाधि से सन्मानित किया गया। जब उन्हें 2016 में 'बसवाश्री' पुरस्कार प्रदान किया था। उस पुरस्कार में उन्हें एक पट्टिका और 5 लाख का चेक मिला था। उस 5 लाख का चेक सुधा मूर्ति ने म्यूट द्वारा संचालित अनाथालय को राशि सौंपी। 2018 में क्रॉसवर्ड –रेमंड बुक अवार्ड्स में लाइफ टाइम अचीव्हमें का अवार्ड प्राप्त हुआ।

रॅचेल थॉमस

अजय लिखिते
धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विभाग

रॅचेल थॉमस 20 अप्रैल 2002 को उत्तरी ध्रुव पर 7000 फीट से अधिक स्काईडाइव करने वाली पहली भारतीय महिला थीं। भारतीय रेलवे की एक पूर्व कर्मचारी रही रॅचेल ने भारतीय रेलवे के 150 साल पूरे किए जाने के उपलक्ष में यह कामयाबी हासील की। वे 1987 में स्काइडाइविंग प्रतियोगिता में भारत के लिए प्रतिस्पर्धा करने वाली पहली महिला थीं। वे अभितक 18 देशों में 650 बार स्काय डायविंग कर चुकी है। भारत सरकार द्वारा उन्हे 2005 में पद्मश्री से सम्मानित किया जा चुका है
2 बच्चो कि माता रही रॅचेल ने अपनी 24 वर्ष कि उम्र में स्काय डायविंग फेडरेशन ऑफ इंडिया से 'A' सर्टिफिकेट प्राप्त कर 1979 में भारत की 'प्रथम महिला स्काय डायव्हर' का खिताब हासील किया। एक वर्ष उपरांत, उन्हे स्काय डायविंग प्रदर्शन टीम में समाविष्ट किया गया. 1991 में भारत कि पहिली राष्ट्रीय स्काय डायविंग प्रतियोगिता में जब उन्होने हिस्सा लिया तब उस प्रतियोगिता में हिस्सा लेनेवाली वह अकेली महिला थी।

उन्होने 1988 में स्वीडन में खेले गए विश्व पैराशूटिंग प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधितव भी किया है। 1992 में जब उन्होंने एक प्रतियोगीसे जज बनने का निर्णय लिया तो ऑस्ट्रिया में प्रशिक्षण लेने के पश्चयात वे भारत की प्रथम FAI जज बनी। 1994 में आयोजित विश्व प्रतियोगिता तथा 1995 में आयोजित यूरोपियन प्रतियोगिता में वे जज रह चुकी है. अपनी उत्तर ध्रुव की डायविंग के समय उन्हें खराब मौसम के कारन 89 अक्षांश पर –55 अंश सेल्सियस तापमान के बीच 6 दिन गुजारने पड़े।

पेशेसे शिक्षक रही रेचेल को इंदिरा गाँधी प्रियदर्शिनी पुरस्कार, रेल मंत्रालय पुरस्कार, राष्ट्रीय साहसिक पुरस्कार तथा अन्य पुरस्कारोंसे सम्मानित किया जा चूका है।

माँ

तू ही रोशनी जीवन आत्मा में। तूही भरती चेतन अचेतन में।
चारो ओर मचा हो हल्ला गुल्ला। शांती समेट धीरज माँ तेरा गहना।।
खूद खोयी परिवार संभालने में। तनहा रही उसे आकार देने मे।
नौ रसों का तूझमें सरिता सा बहना। सफाई सच्चई संस्कार का तूझमें झरना।।
पनाह दी रिश्तों को तूने अपने दिल में। सागर भर दिया तूने जैसे गागर में ।
अस्त व्यस्त होती रहती जब दुनिया। मुस्कान ममता मिलाप भरी तेरी बगिया।
वायु जल अग्नि वसुंधरा भी जिसमें । खूशी तुझे आकाश सा आँचल फैलाने में।
समंदर सी पुखाई, दिल तेरा है दरिया। धूप छाँव भूक प्यास से उपर तुझे पाया।।
हमपर छाया तेरे पुण्य कर्मों से। हमारी रक्षा होती तेरे सुवचनों से ।
अंधेरा उलझन कष्टों में तूने जिया। सुबह सुलझन सुकुन हमे जो दिया।।
वात्सल्य सा अमृत है माँ के प्यार में। स्वयं बोलते माँ की सुरीली वाणी से ।
प्रेमलोक मैने पाया माँ के सम्मुख होकर।
कैसे उतारू तेरे ऋण, कई हजार है मुझपर।।

कृतिका बांबल
संगणक केंद्र

बेटी एक वरदान

आंधियाँ दीवार गिरा देगी,
बेचैनियाँ कुछ करने का हौसला देगी,
वो अपनी अना पे आ जाये बस,
लड़कियाँ सबके छक्के छुड़ा देगी।
ये सोच बनती कहाँ होगी,
सब धृतराष्ट्र होंगे, सबके आँखो पे पट्टियाँ होगी,
मियाँ कितनी गंदी नज़र से देखते हो,
आपके भी घर तो बहु-बेटियाँ होगी।
बदलाव बस तालियों तक सीमित ना हो,
लड़ते रहिये जबतक पूर्णत: जीत ना हो,
उसदिन आज़ादी का जश्न फक्र से मनाईयेगा,
जिसदिन बच्चियाँ सुनसान सड़कों पे भयभीत ना हो।
घर की आबरू को बचाईये साहब,
ये बात आम गुफ्तगू में लाइये साहब,
शायद नींद की गोली ली है आपने,
जल्दी होश में आईये साहब।

श्री. मिलिंद आनंद
शोध छात्र, संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग

क्रिकेट : अंजुम चोपड़ा

जयेन्द्र खांदे
खनन अभियांत्रिकी विभाग

आज क्रिकेट दुनिया का सर्वाधिक लोकप्रिय खेल बन चुका है। दर्शकों की क्रिकेट के प्रति दीवानगी देखते ही बनती है। क्रिकेट हमेशा से पुरुष प्रधान खेल रहा है। पर उसने कई बाधाओं को तोड़ दिया और एक स्टार की तरह बढ़ गयी। उसकी आभा, वास्तव में उज्ज्वल और उसकी आत्मा, अटूट। आज हमारी महिला क्रिकेटर्स धीरे-धीरे और लगातार उस धारणा को तोड़ रही हैं। लेकिन एक महिला थी, जिसने वास्तव में इस परंपरा को शुरू किया था। क्षेत्र में उसकी असीम प्रतिभा से लेकर उसके आत्मविश्वास के बाहर, वह हमेशा भारतीय महिलाओं के लिए एक प्रेरणा रही है। वह है, भारतीय क्रिकेटर, कमेंटेटर, लेखक, प्रेरक वक्ता, सलाहकार और एक बिजनेसवुमन और भारतीय महिला क्रिकेट टीम की पूर्व कप्तान - अंजुम चोपड़ा।

प्रारंभिक जीवन : अंजुम चोपड़ा का जन्म 20 मई 1977 नई दिल्ली हुआ। उन्होंने बहुत कम उम्र में क्रिकेट खेलना शुरू कर दिया था शुरुआत से एक खेल लड़की, जिसने पहली बार क्रिकेट के मैदान पर कदम रखा था। 9 साल की उम्र में उसने इंटर कॉलेज स्तर पर कॉलेज की लड़कियों की टीम के साथ अपना पहला दोस्ताना मैच खेला, जिसमें 20 रन बनाए और ले गई 2 विकेट। बाद में उसी वर्ष उसे अंडर 15 टूर्नामेंट में नई दिल्ली के लिए खेलने के लिए चुना गया। वह दिल्ली स्टेट बास्केटबॉल टीम का भी हिस्सा थीं, उन्होंने अपने स्कूल के साथ-साथ तैराकी, एथलेटिक्स और बास्केटबॉल में कॉलेज का प्रतिनिधित्व किया। अंजुम के परिवार का लगभग हर सदस्य सक्रिय रूप से खेलों से जुड़ा रहा है।

कैरियर : अंजुम चोपड़ा ने एयर इंडिया के लिए काम करना शुरू करने के बाद घरेलू मैचों के लिए उनका प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने 2012 की राष्ट्रीय चैंपियनशिप में दिल्ली की टीम का नेतृत्व किया। उनके नेतृत्व में, महिला टीम ने अपनी पहली राष्ट्रीय क्रिकेट चैंपियनशिप जीती। एयर इंडिया की टीम ने 2002 और 2003 के राष्ट्रीय और क्षेत्रीय टूर्नामेंट भी जीते। 2003 में, एयर इंडिया टीम को 'वर्ष की सर्वश्रेष्ठ टीम' घोषित किया गया था।

अंजुम का अंतरराष्ट्रीय करियर 17 साल की उम्र में शुरू हुआ। उन्होंने 1995 में न्यूजीलैंड के खिलाफ अपनी शुरुआत की। 1999 में, उन्होंने भारत के इंग्लैंड दौरे के दौरान शतक बनाया। अंजुम जल्द ही सर्वश्रेष्ठ भारतीय बल्लेबाज बन गयी। वह एक प्रतिभाशाली मध्यम गति के गेंदबाज भी थी। मैदान में उनकी तेजी ने उन्हें एक शानदार क्षेत्ररक्षक भी बना दिया। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि जल्द ही उसने एक प्रमुख भारतीय क्रिकेटर की शुरुआत की, उन्होने अपना अंतिम टेस्ट मैच वर्ष 2006 में टाउनटन में 29 अगस्त से 1 सितम्बर के बीच इंग्लैंड के खिलाफ खेला। उन्होने पिछला एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैच 16 मार्च 2012 को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मुंबई में खेला। अपने लंबे करियर में अंजुम ने टी-20 मैच भी खेली हैं। पहला टी-20 मैच पहली बार उन्होने डार्बी में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेला और अंतिम टी-20 मैच 23 मार्च 2012 को उन्होने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ विशाखापत्तनम में खेला। वर्ष 2000 तक, वह भारतीय टीम की उप-कप्तान बन गई थीं। न्यूजीलैंड में क्रिकेट विश्व कप में, वह सर्वोच्च भारतीय स्कोरर थीं। उसने दो बार प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार जीता।

वर्ष 2002 में, वह भारतीय महिला टीम की कप्तान बनीं। उनके नेतृत्व में, टीम ने कई पुरस्कार जीते। भारत ने दक्षिण आफ्रीका में टेस्ट मैच श्रृंखला '02 'में जीती। उन्होंने 2005 में विश्व कप फाइनल में टीम का मार्गदर्शन किया। उन्होंने 4 साल तक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपने देश की सेवा की।

भारतीय महिला क्रिकेट की मशाल वाहक : अंजुम ने भारतीय महिला टीम को बहुत प्रसिद्धि और पहचान दिलाई। उनके नेतृत्व कौशल को उनके साथियों ने सराहा। क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद भी, उन्होंने क्षेत्र में अपनी भागीदारी जारी रखी है। उन्होंने महिला क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए की गई विभिन्न पहलों का भी लगातार समर्थन किया।अंजुम को हमेशा एक ऑलराउंडर के रूप में याद किया जाएगा, जो किसी भी आवश्यक स्थान पर बल्लेबाजी कर सकता थी। वह तेज तर्रार और टवीस के लिए जानी जाती थी और अंततः मैच के लिए बहुत

अंतर रखती थी। वह टीम के सबसे योग्य सदस्यों में से एक थी और मैदान में सुपर स्विफ्ट थी। उसने कई बार अपनी टीम के लिए ओपनिंग की और दबाव में और भी बेहतर प्रदर्शन किया।

अंजुम ने 17 साल की उम्र में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण किया और आगे चलकर क्रिकेट का सुपर सफल करियर बनाया। उसने 12 टेस्ट, 127 वनडे और 18 टी 20 खेले। अंजुम ने टेस्ट में 548 और वनडे में 2,856 रन बनाए।

दूसरी पारी : अंजुम के करियर की दूसरी पारी भी उतनी ही रोमांचक रही है। अपने एमबीए के साथ सशस्त्र, अंजुम ने खुद को एक कॉर्पोरेट और प्रेरक वक्ता के रूप में स्थापित किया है। उसने कई संगठनों जैसे वोडाफोन, गोल्डमैन सैक्स, आदि में प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए हैं। आदर्श से हटकर, आईपीएल कवरेज में चार महिला कमेंटेटर, सभी पूर्व खिलाड़ी – भारत की अंजुम चोपड़ा, इंग्लैंड की ईसा गुहा और ऑस्ट्रेलिया की मेलानी जोन्स और लिसा स्टालेकर शामिल हैं। चोपड़ा और स्टालेकर ने पुरुषों के साथ कमेंट्री बॉक्स साझा किया ।

- अंजुम एक प्रकाशित लेखक भी हैं। उन्होंने पुस्तक '1745 – 2013 से महिला क्रिकेट विश्व – एक यात्रा' का सह–लेखन किया है। उन्होंने पुस्तक में वैश्विक परिप्रेक्ष्य से क्रिकेट के इतिहास के बारे में लिखा है।
- अंजुम मैदान के साथ–साथ निडर भी रहे हैं ! उन्होंने रियलिटी शो फियर फैक्टर – खतरों के खिलाड़ी सीजन 4 में भाग लिया है।
- उसकी बहुमुखी प्रतिभा की कोई सीमा नहीं है। अंजुम ने एक डॉक्यूड्रामा में अभिनय किया है।
- अंजुम ने हमेशा पुरुष और महिला क्रिकेट के बीच की खाई को पाटने की कोशिश की है। उन्होंने इस कारण को बढ़ावा देने के लिए कई फैशन शो में रैंप वॉक किया।
- खेलों से उसका जुड़ाव कभी छूटने वाला नहीं है। अंजुम वर्तमान में स्पोर्ट्स कमेंटेटर और एनालिस्ट के रूप में काम कर रही हैं। उसने दूरदर्शन और सोनी सिक्स के साथ काम किया है। वह 2014 विश्व कबड्डी लीग की कमेंटेटर थीं।
- अंजुम पहली भारतीय महिला क्रिकेटर हैं जिन्हें मैरीलेबोन क्रिकेट क्लब (MCC) की मानद जीवन सदस्यता से सम्मानित किया गया है।
- अंजुम ने क्रिकेट के मिश्रित खेल की वकालत की है (पुरुष और महिला दोनों एक साथ खेल रहे हैं)। उन्होंने आईपीएल टीम कोलकाता नाइट राइडर्स के साथ भी अभ्यास किया है।
- अंजुम ने विश्व कप 2011 से पहले दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट बोर्ड के साथ एक सलाहकार की भूमिका निभाई है। उन्होंने सद्भावना राजदूत के रूप में दक्षिण अफ्रीका में स्तन कैंसर के प्रति जागरूकता भी बढ़ाई।
- दिल्ली के फिरोज़ शाह कोटला स्टेडियम में गेट्स नंबर 3 और नंबर 4, अंजुम चोपड़ा के नाम पर हैं।

पुरस्कार :

- पद्म श्री, 2014
- अर्जुन पुरस्कार, 2007
- राजीव गांधी दिल्ली राज्य पुरस्कार, 2004
- आईसीसी प्लेयर ऑफ द मैच, 2000, 2005, 2009
- Zee Astitva अवार्ड – 2008 में अनुकरणीय महिलाओं के लिए पुरस्कार
- फिक्की – वाईएफएलओ – यंग वीमेन अचीवर्स अवार्ड, 2009
- मैरीलेबोन क्रिकेट क्लब, लॉर्ड्स क्रिकेट ग्राउंड, लंदन, 2016 की मानद सदस्यता

उपलब्धियां :

- एकदिवसीय शतक लगाने वाले पहले भारतीय महिला क्रिकेटर
- पहले भारतीय महिला कप्तान जिन्होंने विदेशों में टेस्ट सीरीज़ जीती

- पहली भारतीय महिला कप्तान जिसने घरेलू श्रृंखला जीती (जो 2002 में भारत में इंग्लैंड के खिलाफ 5–0 की सफेदी जीत थी)
- भारत के लिए 100 से अधिक ODI में प्रतिस्पर्धा करने वाले पहली क्रिकेटर
- भारत के लिए 6 विश्व कप में भाग लेने वाले पहली खिलाड़ी (चार एकदिवसीय विश्व कप और दो टी 20)
- वनडे और टी 20 के साथ 12 टेस्ट मैच खेलने वाले आधुनिक क्रिकेट के केवल खिलाड़ी
- अंतरराष्ट्रीय नियुक्ति पाने वाले पहली खिलाड़ी
- पुरुषों की क्रिकेट मैचों में कमेंटेटर के रूप में फीचर करने वाली पहली महिला खिलाड़ी और स्पोर्ट्सकास्टर

एक जीत

एक जीतने ऐसा क्या बदलाव कर दिया है?
कल तक के तुझ में और आज के तुझ में बता क्या अंतर दिख रहा है?
हां, कल तक अनदेखा था तेरा वो घर, जो आज तुझे अचानक खूबसूरत दिखाई पड़ता है।
कल तक बेचैनी में चल रहा था जिस राह पर, आज उसी राह पर खिले हुए फूल दिखाई पड़ रहे हैं।
ये आंखें, ये कान और तुम्हारे लफ्ज भी देखो किस कदर बदल गए हैं।
कल तक मुंह छुपाए फिर रहे थे जिस भीड़ से, आज उसी भीड़ को अपनी विजय गाथा सुनाने और उनकी वाह वाह सुनने को ढूंढ रहे है।
पर याद तुम्हे आते नहीं उसी भीड़ के वही चेहरे, जो कल तक तुम्हारे भी चेहरे थे।
जो कलतक अपने दोस्तों की जीत पर चाह कर भी खुश नहीं हो पा रहे थे।
सोचते थे ऐसा क्या है उनमें जो तुझमे नहीं कि वो जीत गए, और अपनी हार में तुम ना चाहते हुए भी उनकी जीत से डरने लगे ?
ऐसा क्या हो गया कि कलतक अपने आप को उनके काबिल ना समझने वाले तुम,
आज वही दोस्त तुम्हे फिर से अपने दोस्त लगने लगे।सोचता हूं उस एक दिन ने ऐसा क्या बदल डाला ?
कल तुझमें ऐसा क्या नहीं था जो आजने तुझे सिखा डाला ?
हर हार के बाद सोचता के तुझमें क्या कमी है ?
जरूर कुछ तो कमी है, तभीतो लाख कोशिशों के बावजूद वो मंजिल आजतक अनछुई रही है।
एक छोटी सी हार में क्यो स्वयं को छोटा समझ रहे हो ?
और क्यों एक जीत से खुद को नाशिकस्त समझ रहे हो ?
क्यों उस कल में और इस आज में फर्क ढूंढने की व्यर्थ कोशिश में लगे पड़े हो?
क्योंकि सच तो ये है मेरे दोस्त, कि कल जो तुम थे वही तुम आज हो। भटक रहा था कल तक सागर में,
जुट गए थे वो हाथ पतवार चलाने में उम्मीद खोया था कल तक तू, कोस रहा था अपनीही नाव को, कहता था कमजोर है वो देखो उसकी धीमी चाल को तो आज किनारा देखे क्यों तारीफों से भर गए हैं तेरे ये लफ्ज उसी टूटी नाव के लिए तरस रही थी कल तक जो विकराल लहरों के बीच, बस एक नया दिन देख पाने के लिए क्या किनारा मिल जाने से उसी पुराने लकड़ी में आज अचानक चंदन के गुण आ गए ?
कल तक भीड़ में अपनी पहचान छिपाए फिर रहे थे, और आज बस तुम ही तुम छा गए तो स्वयं की आलोचना में डूबे मनपर, कलतक के उस परास्त तुमपर, आज अचानक गुरूर से सजा वो ताज क्यो ?
सोच कर मन में चल रहा है द्वंद के सही थे कल तुम, या सही तुम आज हो ?
पर सच तो यही है मेरे दोस्त के जो तुम कल थे वही तुम आज हो

श्री. विभव देशपांडे
छात्र, संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग

डॉ. मंदाकिनी आमटे

श्रीमती रिता सतीश बारापात्रे
परिक्षा विभाग

मंदाकिनी आमटे 'मंदा आमटे' नाम से लोकप्रिय है, जो महाराष्ट, भारत की एक चिकित्सक और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। मंदाकिनी आमटे का जन्म देशपांडे परिवार में हुआ था। उन्होने अपनी एमबीबीएस कि पढाई नागपुर से पूरी की थी और बाद में एनेस्थीसिया में पोस्ट-ग्रेजुएशन करने का फैसला किया। डॉ. प्रकाश आमटे, उनके भावी पति, एक सर्जन थे। एक बार दोनोने एक ही ऑपरेशन थियेटर में एक साथ काम किया।

मंदाकिनी आमटे ने अपने पति डॉ. प्रकाश आमटे के साथ 2008 में महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले में काम किया। माडिया गोंडों के लोक बिरादरी के बीच उनके परोपकारी कार्यों के लिए और 'सामुदायिक नेतृत्व' के लिए मैग्सेसे पुरस्कार से उन्हे सम्मानित किया गया था। वह बाबा आमटे की बहू हैं।

मंदाकिनी के पिता, डॉ. प्रकाश के साथ उनकी शादी के विरोध में थे क्योंकि उन्हें डर था कि शादी के बाद उन्हें कुष्ठरोगियों के बीच रहना होगा, जो तब वर्जित था। बाबा आमटे ने उन्हे आनंदवन बुलाया और पूछा कि क्या वह जीवन भर डॉ. प्रकाश के साथ जंगल में रहने के लिए तैयार है। जब उन्होने आश्वासन दिया, तो उन्हे शादी के लिए सहमति दी गई और उन्होंने शादी कर ली।

जिस जंगल में डॉ. मंदाकिनी उनके पती के साथ रहते थे वह काफी दूरस्थ और निर्जन था। अंग्रेज़ों की गुलामी से आजाद होकर हिन्दुस्तान विकास के रास्ते पर चल पड़ा और उसने बहुत कुछ हासिल भी कर लिया, लेकिन सदियों से जंगलों और दूरस्थ निर्जन इलाकों में रहने वाले आदिवासियों के हिस्से आजादी के साठ वर्षों बाद भी, न विकास आया, न बदलाव। सुविधा की व्यवस्था तो दूर की बात है, उन्हें तो देशवासी के रूप में, भारत में रहते हुए भी भारतवासी की पहचान तक नहीं मिली थी। माडिया गौंड़ जाति के आदिवासी भी इसी त्रासदी के शिकार थे। यह पूर्वी महाराष्ट्र में आन्ध्र प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ राज्यों की सीमा पर डेढ़ सौ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में घने जंगल के बीच बसे हैं।

1973 में बाबा आमटे के साथ एल्बर्ट श्वित्ज ने आदिवासी क्षेत्र में आदिवासियों की स्वास्थ्य तथा शिक्षा की आवश्यकताओं के लिए लोक बिरादरी प्रकल्प खोला हुआ था।

सन 1974 में डॉ. मंदाकिनी के पति डॉ. प्रकाश को उनके पिता का सन्देश मिला कि वह माडिया गौड जाति के आदिवासियों के हित में उन्हीं आदिवासियों के क्षेत्र में पहुँचकर काम शुरू करें। पिता के इस आह्वान पर डॉ. प्रकाश हेमलकसा के लिये चल पड़े। डॉ. मंदाकिनी भी पोस्ट ग्रेजुएट डॉक्टर थीं और उस समय एक सरकारी अस्पताल में काम कर रही थीं। वह भी पति के साथ अपनी नौकरी छोड़कर हेमलकसा के लिए चल पड़ीं।

हेमलकसा में डॉ. मंदाकिनी और उनके पती ने एक बिना दरवाजे की कुटिया बनाई और वहाँ बस गए, जहाँ न बिजली थी, न निजता की गोपनीयता। वहाँ इन दोनों ने माडिया गौंड आदिवासियों के लिए चिकित्सा तथा शिक्षा देने का काम संभाला। ये लोग एक पेड़ के नीचे अपना दवाखाना लगाते और बस आग जलाकर गर्माहट पाने की व्यवस्था करते। वहाँ के आदिवासी बेहद शर्मीले तथा संकोची स्वभाव वाले थे और उनके मन में इन लोगों के प्रति विश्वास लगभग नहीं था। लेकिन डॉ. मंदाकिनी और उनके पती ने हार नहीं मानी। उन दोनों ने उन आदिवासियों की भाषा सीखी और धीरे-धीरे उनसे संवाद बनाकर उनका विश्वास जीतना शुरू किया। इस क्रम में उनके कुछ अनुभव बहुत सार्थक रहे। इन लोगों की कुशल चिकित्सा से मिर्गी के रोग से ग्रस्त एक लड़का जो बुरी तरह आग में जल गया था, चमत्कारिक रूप से ठीक हो गया, इसी तरह से एक मरणासन्न आदमी जो दिमागी मलेरिया से पीढित था, एकदम ठीक होकर जी उठा। इस तरह जब भी इनकी

चिकित्सा से कोई आदिवासी स्वस्थ हो जाता तो वह चार और मरीज लेकर लौटता। इस क्रम से आदिवासियों के बीच प्रकाश तथा मंदाकिनी अपनी जगह बनाते चले गए।

1975 में स्विजरलॅण्ड की वित्तीय सहायता से हेमलकसा में एक छोटा-सा अस्पताल बनाया गया, जिसमें बेहतर चिकित्सा संसाधन उपलब्ध थे। इस अस्पताल में डॉ. मंदाकिनी और पती के लिए कुछ ऑपरेशन भी कर पाना संम्भव हो सका। इन लोगों ने मलेरिया, तपेदिक, पेचिश-दस्त के साथ आग से जले हुए लोगों का तथा साँप-बिच्छू आदि के काटे का इलाज भी बेहतर ढंग से शुरू किया। आदिवासियों के जीवन के अनुकूल इन्होंने यथा संम्भव अस्पताल का काम-काज, अस्पताल के बाहर, पेड़ के नीचे किया और उसके लिए उनसे कुछ भी पैसा नहीं लिया गया। डॉ. मंदाकिनी ने इस बात को समझा कि निरक्षरता के कारण ये आदिवासी वन विभाग के भ्रष्ट अधिकारियों तथा दूसरे लालची लोगों के हाथों अक्सर ठगे जाते हैं। आमटे दम्पति ने आदिवासियों को उनके अधिकारों की जानकारी देनी शुरू की, तथा वन अधिकारियों से, इनकी तरफ से बातचीत करनी शुरू की, मंदाकिनी तथा उनके पती ने प्रयासपूर्वक भ्रष्ट वन अधिकारियों को वहाँ से हटवाया भी और साथ ही 1976 में हेमलकसा में एक स्कूल की स्थापना की।

आमटे दम्पति के उस सेवा कार्य के लिए उन्हें वर्ष 2008 का 'मैग्सेसे पुरस्कार' संयुक्त रूप से दिया गया। मोनाको की रियासत ने 1995 में डॉ. मंदाकिनी और उनके पती के जीवन कार्य के सम्मान में एक डाक टिकट निकाला है। बॉम्बे मेडिकल एड फाउंडेशन का 23वां 'कर्मयोगी पुरस्कार' डॉ. मंदाकिनी आमटे तथा उनके पती को संयुक्त रूप से दिया गया । श्री जैताई देवस्थान, वणी 2014 का प्रतिष्ठाप्राप्त जैताई मातृगौरव पुरस्कार डॉ. मंदाकिनी और उनके पति को दिया गया।

नारी का सम्मान

नारी जिससे यह सृष्टि तृप्त होती है, जो जीवन आधार है,
संसार मैं भगवान का भेजा हुआ साक्षात रूप है।
नारी एक किताब है जिसमे हम
केवल भूगोल पढना चाहते है इतिहास नहीं,
एक कागज़ जिस पर हम कवितायँ
तो लिखते है पर क्रांति नहीं।

नारी सशक्तिकरण के नारों से,गूंज उठी है वसुंधरा,
संगोष्ठी, परिचर्चाएं सुन-सुन, अंतर्मन ये पूछ पड़ा।

मनचले, वाणी के तीरों से, सीना छलनी कर देते,
वहशी, दरिंदे, पशु,असुर, क्यूं हवस अपनी बुझा लेते।

सरस्वती, लक्ष्मी, शीतला, नारी दुर्गा भी बन जाए,
मनमोहिनी, गणगौर सी, काली का रूप भी दिखलाए।

शक्ति को ना ललकारो, इसको नारी ही रहने दो,
करुणा, ममता की सरिता ये,
कल-कल शीतल ही बहने दो ।

स्वयं को नमन कर और आगे बढ़ चल,
स्वयं को पहचान, तुझ में शक्ति अपार है।

ठोकर मार उसे जो तेरा सम्मान करना न जाने,
बढ़ चल, बढ़ चल, नई राहें तेरा रस्ता तके हैं।

श्रीमति त्रिवेणी ली. हटवार
भंडार विभाग,
वि.न.आइ.टी., नागपुर

रिश्तों को कैसे सवारे?

अदिती आनंद देशमुख
समुपदेशिका स्वास्थ्य केंद्र

जिंदगी खुबसुरत बनती है अलग अलग रंगोंके रिश्तोसे..! कुछ रिश्ते जन्मसेही हमारे साथ अपने आप जुड जाते है तो कुछ रिश्ते एक दुसरे के साथ रहनेसे, एक दुसरे से हमेशा बात करनेसे बन जाते है। ना धन से ना शौहरतसे आपकी अमिरी दिखती है। आपका साथ निभानेवाले रिश्तेदारोसे और दोस्तोसे !

कुछ रिश्ते औपचारिक होते है तो कुछ आनौपचारिक..कुछ दिल के करीब होते है तो कुछ व्यावहारिक... रिश्ता जोडना आसान होता है किंतु उसे निभाना उतना आसान नही होता।

घर परिवार मे मेलजोल रखना, सबका खयाल रखना, हर एक सदस्य की मर्जी संभालना इन सब मे महिलाओं की भूमिका अहम् रहती है फिर वो कामकाजी महिला हो या गृहिणी। आज के इस भागदौड भरी जिंदगी मे रिश्तो को संभालना और निभाना एक चुनौती बन गयी है। क्योंकी छोटे हो या बडे हर कोई अपने आपमे ही व्यस्त है। मोबाईल और इंटरनेट के तेज जमानेमे हरएक चिज के लिये। app बन गया है। जिसके कारण एक दुसरे का वास्तविक संवाद और जरुरत खतम हो रहे है। बच्चो को खेलने के लिये अब सच्चे दोस्त बनाने के जरुरत नही.. वे मोबाईल और कंप्युटर गेम खेलके खुश हो जाते है। इसी कारण दैनंदीन जीवनमे रिश्ते निभाना, दुसरोंकी भावनाओंको समझना एक चुनौती हो गयी है। कुछ छोटी छोटी बाते अगर समझ ले और उसे व्यवहारमे लाये तो रिश्तोंको संभालना आसान हो जायेगा।

सुसंवाद

कोई भी रिश्ता हो उसे सुदृढ रखने के लिये आपस मे सुसंवाद होना बहुत जरुरी हैं। सच्चा एवं मुक्त संवादही अच्छे रिश्ते की बुनियाद होता है। एक दुसरे की जरुरते और अपेक्षाओंको समझना उसके अनुसार वर्तन करना इससे आपसी संबंध दृढ होते है। आपसमे वार्तालाप करनेसे अपेक्षाये उजागर होती है। जैसे की देर रात तक जवान बेटे ने दोस्तोंके साथ बाहर घुमना आपको सही नही लगता है तो आपने यह बात उसे शांतीसे पहलेही बताना और उसके पिछे क्या कारण है यह समझाना जरुरी है। तभी उसे इन बातोंकी अहमियत समझेगी और अपने आप वह सही गलत जान पायेगा। यदी आपने बेटे को इसके बारे मे बतायाही नही और 'उसे पताही होगा' ऐसा मानके चले तो गडबड हो जायेगी और इस मान्यता के आधार पर बेटा सही समयपर घर ना आने पर खूब डाट लगाई तो बात सुधरने की जगह बिगड जायेगी तथा आपके रिश्ते मे दरार आयेगी। अत: कोई भी रिश्ता हो वहा अपनी अपेक्षाओंको और भवनाओंको व्यक्त करना जरुरी है। नियमीत और अनौपचारिक संवाद से ही यह साध्य हो सकता है।

स्नेह तथा आदर

एक दुसरे के प्रति आदर भाव हो तो ही आपसी स्नेह वृद्धिंगत होता है। दुसरे के भावनाये और विचार उतनेही महत्वपूर्ण है जितनेकी स्वयं के ! यह भाव मन मे रहना जरुरी है। दोस्तोंने रिश्तेदारोंने आपका सम्मान करना चाहिये ऐसा यदी आपको लगता है तो आपको भी उनको सम्मान देना होगा। आप जिस भाषा मे बात करेंगे उसी भाषामे सामनेवाला जवाब देता है। स्नेहपूर्ण एवं आदरयुक्त संवादही संबंधोको मधुर रखता है। फिर वह सास-बहु का रिश्ता हो या पति-पत्नी का परस्पर आदरभावना रही तो ही रिश्ता सुदृढ रहता है अन्यथा छोटी मोटी बातोमे वाद विवाद हो कर नकारात्मकता बढती है। चार लोगोंमे बुराई ना करते हुये यदी सास आपने बहुको शांतीसे एकांतमे अच्छे शब्दोंमे उसकी गलतीयाँ बताती है और सबके सामने अच्छे गुणोंकी प्रशंसा करती है तो उसका सकारात्मक प्रभाव दिखता है।

समझौता

यदि सबको साथ लेकर चलना है तो कुछ अपनी बाते और कुछ दुसरोकी बाते दोनो स्वीकार करनी पडती है। अपनीही मनमर्जी चलायेंगे तो सामने वाला साथी आहत हो सकता है। अत: समझदारीसे काम लेकर कुछ स्वयं की बाते छोडकर दुसरोकी भी बातो को महत्व

देना चाहिये। बिना समझौते के किसी का जीवन नही चालता..अपना अहं छोडकर निस्वार्थ भावसे यदि सोचे तो रिश्तोंमे तक्रार कम होती है। प्रत्येक व्यक्ती का स्वभाव, रुची भिन्न भिन्न होते है अत: आपस मे मतभेद होना स्वाभाविक है। ऐसे परिस्थिती मे सद्सद विवेक बुद्धी से सोच कर निर्णय लिया गया तोही आपसी संबंध मजबुत रहते है। पति पत्नी के रिश्तेमे समझौतापूर्ण वर्तन अत्यंत महत्व रखता है।

सहकार्य

एक दुसरे को समझना और जरुरत के समय पर सहकार्य करना इससे परस्पर संबंध दृढ होते है। सहकार्य करनेवाले व्यक्ती के प्रति आत्मियता बढती है। परिवार के सारे सदस्योंने अगर एक दुसरे की सहायता की, घर के छोटे छोटे कामोंमे हात बटाया तो एक ही व्यक्ती पर सारे कामकाज का बोझ नही पडता है और हसते खेलते काम भी हो जाते है। इससे आपसमे मेलजोल बढता है और परिवार मे आपसी ऐक्य प्रस्थापित होता है।

रिश्ते बनाना और रिश्ते निभाना दोनोही कौशल्यपूर्ण कार्य है। एक दुसरे के साथही खुशीयॉ बढती है। किंतु यह साथ निभातेवक्त एक दुसरे की कदर करना, विवाद पूर्ण परिस्थिती का संयम से सामना करना, पुरानी गलतीयोंको न दोहराना एवं बिती बातोंको भुला देना जरुरी है। इन सबके साथ सुसंवाद, स्नेह–आदर, समझौता तथा सहकार्य यह चार स से बनी चतु:सुत्री हम अपनायेंगे तो जीवन की बगिया अलग अलग रंग और गंध के रिश्तोंके फुलोंसे महक उठेगी।

राष्ट्रापिता

राष्ट्रापिता तुम सुप्त समाज मे फुंके प्राण
जयतु हे मानिनी, अमर तेरा बलिदान।।धृ।।

सौंदर्यवती पद्मिनी वह, चितौड की महारानी
उसकी प्राप्ती अल्लाउद्दिनने थी मनमे ठानी
हुई लडाई घमासान, राज्यपर विपदा आयी
समिधा बन जौहार किया किंतु बेचा ना स्वाभिमान ।।1।।

कर्तव्यपालनमे आगे पन्नाधाय यह नाम
राजपुत्र का रक्षण करना, था बहुत कठीन काम
निजपुत्र की आहुती देकर हुई वह गुमनाम
स्वामीनिष्ठा की बन गयी एक आनोखी पहचान ।। 2।।

कित्तुर की चेन्नमा, विरांगना रानी दुर्गावती
या हो झाँसी की रानी, जो शत्रु को ललकारती
युद्ध मे स्वयं कुद पडी, वह चिंगारी धधकती
शौर्य की दिप्ती से, किया जगत को प्रकाशमान।। 3।।

तेजस्विता और त्याग की है यह वीरगाथा
मातृभूमी सर्वश्रेष्ठ, बने हम समर्पिता
जैसे सागर मे होती एकरुप सरिता
दसो दिशाओं मे गुंजे गौरवशाली यशोगान ।।4।।

जयतु हे मानिनी, अमर तेरा बलिदान।।
जयतु हे मानिनी, अमर तेरा बलिदान ।।

अदिती आनंद देशमुख
समुपदेशिका, स्वास्थ्य केंद्र

किरण बेदी - प्रथम महिला आय.पी.एस. अधिकारी

तेजल झाडे
नेटवर्क केंद्र

1972 में प्रतिष्ठित इंडियन पुलिस सर्विस (आईपीएस, भारतीय पुलिस सेवा) में शामिल होने वाली प्रथम महिला, किरण बेदी का जन्म 9 जून, 1949 को अमृतसर, पंजाब में हुआ था।

शिक्षा एवं रूचि - किरण बेदी की प्रारंभिक शिक्षा अमृतसर के कॉन्वेंट स्कूल में हुई। सन 1964-68 में उन्होंने शासकीय कन्या महाविद्यालय, अमृतसर से अँग्रेजी साहित्य ऑनर्स में स्नातक तथा सन 1968-70 में राजनीति शास्त्र में उपाधि हासिल की।

भारतीय पुलिस में अपनी सेवाओं के दौरान भी उन्होंने पढ़ाई के प्रति अपना मोह नहीं छोड़ा। सन 1988 में दिल्ली विश्वविद्यालय से कानून में स्नातक की उपाधि हासिल की।

राष्ट्रीय तकनीकी संस्थान, नई दिल्ली से 1993 में सामाजिक विज्ञान में 'नशाखोरी तथा घरेलू हिंसा' विषय पर शोध करके पी.एच.डी. की डिग्री हासिल की। सन 2005 में किरण बेदी को 'डॉक्टर ऑफ लॉ' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

पदभार - भारतीय पुलिस सेवा में पुलिस महानिदेशक (ब्यूरो ऑफ पुलिस रिसर्च एंड डेवलपमेंट) के पद पर पहुँचने वाली किरण एकमात्र भारतीय महिला थीं, जिसे यह गौरव हासिल हुआ। किरण डीआईजी, चंदीगढ़ गवर्नर की सलाहकार, नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो में डीआईजी तथा यूनाइटेड नेशन्स में एक असाइनमेंट पर भी कार्य कर चुकी हैं।

उल्लेखनीय कार्य - अपने कार्यकाल के दौरान और कार्यकाल के पश्चात भी किरण बेदी ने कई उल्लेखनीय कार्य किए। जिनके जरिए उन्हें प्रसिद्धि मिली। जब किरण बेदी को 7,200 कैदियों वाली 'तिहाड़ जेल' की महानिरीक्षक बनाया गया तो उन्होंने वहाँ एक नया मिशन चलाया। इसके अंतर्गत उन्होंने कैदियों के प्रति 'सुधारात्मक रवैया' अपनाते हुए उन्हें योग, ध्यान, शिक्षा व संस्कारों का पाठ पढ़ाया। यह बहुत कठिन लक्ष्य था किंतु दृढ़निश्चयी किरण बेदी ने तिहाड़ जेल का नक्शा बदलकर उसे 'तिहाड़ आश्रम' बना दिया। इसके लिए किरण बेदी को आज भी जाना जाता है। जब किरण नई दिल्ली की 'ट्रैफिक कमिश्नर' बनीं तब तीखे तेवरों वाली इस महिला ने पार्किंग वाइलेशन करने पर भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री की गाड़ी को भी नहीं बक्शा। किरण के कानून को सभी नागरिकों के लिए समान मानते हुए अपना कर्तव्य निभाते हुए प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की गाड़ी को भी क्रेन से उठवा दिया। तभी से किरण बेदी 'क्रेन बेदी' के नाम से विख्यात हुई।

किरण को नवाज़ा गया - किरण बेदी को उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के कई राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा गया। इसमें से प्रमुख पुरस्कर प्रेसीडेंट गेलेट्री अवार्ड (1979), वीमेन ऑफ दी ईयर अवार्ड (1980), एशिया रिजन अवार्ड फॉर ड्रग प्रिवेंशन एवं कंट्रोल (1991), महिला शिरोमणि अवार्ड (1995), फादर मैचिस्मो ह्यूमेटेरियन अवार्ड (1995), प्राइड ऑफ इंडिया (1999) तथा मदर टेरेसा मेमोरियल नेशनल अवार्ड (2005) आदि प्रमुख हैं। इन सभी पुरस्कारों के अलावा किरण बेदी को सराहनीय सेवा के लिए सन 1994 में 'रोमन मैग्सेसे अवार्ड' से भी नवाजा गया।

किरण पर बनी डॉक्यूमेंट्री फिल्म - सहायक एडीटर रह चुकी मशहूर ऑस्ट्रेलियाई फिल्मकार मेगन डॉनमेन का यह पहला स्वतंत्र प्रोजेक्ट था। जिसमें उन्होंने किरण बेदी के जीवन के उतार-चढ़ावों व संघर्षों को एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म के रूप में प्रस्तु किया है। 'यस मैडम, सर' नाम की इस फिल्म में मशहूर हॉलीवूड हेलेन मिरेन ने सूत्रधार के रूप में अपनी आवाज दी है।

क्यों लिया वी.आर.एस. ? -वर्षों तक देश सेवा के कार्य में अपना जी-जान लुटाने वाला हर व्यक्ति तरक्की चाहता है। किरण बेदी के साथ भी यही हुआ। दिल्ली के उपराज्यपाल ने किरण बेदी को दिल्ली का पुलिस कमिश्नर बनाए जाने की सिफारिश की थी किंतु गृह मंत्रालय किरण बेदी के स्थान पर वाई.एस. डडवाल को यह पद देने के पक्ष में था।

अत: किरण के स्थान पर 1974 बैच के वाई.एस. डडवाल को दिल्ली का पुलिस कमिश्नर बनाया गया, जिससे क्षुब्ध होकर किरण बेदी ने वी.आर.एस. ले किया।

समाजसेवा की पहल – अपने निर्धारित कार्य के अलावा भी किरण बेदी ने समाजसेवा में अपनी रूचि को मूर्त प्रदान करते हुए दो एन.जी.ओ. की शुरूआत की। सन 1987 में किरण ने 'नवज्योति' तथा 1994 में 'इंडिया विजन फाउंडेशन' नामक संस्थान की स्थापना की। इनका प्रमुख लक्ष्य नशाखोरी पर अंकुश लगाना तथा गरीब व जरूरतमंद लोगों की सहायता करना है। इस संस्थाओं को यूनाइटेड नेशन्स की ओर से 'सर्ज सॉइटीरॉफ मेमोरियल अवार्ड' से भी नवाजा जा चुका है। अपने जीवन व पेशे की हर चुनौती का हँसकर सामना करने वाली किरण बेदी साहस व कुशाग्रता की एक मिसाल हैं, जिसका अनुसरण इस समाज को एक सकारात्मक बदलाव की राह पर ले जाएगा। 'क्रेन बेदी' ने नाम से विख्यात इस महिला ने बहादुरी की जो इबारत लिखी है, उसे सालों तक पढ़ा जाएगा।

'एकता का मंत्र'

(सभी भारतीय वीर जवानों को समर्पित)

ऐ नादान पडोसी,
खुदको पाक समझनेवाले,
हरकतें क्यों नापाक करता है तू?
जबसे अलग किया तूझे,
बीना वजह फुदकनेवाले,
परवाह न करता कीसीके धाकसे तू? ।।1।।
कभी अमरीका, तो कभी चीन से,
दोनो हाथ मिलानेवाले,
बहोत ही चालाक बनता है क्या तू?
47,65,71 और करगील,
ईन सब युद्ध में हारनेवाले,
क्या जरा भी शर्मनाक नहीं होता तू? ।। 2।।
बरसों से खुद चैन से ना रहता,
और हमें चैनसे रहने न देनेवाले,
मानवता के लिए बडा दर्दनाक है तू ।
पुरे विश्व मे कई कई सदियों से,
संसार के नायक हम कहलानेवाले
दुनिया का सबसे बडा खलनायक है तू ।। 3।।
अपने गीरेबान में एक बार झांक ले,
सारी दुनियां में कटोरा लेके घुमनेवाले,
तेरे अवामकी हालत भयानक कर बैठाहै तू!
कभी मसूद अजहर तो कभी कसाब,
तो कभी आतंकी-वाणी को भेजनेवाले,
क्यूं बनता है, इन सबका तारक तू?।। 4।।
बार बार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर,
मगरमच्छ के आंसू लेके रोनेवाले,
बीना सिंग-पैरकी बे-बाक बाते छोड दे तू।
और सुन! मेरी सेना का ईम्तेहांन मत ले,
बात बात पर फायरिंग करनेवाले,
एक पल में खाक होके रह जाएगा तू ।। 5।।
ये देश, हिन्दू मुस्लीम सिख ईसाई बौद्ध का,
अकल ठिकाने लगाना है तो लगवाले,
आईन्दा मत बनाना? किसीका मजाक तू।
मत भूल! तेरी औकात क्या है?
विश्व में डंका हमारा है, ये बात अब मानले,
देगा क्या आतंकी करतूतों को तलाक तू?।। 6।।
370 की कलम से तेरा क्या वास्ता?
कश्मीरी अवाम को भडकानेवाले,
क्यूं बनता है ईस मसले में चलाक तू?
आए दिन हर रोज घुसखोरी करवाता,
पत्थरबाजों से आतंक फैलानेवाले,
क्यूं करता है ऐसी हरकते खतरनाक तू? ।। 7।।
कश्मीर हमारा अभिन्न अंग है और रहेगा,
ईस पर बुरी नजर गडाकर रखनेवाले,
भूलगया सर्जीकल स्ट्राईक की झलक तू?
हम तो कभी के अंतरिक्ष पहूंच चूके है,
खुद अपनी अर्थव्यवस्था बिगाडनेवाले,
मत भूल! बाप है तेरे-हमारा बालक है तू ।।8।।
अबभी वक्त है तूझे सुधरना हो तो सुधर ले,
कर दें सारे आतंकी अब हमारे हवाले,
मुख्यधारा आके, खत्म कर नाहक काम तू!
ये देशहै मेरा, वीर पराक्रमी क्रांतिकारियों का,
बीना वजह हमसे पंगा लेनेवाले,
होगा मात खानेवाला पहला ग्राहक तू?।।9।।

प्राध्यापक किशोर न. जोगलेकर
वास्तुकला एंव नियोजन विभाग

मार्मिक कहानी

''जज अपनी पत्नि को क्यों दे रहें हैं तलाक?''

संतोष कुमार साहू
संगकण विज्ञान एवं अभियांत्रिकी

कल रात एक ऐसा वाकया हुआ जिसने मेरी जिंदगी के कई पहुलओं को छू लिया।

करीब 7 बजे होंगे

शाम को मोबाईल बजा।

उठाया तो उधर से रोने की आवाज....

मैंने शांत कराया और पूछा कि भाभीजी आखिर हुआ क्या?

उधर से आवाज़ आई...

आप कहॉ हैं??? और कितनी देर में आ सकते हैं?

मैंने कहा : ''आप परेशानी बताइये''।

और ''भाई साहब कहाँ हैं.....? माताजी किधर हैं.....?''

''आखिर हुआ क्या...?''

लेकिन

उधर से केवल एक रट कि ''आप आ जाइए'', मैंने आश्वासन दिया कि कम से कम एक घंटा पहुंचने में लगेगा। जैसे तैसे पूरी घबराहट में पहुँचा; देखा तो भाई साहब (हमारे मित्र जो जज हैं) सामने बैठे हुए हैं;

भाभीजी रोना चीखना कर रही हैं । 12 साल का बेटा भी परेशान हैं; 9 साल की बेटी भी कुछ नहीं कह पा रही हैं।

मैंने भाई साहब से पूछा कि ''आखिर क्या बात हैं???''

''भाई साहब कोई जवाब नहीं दे रहे थे।

फिर भाभी जी ने कहा ये देखिये तलाक के पेपर, ये कोर्ट से तैयार करा के लाये हैं, मुझे तलाक देना चाहते हैं।

मैंने पूछा – ये कैसे हो सकता है ??? इतनी अच्छी फैमिली है 2 बच्चे हैं, सब कुछ सेटल्ड है, ''प्रथम दृष्टि में मुझे लगा ये मजाक हैं।''

लेकिन मैंने बच्चों से पूछा दादी किधर है ?

बच्चों ने बताया पापा ने उन्हें 3 दिन पहले नोएडा के वृद्धाश्रम में शिफ्ट कर दिया हैं।

मैंने घर के नौकर से कहा ।

मुझे और भाई साहब को चाय पिलाओ।

कुछ देर में चाय आई । भाई साहब को बहुत कोशिशें की चाय पिलाने की।

लेकिन उन्होंने नहीं पी और कुछ ही देर में वो एक मासूम बच्चे की तरह फूटफूट कर रोने लगे। ''बोले मैंने 3 दिन से कुछ भी नहीं खाया है, मैं अपनी 61 साल की माँ को कुछ लोगों के हवाले करके आया हूँ।''

पिछले साल से मेरे घर में उनके लिए इतनी मुसीबतें हो गई कि पत्नी (भाभीजी) के कसम खा ली कि

''मैं माँ जी का ध्यान नहीं रख सकती'' ना तो ये उनसे बात करती थी।

और ना ही मेरे बच्चे बात करते थे। रोज़ मेरे कोर्ट से आने के बाद माँ खूब रोती थी। नौकर तक भी अपनी मनमानी से व्यवहार करते थे।

माँ ने 10 दिन पहले बोल दिया... बेटा तू मुझे ओल्ड ऐज होम में शिफ्ट कर दें।

मैंने बहुत कोशिशें की पूरी फैमिली को समझाने की, लेकिन किसी ने माँ से सीधे मुँह बात नहीं की ।

जब मैं 2 साल का था तब पापा की मृत्यु हो गई थी। दूसरों के घरों में काम करके मुझे पढ़ाया, मुझे इस काबिल बनाया कि आज मैं जज हूँ।

लोग बताते हैं माँ कभी दूसरों के घरों में काम करते वक्त भी मुझे अकेला नहीं छोड़ती थीं।

उस माँ को मैं ओल्ड ऐज होम में शिफ्ट करके आया हूँ पिछले 3 दिनों से।

मैं अपनी माँ के एक -एक दुःख को याद करके तड़प रहा हूँ, जो उसने केवल मेरे लिए उठाये।

मुझे आज भी याद है जब....

मैं 10वी की परीक्षा में अपीयर होने वाला था। माँ मेरे साथ रात रात भर बैठी रहती।

एक बार माँ को बहुत फीवर हुआ मैं तभी स्कूल से आया था, उसका शरीर गर्म था, तप रहा था, मैंने कहा माँ तुझे फीवर है हँसते हुए बोली अभी खाना बना रही थी इसलिए गर्म हैं।

लोगों से उधार माँग कर मुझे दिल्ली विश्वविद्यालय से एलएलबी तक पढ़ाया, मुझे टयूशन तक नहीं पढ़ाने देती थी, कि कही मेरा टाइम खराब ना हो जाए।

कहते-कहते रोने लगे... और बोले .... ''जब ऐसी माँ के हम नहीं हो सके तो हम अपने बीबी और बच्चों के क्या होंगे।''

हम जिनके शरीर के टुकड़े हैं, आज हम उनको ऐसे लोगों के हवाले कर आये, ''जो उनकी आदत, उनकी बीमारी, उनके बारे में कुछ भी नहीं जानते'', जब मैं ऐसी माँ के लिए कुछ नहीं कर सकता तो ''मैं किसी और के लिए भला क्या कर सकता हूँ।''

आज़ादी अगर इतनी प्यारी है और माँ इतनी बोझ लग रही हैं, तो मैं पूरी आज़ादी देना चाहता हूँ ।

जब मैं बिना आप के पल गया तो ये बच्चे भी पल जाएंगे, इसीलिए मैं तलाक देना चाहता हूँ।

सारी प्रॉपर्टी इन लोगों के हवाले करके उस ओल्ड ऐज होम में रहूँगा, कम से कम मैं माँ के साथ रह तो सकता हूँ।

और अगर इतना सब कुछ कर के ''माँ आश्रम में रहने के लिए मजबूर है'' तो एक दिन मुझे भी आखिर जाना ही पड़ेगा।

माँ के साथ रहते-रहते आदत भी हो जायेगी। माँ की तरह तकलीफ तो नहीं होगी।

जितना बोलते उससे भी ज्यादा रो रहे थे।

बातें करते करते रात के 12.30 हो गए।

मैंने भाभीजी के चेहरे को देखा,

उनके भाव भी प्रायश्चित और ग्लानि से भरे हुए थे, मैंने ड्राईवर से कहा अभी हम लोग नोएडा जाएंगे।

भाभीजी और बच्चे हम सारे लोग नोएडा पहुँचे ।

बहुत ज्यादा रिक्वेस्ट करने पर गेट खुला। भाई साहब से उस गेटकीपर केपैर पकड़ लिए, बोले मेरी माँ है, मैं उसको लेने आया हूँ,

चौकीदार ने कहा क्या करते हो साहब,

भाई साहब ने कहा मैं जज हूँ,

उस चौकीदार ने कहा

'' जहाँ सारे सबूत सामने हैं तब तो आप अपनी माँ के साथ न्याय नहीं कर पाये, औरों के साथ क्या न्याय करते होंगे साहब।''

इतना कहकर हम लोगों को वहीं रोककर वह अंदर चला गया।

अंदर से एक महिला आई जो वार्डन थी।
उसने बड़े कातर शब्दों में कहा
"2 बजे रात को आप लोग ले जाके कहीं मार दें, तो
मैं अपने ईश्वर को क्या जबाब दूंगी..?"
मैंने सिस्टर से कहा आप विश्वास करिये। ये लोग बहुत बड़े पश्चाताप में जी रहे हैं।
अंत में किसी तरह उनके कमरे में ले गई। कमरे में जो दृश्य था, उसको कहने की स्थिति में मैं नहीं हूँ।
केवल एक फोटो जिसमें पूरी फैमिली है और वो भी माँ जी के बगल में, जैसे किसी बच्चे को सुला रखा हैं..
मुझे देखी तो उनको लगा कि बात न खुल जाए।
लेकिन जब मैंने कहा हम लोग आप को लेने आये हैं, तो पूरी फैमिली एक दूसरे को पकड़ कर रोने लगी आसपास के कमरों में और भी बुजुर्ग थे सब लोग जाग कर बाहर तक ही आ गए।
उनकी भी आँखें नम थीं।
कुछ समय के बाद चलने की तैयारी हुई। पूरे आश्रम के लोग बाहर तक आये। किसी तरह हम लोग आश्रम के लोगों को छोड़ पाये।
सब लोग इस आशा से देख रहे थे कि शायद उनको भी कोई लेने आए, रास्ते भर बच्चे और भाभीजी तो शांत रहे....
लेकिन भाई साहब और माताजी एक दूसरे की भावनाओं को अपने पुराने रिश्ते पर बिठा रहे थे। घर आते-आते करीब 3.45 हो गया।
भाभीजी भी अपनी खुशी की चाबी कहाँ है; ये समझ गई थी।
मैं भी चल दिया। लेकिन रास्ते भर वो सारी बातें और दृश्य घूमते रहे।
"माँ केवल माँ हैं"
उसको मरने से पहले ना मरें।

सुमन कल्याणपुर : इक जुर्म करके हमने चाहा था मुस्कुराना

श्रीमती नम्रता जारोंडे
भांडार अनुभाग

परिचय

मुख्य लेख : सुमन कल्याणपुर का परिचय

सुमन कल्याणपुर के पिता शंकर राव हेमाडी मूल रूप से मंगलौर – कर्नाटक के चित्रापुर के एक संभ्रांत सारस्वत ब्राह्मण परिवार से थे। वो सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया में ऊंचे पद पर थे और नौकरी के सिलसिले में उनका काफी लंबा समय ढाका (अब बांग्लादेश) में गुज़रा था। सुमन कल्याणपुर का जन्म 28 जनवरी 1937 को कोलकाता में हुआ था। परिवार में पिता और मां सीता हेमाडी के अलावा सुमन समेत पांच बहनें और एक भाई थे जिनमें सुमन सबसे बड़ी थीं। साल 1942 में सुमन के पिता परिवार को साथ लेकर मुंबई चले आए थे।

शिक्षा – पेंटिंग और संगीत में सुमन की हमेशा से दिलचस्पी थी। मुंबई के मशहूर सेंट कोलंबिया हाई स्कूल से स्कूली पढाई पूरी करने के बाद उन्होंने आगे की पढ़ाई के लिए सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स में दाखिला ले लिया। साथ ही वो अपने पारिवारिक मित्र और पुणे की प्रभात फिल्म के संगीतकार पंडित 'केशवराव भोले' से गायन भी सीखने लगी। सुमन के मुताबिक, उन्होंने गायन को महज शौकिया तौर पर सीखना शुरू किया था लेकिन धीरे धीरे इस तरफ उनक गंभीरता बढ़ने लगी तो वो विधिवत रूप से 'उस्ताद खान अब्दुल रहमान खान' और 'गुरूजी मास्टर नवरंग' से संगीत की शिक्षा लेने लगी।

विवाह – साल 1958 में मुंबई के एक व्यवसायी रामानंद कल्याणपुर से सुमन का विवाह हुआ और वो सुमन हेमाडी से सुमन कल्याणपुर बन गयी। सुमन कल्याणपुर हिन्दी सिनेमा की पार्श्व गायिका हैं। जिनकी आवाज में वही खनक एवं मधुरता है जो लता जी की आवाज में है। बहुत कम लोग पहचान पाते हैं कि जो गीत वो लता जी का गाया समझ कर सुन रहे हैं वो असल में सुमन जी का गाया हुआ होता है। ऐसा ही एक गीत है ''ना तुम हमें जानो ना हम तुम्हें जाने'' फिल्म बात एक रात की का है, सुमन जी के गाए कुछ और गीत हैं – छोडों मोरी बइयां, मेरे महबूब न जा, बहना ने भाई की कलाई पे प्यार बांधा है आदि । फिल्म 'ब्रह्मचारी' के एक गीत ''आजकल तेरे मेरे प्यार के चर्चे हर ज़बान पर'' में तो संदेह हो जाता है कि रफी साहब के साथ लता जी हैं पर ये गीत सुमन जी का गाया हुआ है। सुमन जी ने सन 1954 से फिल्मों में गायन आरम्भ किया था तथा करीब 740 से अधिक गीत गाए है। खैर जो भी हो परंतु आवाज की दृष्टि से लता ही के समान यदि किसी ने आवाज पाई है तो वो है

फिल्मी कॅरियर – सुमन जी के मुताबिक, उनके घर में सभी का झुकाव कला और संगीत की तरफ था, लेकिन सार्वजनिक तौर पर गाने-बजाने पर पाबंदी थी। इसके बावजूद साल 1952 में उनको 'ऑल इंडिया रेडियो' पर गाने का मौका मिला तो वह इंकार नहीं कर पायी। यह उनका पहला सार्वजनिक कार्यकम था जिसके ठीक एक साल बाद साल 1953 में उन्हें मराठी फिल्म शाची चांदनी में गाने का मौका मिला। शेख मुख्तार उन दिनों फिल्म 'मंगू' बना रहे थे जिसके संगीतकार थे मोहम्मद रफी। फिल्म शाची चांदनी के गीतों से प्रभावित होकर शेख मुख्तार ने फिल्म मंगु के लिए तीन गीत रिकॉर्ड कराए। लेकिन फिर पता नहीं किन वजहों से फिल्म 'मंगू' में मोहम्मद शफी की जगह ओ.पी.नैयर आ गए और उस फिल्म में उनकी गायी सिर्फ एक लोरी कोई पुकारे धीरे से तुझे ही बाकी रही। इस तरह साल 1954 में बनी फिल्म 'मंगू' से हिन्दी फिल्मों में उनके गायन की शुरूआत हुई थी। फिल्म 'मंगू' के फौरन बाद सुमन को इस्मत चुगताई द्वारा निर्मित और शाहिद लतीफ द्वारा निर्देशित फिल्म 'दरवाजा' (1954) में नौशाद के संगीत-निर्देशन में 5 गीत गाने का मौका मिला था। लेकिन ये फिल्म पहले प्रदर्शित हुई थी इसलिए आमतौर पर इसे सुमन कल्याणपुर की पहली फिल्म माना जाता है। साल 1954 में ही सुमन को ओ.पी.नैयर

के संगीत में बनी फिल्म 'आरपार' के हिट गीत 'मोहब्बत कर लो जी भर लो अजी किसने रोका है' में रफी और गीता का साथ देने का मौका मिला था। सुमन के मुताबिक इस गीत में उनकी गायी एकाध पंक्ति को छोड़ दिया जाए तो उनकी हैसियत महज कोरस गायिका की सी रह गयी थी। ओ.पी.नैयर के संगीत में उनका गाया ये इकलौता गीत साबित हुआ।

1960 का दशक में फिल्मी सफर – सुमन के लिए बेहद व्यस्तताओं भरा रहा। उन्होंने अपने दौर के तकरीबन सभी दिग्गज संगीतकारों के लिए गीत गाए। उनकी आवाज और गायकी काफी हद तक लता मंगेशकर से मिलती थी और इसीलिए जब भी लता की अपने साथी संगीतकारों या गायकों से अनबन हुई तो उसका सीधा लाभ सुमन कल्याणपुर को मिला। उस दौर में खासतौर से रफी के साथ गाए उनके गीत बेहद कामयाब हुए। 'दिल एक मंदिर है', 'तुझे प्यार करते हैं करते रहेंगे', 'अगर तेरी जलवानुमाई न होती', 'मुझे ये फूल न दे', 'बाद मुद्दत के ये घड़ी आयी', 'ऐ जाने तमन्ना जाने बहारां', 'तुमने पुकारा और हम चले आए', 'अजहूं न आए बालमा', 'ठहरिए होश में आ लूं तो चले जाईएगा', 'पर्वतों के पेड़ों पर शाम का बसेरा है', 'ना ना करते प्यार तुम्हीं से कर बैठे', 'रहें ना रहें हम महका करेंगे', 'इतना है तुमसे प्यार मुझे मेरे राजदार' और 'दिले बेताब को सीने से लगाना होगा' जैसे गीत उसी दौर में बने थे।

1970 के दशक में फिल्मी सफर – जैसे-जैसे नए संगीतकार और गायक-गायिकाएं आते गए, सुमन कल्याणपुर की व्यस्तताएं कम होती चली गयीं। साल 1981 में बनी फिल्म 'नसीब' का 'रंग जमा के जाएंगे' उनका आखिरी रिलीज गीत साबित हुआ। सुमन के मुताबिक, फिल्म 'नसीब' के बाद उनको गायन के मौके अगर मिले भी तो वो गीत या तो रिलीज ही नहीं हो पाए और अगर हुए भी तो उनमें से उनकी आवाज नदारद थी। गोविंदा की फिल्म 'लव 86' में उन्होंने एक सोलो और मोहम्मद अजीज के साथ एक युगलगीत गाया था। लेकिन जब वो फिल्म और उसके रेकॉर्ड रिलीज हुए तो उनकी जगह कविता कृष्णमूर्ति ले चुकी थीं। कुछ ऐसा ही केतन देसाई की फिल्म 'अल्लाक्खा' में भी हुआ था जिसके संगीतकार अनु मलिक थे।

नांदेड़ में आयोजित आषाढी महोत्सव के दौरान सुमन कल्याणपुर ने एक साक्षात्कार के दौरान यह खुलासा किया है। अपने जीवन की महत्वपूर्ण पलों के बारे में बताते हुए कल्याणपर ने बताया कि उन्हें बचपन से गायन के प्रति लगाव था। कलकत्ता से मुंबई आने के बाद उनके गायन के करियर की अच्छी शुरूआत हुई। जब सन 1946 में पंडित नेहरू के सामने 'ए मेरे वतन के लोगो' गीत गाने का मौका मिला तो खुशी का ठिकाना नहीं रहा। लेकिन जब कार्यक्रम के दौरान गाना गाने के लिए मंच के पास पहुंची तो मुझे रोका गया और कहा गया कि वे इस गाने की बजाय दूसरा गाना गाएं। कल्याणपुर ने बताया कि ए मेरे वतन लोगों मुझसे छीन लिया गया था यह मेरे लिए बड़ा सदमा था। वह बात आज भी चूभती है। सुमन करीब 28 साल के अपने करियर में सुमन कल्याणपुर ने न सिर्फ पार्श्वगायन के क्षेत्र में अपना एक सम्मानजनक स्थान बनाया बल्कि रसरंग (नासिक) का 'फाल्के पुरस्कार' (1961), सुर सिंगार संसद का 'मियां तानसेन पुरस्कार' (1965 और 1970), 'महाराष्ट्र राय फिल्म पुरस्कार' (1965 और 1966), 'गुजरात राय फिल्म पुरस्कार' (1970 से 1973 तक लगातार) जैसे करीब एक दर्जन पुरस्कार भी हासिल किए। करीब 5 साल पहले सुमन के पति का निधन हुआ था और अब वो खार (पश्चिम) में ही रोड नंबर 12 पर अपनी शादीशुदा बेटी चारू अग्नि के साथ रहती हैं। इस दौरान वो साल 2010 में एक-दो सम्मान समारोहों में ज़रूर नजर आयीं जब महाराष्ट्र सरकार ने उन्हें 'लता मंगेशकर पुरस्कार - 2009' से सम्मानित किया। लेकिन बाहरी लोगों से उनका सम्पर्क अब लगभग खत्म हो चुका है। यहाँ तक कि अब उन्हें किसी से फोन पर बात करना भी मंजूर नहीं है।

सुमन के लोकप्रिय गीत

- इतने बड़े जहां में अपना भी कोई होता (डार्क स्ट्रीट) • इक जुर्म करके हमने चाहा था मुस्कुराना (शमा)
- जूही की कली मेरी लाड़ली (दिल एक मंदिर) •अपने पिया की मैं तो बनी रे जोगनियां (कण कण में भगवान)
- तूझे प्यार करते हैं करते रहेंगे (अप्रैल फूल) •हाले - दिल उनको सुनाना था (फरियाद)
- परबतों के पेड़ों पर (शगुन) •ना-ना करते प्यार तुम्ही से कर बैठे (जब - जब फूल खिले)
- ठहरिये होश में आ लूं, तो चले जाइएगा (मोहब्बत इसको कहते हैं) •ये मौसम रंगीन समां (मॉडर्न गर्ल)
- बहना ने भाई की कलाई से प्यार बांधा है (रेशम की डोरी)

मेग्नीफिसेंट मैरी

डॉ. शितल राऊत
संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग

''मैरी कॉम'' भारत की सुप्रसिद्ध बॉक्सर (मुक्केबाज) है। बॉक्सिंग में उन्होंने भारत को विश्व में महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है। जितना कठिण संघर्ष होगा, उतनी ही शानदार जीत होगी। यह लाइन गरीब किसान के घर पैदा हुई मैरी कॉम पर बिलकुल सटिक बैठती है। मैरी कॉम वर्ल्ड चैम्पियनशिप में 6 बार विश्व मुक्केबाजी प्रतियोगिता की विजेता रह चुकी है। किसान के घर पैदा हुई मैरी कॉम के लिए यह सफर बिलकुल भी आसान नहीं था। उन्होंने अपनी मेहनत ओर संघर्ष के दम पर दिखा दिया की परिस्थिती कितनी भी विपरित क्यूं न रहें अगर हम संकल्प ले के आगे बढ़ें तो इस दुनिया में कुछ भी नामुमकिन नहीं है

मैरी कॉम का पूरा नाम मेंगते चंग्नेइजैंग मैरी कॉम है। उनका जन्म 1 मार्च 1983 को मणिपुर के चुराचांदपुर गांव में हुआ था। मैरी कॉम को खेलकुद का शौक बचपन से ही था। लेकिन उनके मन में बॉक्सिंग का आकर्षण 1999 में उस समय उत्पन्न हुआ जब उन्होंने खुमात लम्पक स्पोर्ट्स कॉम्लेक्स में कुछ लड़कियों को बॉक्सिंग रिंग में लड़कों के साथ बॉक्सिंग के दांव-पेंच आजमाते देखा। साथ ही में मणिपुरी बॉक्सर डिंग्को सिंग की सफलता ने भी उन्हें बॉक्सिंग की ओर आकर्षित किया। अपनी खेल की शुरूवात में एक लड़की होने के कारण अपने परिवार को सपोर्ट बॉक्सिंग खेलने के लिए कभी नहीं मिला। पर एक बार बॉक्सिंग रिंग में उतरने का फैंसला करने के बाद मैरी कॉम ने कभी भी पीछे मुडकर नहीं देखा। एक महिला होने के नाते उनका सफर और भी मुश्किल था पर उनका हौसला भी फौलाद का था। राष्ट्रि बॉक्सिंग चैम्पियनशिप के अलावा मैरी कॉम अकेली ऐसी महिला मुक्कबाज है जिन्होंने 6 विश्व प्रतियोगिताओं में पदक जिता है।

उपलब्धियाँ व पुरस्कार – मैरी कॉम ने सन् 2001 में प्रथम बार नेशनल वुमन्स बॉक्सिंग चैम्पियनशिप जीती। अब वह 10 राष्ट्रीय खिताब जीत चुकी है। बॉक्सिंग में देश का नाम रोशन करने के लिए भारत सरकार ने वर्ष 2003 में उन्हें 'अर्जन पुरस्कार' से सन्मानित किया एवं वर्ष 2006 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 29 जुलाई ,2009 को वे भारत के सर्वोच्च खेल सम्मान राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार के लिए चुनी गई। मध्यप्रदेश के ग्वालीयर में स्त्रीत्व को नई परिभाषा देकर अपने अलौकिक शौर्य से विश्व प्रसिद्ध मुक्केबाज मैरी कॉम को 17 जून 2018 को विरांगना सम्मान से विभूषित किया गया। नई दिल्ली में आयोजित 10वी एआईबीए महिला विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप 24 नवबंर 2018 को उन्होंने 6 विश्व चैम्पियनशिप जीतनेवाली पहिली महिला बनकर इतिहास बनाया।

फिल्म ''मैरी कॉम'' – बॉक्सिंग की दुनिया में अपनी उपलब्धियों ओर सफलताओं के कारण मैरी कॉम आज हर भारतीय महिला के लिए प्रेरणास्त्रोत है। उनके जीवन से प्रेरित फिल्म ''मैरी कॉम'' का प्रदर्शन 2014 में हुआ। जीसे लोगों ने काफी पसंद किया।

आत्मचरित्र 'अनब्रेकेबल' – 6 विश्व प्रतियोगिताओं ओर एक ओलंपिक पदक विजेता मैरी कॉम की अथक संषर्घ ओर जोश को दर्शाती जीवन गाथा। अनब्रेकेबल नाम का आत्मचरित्र 2014 में प्रकाशित हुआ। जो इस पुरूष -प्रधान दुनिया में असंभव रूकावटों का सामना करते और जितने की गाथा बताती है।

क्रूगर नेशनल पार्क, दक्षिण अफ्रीका - प्रसिद्ध पांच का घर

अरूण कुमार

आप लोगों में से जो दक्षिण अफ्रीका का दौरा कर रहे हैं, लेकिन विशेष रूप से प्रसिद्ध Big इग्न – हाथी, शेर, राइनो, तेंदुआ और भैंस के लिए वाइल्ड लाइफ सफारी का आनंद लेने के लिए किन्या के साथ अपने दौरे को जोड़ना नहीं चाहते हैं : तो क्रूगर नेशनल पार्क निश्चित रूप से बेहतर विकल्प है। अपने विशाल परिदृश्य और शानदार अफ्रीकी वन्य जीवन के साथ, यह पार्क दक्षिण अफ्रीका का सबसे रोमांचक अफ्रीकी सफारी गंतव्य है।

विश्व प्रसिद्ध क्रूगर नेशनल पार्क एक वन्यजीव अनुभव प्रदान करता है, जो अफ्रीका में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। दक्षिण अफ्रीका के वन्यजीवों की रक्षा के लिए 1899 में स्थापित, 20 लाख हेक्टेयर से अधिक का यह राष्ट्रीय उद्यान, 477 पक्षियों, 147 स्तनधारियों, 114 सरीसृपों, 34 उभयचरों और 49 मछली प्रजातियों की एक प्रभावशाली संख्या का घर है, जो उन्नत पर्यावरण प्रबंधन तकनीकों और नीतियां से अच्छी तरह से संरक्षित हैं। यह पार्क मोजाम्बिक में निकटवर्ती लिम्पोपो ट्रांसफ्रंटियर पार्क के साथ संयुक्त रूप से लगभग 3 मिलियन हेक्टेयर को कवर करता है।

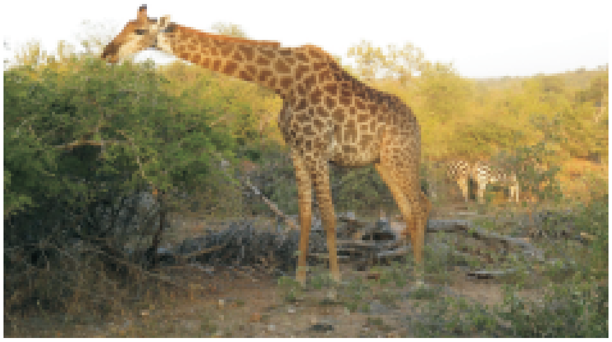

क्रूगर पार्क 65 किलोमीटर की औसत चौड़ाई के साथ लगभग 360 किलोमीटर लंबा है। इसमें 8 प्रवेश द्वार हैं और जोहान्सबर्ग शहर के सबसे करीब 450 किमी दूर है। पार्क के अंदर लगभग 2000 किलोमीटर की अच्छी पर्यटक सड़कें हैं और कोई भी क्रूगर नेशनल पार्क मैप की मदद से पार्क को घूम सकता है। सड़कों पर सभी चौराहों पर अगले कैंप, पिकनिक स्थलों या गेटों के लिए दूरी के साथ साइनपोस्ट भी उपलब्ध हैं।

हालांकि, हमारे जैसे पर्यटकों के लिए एक और बेहतर विकल्प निर्देशित सफारी यात्राएं हैं, जो समय तो बचाता ही है और साथ ही साथ वन्यजीवों से मुठभेड़ करने के लिए अधिक संभावनाएं प्रदान करता है। इस पार्क में बहुत सारे सफारियां, विभिन्न विकल्पों के साथ–साथ रिसॉर्ट्स, लॉज और टेंट में रहने के स्थान उपलब्ध हैं। पार्क में 21 विश्राम शिविर, 2 निजी लॉज और 15 निजी सफारी लॉज हैं। कोई भी आसानी से इस पार्क में 2 दिन की यात्रा का प्रोग्राम बना सकता है। या तो सीधे बुकिंग के लिए नेट पर स्क्रॉल करके या पैकेज की व्यवस्था के लिए टूर ऑपरेटर से संपर्क कर के। हमने 9 दिनों के हमारे स्यम–ड्राइव दक्षिण अफ्रीकी दौरे के दौरान 4 सफारी के साथ 2 रात / 2 दिनों का पैकेज लेकर, इस पार्क की अपनी यात्रा की योजना बनाई।

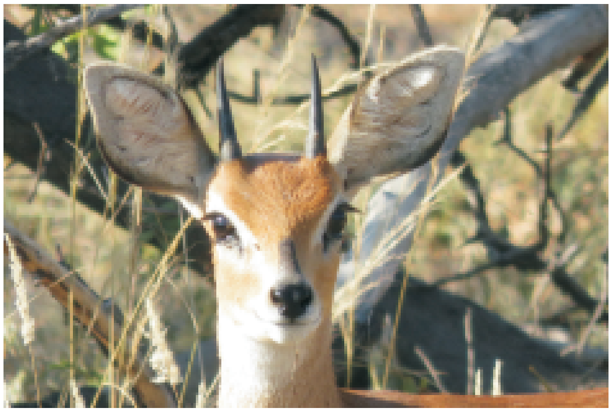

क्रुगर नेशनल पार्क में हमारी बुकिंग नलदेई बुश लॉज में हुई थी, जो एक विश्व स्तरीय रिसॉर्ट है और एक सूखी नदी के किनारे एक तालाब के दृश्य के साथ एक विशेष निजी आरक्षित रिज़र्व है। यह रिज़र्व प्रसिद्ध पांच की उच्च प्राकृतिक घनत्व रखता है और खुले सफारी वाहनों से निर्देशित गेम-देखने के लिए एक आदर्श आधार प्रदान करता है। नलदेई के संस्थापक केजेल बिस्मेयर अभी भी दैनिक कार्यों की देखरेख करते हैं, और आतिथ्य और व्यंजनों में उत्कृष्टता के लिए उनकी टीम की प्रतिबद्धता ने Booking.com और trip advisor से उच्च प्रशंसा हासिल की है। रिजर्व की प्रबंधक, एक बहुत विनम्र और अच्छी देखभाल करने वाली ब्रिटिश महिला थी। उन्होंने हमारे परिवार का अच्छा आतिथ्य और पार्क और उसके वन्य जीवन के बारे में बहुत अच्छी जानकारी दी। हम भाग्यशाली भी थे क्योंकि हमें लीडवुड सूट में अपग्रेड किया गया था, जिसमें दो शानदार बेडरूम के साथ एक निजी लाउंज स्पेस और एक निजी प्लंज-पूल है। रिज़ॉर्ट को जंगली जानवरों, खासकर बबून्स से बचाने के लिए विद्युत तारों से अच्छी तरह से घेरा गया था।

रिसॉर्ट में पहुँचने के बाद हमने शाम को अपनी पहली सफारी शुरू की। लेकिन रात में कुछ जंगली हाथियों के अलावा और अन्य जानवरों का सामना नहीं हुआ। पार्क में करीब 12000 हाथी हैं। हालांकि, अगले दिन, हमारे गाइड श्री डेविड ने हमें संशोधित लैंड क्रूजर में एक अभियान के लिए सुबह-सुबह निकाला। हमारे रिसॉर्ट के बाहर एक मध्यम आकार का मृग, इम्पाला का झुंड घूम रहा था, जोकि हमारे सफारी दौरे के दौरान कई स्थानों पर दिखे। भारत में हिरणों की तरह ही, इम्पाला जंगली शेरों, तेंदुओं और चीतों का बहुत आसान शिकार है। हमारी सुबह की सफारी के पाँच घंटों में, हम भाग्यशाली थे कि कई हाथी, काले राइनो, ज़ेबरा, जिराफ़, भैंस, हिप्पो, जंगली कुत्ते, बुशबक, आम लैंथ, चित्तीदार लकड़बग्घे और कई पक्षी के साथ सामना हुआ। लेकिन निश्चित रूप से हम शेरों का पता लगाने से चूक गए।

रिसॉर्ट में पूल में कुछ देर आराम करने के बाद और दोपहर के भोजन के उपरांत, हम अपनी शाम की सफारी पर 3 बजे रवाना हुए। इस दौरान भी अधिकांश जानवर दिखे। जंगली होने के बावजूद ये जानवर तब तक नुकसान नहीं पहुँचाते जब तक कि उन्हें उकसाया न जाए।

हमारे गाइड ने इन जानवरों के बारे में बहुत सारी जानकारी दी और कई बार हम बस 15-20 मिनट तक इन जानवरों के पास इंतजार करते थे और उन्हें खुशी से अपने भोजन का आनंद लेते हुए देखते थे। लेकिन सूर्यास्त तक शेर का न दिखना अभी भी हमें परेशान कर रहा था और हम निराश हो रहे थे। तीसरी सफारी के पूरा होने के बाद, अगली सुबह केवल एक ही सफारी बचा था। इसलिए हमने श्री डेविड से अपने अनुभव का उपयोग करने का अनुरोध किया, ताकि वो हमे कुछ शेर दिखा सकें।

शाम को, ठीक सूर्यास्त से पहले, हम एक शिविर के पास रुके और श्री डेविड ने हमें नाश्ते और जूस की पेशकश की। जानवरों के बारे में बातचीत

और चर्चा करते हुए, उन्होंने उस खबर को तोड़ा, जिसका हमें बेसब्री से इंतजार था। उन्होंने बताया कि उन्होंने गाड़ी चलाते समय शेरों के एक समूह के ताजा निशान देखे हैं और उन्हीं निशानों का पीछा करेंगे। हम इतने उत्साहित थे कि हमने जल्दी से अपने स्नैक्स खत्म किए और अपनी लैंड क्रूजर पर चढ़ गए। सूरज लगभग अस्त हो रहा था और हम चाहते थे कि जल्दी से शेरों की एक झलक दिख जाए। लगभग 15 मिनट तक चलने के बाद, हम अपनी जीप के सामने 8 शेरों के एक समूह को देखकर रोमांचित हो गए। हम बहुत उत्साहित थे, लेकिन उसने हमें चुपचाप वाहन में बैठकर इस मनोरम दृश्य का आनंद लेने और तस्वीरें खीचने के लिए कहा। आगे आगे एक पंक्ति में चलने वाले शेर और पीछे चलने वाला हमारा वाहन, हमारे जीवन का एक अलग ही अनुभव था। लगभग 10 मिनट तक धीरे-धीरे चलने के बाद, वो शेर एक झाड़ी के पास रुके। श्री डेविड ने हमें बताया कि इस झुंड में 2 शेरनी और 6 बच्चे हैं । इन शेरों को भूख लग रही थी और उन्होंने अपने शिकार को झाड़ी में सूँघ लिया था। कुछ समय बाद, ये बच्चे अपने पंजे के साथ झाड़ी के पास खुदाई करने लगे। श्री डेविड ने लगभग 10 मीटर दूर हमारे वाहन को पार्क किया और हेडलाईट जला दी। उसने हमें चुपचाप बैठने और शिकार का आनंद लेने के लिए कहा। क्योंकि यह नजारा कुछ-कुछ डिस्कवरी चैनल के अनुभव जैसा था और हम भाग्यशाली थे कि हमें इस तरह का मौका मिला। यहां तक कि उसे खुद 4 साल के कार्यकाल में पहली बार इस तरह का मौका मिला था। इस बीच दोनों शेरनियाँ हमारे वाहन के पास बैठ गई, जबकि बच्चों ने झाड़ी के पास मिट्टी खोदना शुरू कर दिया। थोड़ी देर में पता चला कि एक वराह ने शिकारियों से खुद को बचाने के लिए लगभग एक मीटर गहरी जमीन में अपने आप को ढंक लिया था। हम अपने पास बैठे शेरनी से बहुत डर रहे थे, लेकिन हम शांत थे और बस पूरी घटना को रिकॉर्ड कर रहे थे। लगभग 25 मिनट की खुदाई के बाद, उस वराह ने गड्ढे से बाहर चलांग लगाया जिसे देख कर सभी बच्चे डर गये, लेकिन शेरनीयों में से एक ने जल्दी से छलांग लगा कैर उस वराह को गले से पकड़ लिया। इसके पश्चात सभी सात अन्य शेरों ने अपने शिकार को खाना शुरू कर दिया। वराह जोर जोर से चिल्ला रहा था, परंतु 5 मिनट के भीतर ही उसे पूरी तरह से खा लिया गया।

एक घंटे से अधिक समय से इस पूरे प्रकरण को देखकर हम शांत और स्तब्ध थे, क्योंकि इसे हमने इतने करीब से अनुभव किया था। आखिरी दिन सुबह की सफारी में, श्री डेविड ने हमें पार्क में एक सुनसान इलाके को दिखाया, जहाँ हम बहुत सारे गिद्धों, चित्तीदार लकड़बग्घों और अन्य शिकारियों को देख सकते थे। क्रूगर नेशनल पार्क में हमारी 2 दिन की यात्रा बहुत सारी यादों को वापस घर ले जाने के लिए शानदार थी।

प्रतिक्रियाएँ

राजभाषा प्रेरणा पर मेरे विचार

राजभाषा प्रेरणा का 14 वाँ वार्षिकांक प्राप्त हुआ, इस अंक के आरंभ में ही महाजेता/महाकवि श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी की प्रेरक कविता पढकर मन प्रसन्न हो उठा । संस्थान की गतिविधियों/उपलब्धियों को बड़े ही सुंदर ढंग से इस अंक में संजोया गया है । साहित्या दर्पण में अन्यि सुंदर रचनाओं के साथ सुप्रसिद्ध कवि श्री गोपाल दास नीरज की विशिष्टि रचना बहुत ही हृदयस्पयर्शी है अन्य लेख एवं राजभाषा कार्यान्वायन संबधी जानकारियाँ बडे ही सुरूचिपूर्ण ढंग से दी गई हैं विशेष रूप से 24 घंटे बिना मोबाइल के, सकारात्मक विचार :प्रसन्न जीवन की कुंजी, कभी तो सोच के देखो, छात्रों के लिए प्रेरणादायक कहानी एवं अन्य लेख तथा कविताएँ निश्चित ही सभी के मन को भाएँगी । पर्यावरण की कीमतपर विकास यह लेख हमें आने वाली समस्यातओं के विषय में सचेत करता है । सम्पूर्णि पत्रिका ज्ञान के सागर को अपने अन्दर समाए हुए है । निश्चिय ही इसके पीछे सम्पादक मंडल का कठिन परिश्रम है सम्पादक मंडल के परिश्रम को नमन करते हुए हम सम्पा दक मंडल, सभी रचनाकारों, वरिष्ठ अधिकारियों और उदीयमान पीढ़ी के कर्णधार विद्यार्थियों को अनेक साधुवाद देते हैं और आशा करते हैं कि आगामी अंक भी इसी प्रकार सुरूचिपूर्ण ज्ञानवर्धक और राजभाषा का संपोषक होगा ।

असीम शुभकामनाओं सहित

डॉ. श्रीमती संगीता गिरि

प्रशासन प्रभारी

राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण प्रतिष्ठान

पश्चिम क्षेत्र, नागपुर

राजभाषा प्रेरणा -2019

विश्वेश्वरय्या राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नागपुर की पत्रिका 'राजभाषा प्रेरणा' का वर्ष 2019 का वार्षिकांक प्राप्त हुआ। अनेकानेक धन्यवाद ! पत्रिका का मुखपृष्ठ अतीव सुंदर और विचारोत्तेजक बन पडा है। गृहमंत्री से लेकर समस्त पदाधिकारी गणों के संदेश बहुतही प्रेरणादायी है और हिंदी की सार्थकता को बयाँ कर रहे है। संस्थान में चल रही हिंदी गतिविधियों का विषद वर्णन हिंदी के प्रति संस्थान की निष्ठा का परिचायक है। उसी तरह संस्थान की अपनी उपलब्धियाँ तथा संबंधित लेख संस्थान की गरिमा में चार चाँद लगा रहे है।

महाकवी स्वर्गीय श्री. अटलबिहारी बाजपेयीजी को समर्पित है यह अंक जो कि एक बडा ही अच्छा प्रयास रहा। साथ ही 'युवा पीढी में व्यसनाधीनता ' तथा 'पर्यावरण' जैसी जानकारी प्रदान करते है तो दूसरी ओर 'जननी जन्मभूमि' तथा 'अर्थव्यवस्था में इंजिनिअरों का योगदान' जैसे विषय कर्मठता का आवाहन बने है। तात्पर्य यही है कि उत्तमलेखों, लघुकथाओं, रोचक कविताओं, ज्ञानप्रद जानकारियों से परिपूर्ण राजभाषा प्रेरणा का यह अंक बहुतही सफल बन पडा है।

संस्थान के समस्त पदाधिकारियों, हिंदी पत्रिका के समस्त संरक्षक गणों, संपादक मंडल, सहायक संपादक तथा प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से पत्रिका से जुडे समस्त सुधीजनों का बहुत बहुत अभिनंदन ! जिन्होंने इतनी बहुआयामी पत्रिका के प्रकाशन यज्ञ में अपनी रचनाओं की समिध दी उन समस्त रचनाकारों को भी हार्दिक बधाइयाँ। आगामी अंक के प्रकाशन की अग्रिम शुभेच्छा के साथ ....

डॉ. हेमलता मिश्र 'मानवी'

वरिष्ठ साहित्यकार

भारतीय वायुसेना राजभाषा अधिकारी (सेवानिवृत्त)

संपादक मंडल : निदेशक महोदय के साथ

बायें से दायें - उपर : निखिल नौकरकर, कृष्णा प्रसाद बनोथु, अमित मेश्राम, भूषण राजपाठक, निखिल दीपगुप्ता
नीचे : श्रीमती विजया देशमुख, डॉ. अजय लिखिते, डॉ. दिलीप पेशवे, डॉ. पी. एम. पडोले, डॉ. भारती पोलके, डॉ. ज्योति सिंह, डॉ. आशिष चौरसिया, डॉ. श्राबोनी अधिकारी, श्रीमती रितु ठाकरे

संपादक मंडल : कुलसचिव महोदय के साथ

बायें से दायें - उपर : निखिल नौकरकर, कृष्णा प्रसाद बनोथु, डॉ. भूषण राजपाठक, अमित मेश्राम, के.जी. बारापात्रे, डॉ. अजय लिखिते, श्रीमती रितु ठाकरे
नीचे : श्रीमती विजया देशमुख, डॉ. निखिल दीपगुप्ता, डॉ. एस. आर. साठे, डॉ. दिलीप पेशवे, डॉ. आशिष चौरसिया, डॉ. भारती पोलके, डॉ. ज्योति सिंह, डॉ. श्राबोनी अधिकारी

विश्वेश्वरय्या राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नागपुर

दक्षिण अंबाझरी मार्ग, नागपुर-440010

पीएबीएक्स दूरभाष : 91-712-2222828, 2801361, 2801370

फॅक्स : (0712) 2223969

वेबसाईट : www.vnit.ac.in